

सच की दर्शक

कला, साहित्य, संस्कृति व सामाजिक सरोकार की मासिक पत्रिका

पृथ्वी की सहनशीलता पर

कृठाराधात?



आतंक का अंत



काले धान का सफर



राजस्थान में चुनावी सरगर्मी



फिनलैंड की नाटो में इंट्री

नगर पालिका परिषद पं. दीनदयाल उपाध्याय नगर

नई दृष्टि **Vote**
नई सोच...



कैलाशपुरी
वार्ड नं.
18
सभासद

पद के लिए

9792790001

विनय नायर

चुनाव - चिन्ह



छाता

पर मुहर लगाकर
भारी मतों से विजयी बनायें।



चुनाव चिन्ह



श्रवण यादव
समाजसेवी

नगर पालिका परिषद
पं० दीनदयाल उपाध्याय नगर

वार्ड नं० 21

सुभाष नगर बेचुपर से

के कर्मठ, शिक्षित, महिला

सभासद प्रत्याशी



आरती यादव
आपकी बेटी, बहू, बहन
पत्नी श्रवण यादव
सभासद सुभाष नगर

सच की दस्तक

कला, साहित्य, संस्कृति व सामाजिक सरोकार की मासिक पत्रिका

आर.एन.आई. UPHIN/2017/75716

वर्ष : 07, अंक : 1, अप्रैल, 2023

संपादक

ब्रजेश कुमार

समाचार संपादक

आकांक्षा सक्सेना

खेल सम्पादक

मनोज उपाध्याय

उप सम्पादक

शिव मोहन सिंह

कानूनी सलाहकार

दिलीप कुमार सिंह (अधिवक्ता)

प्रूफ रीडर

बिपिन बिहारी उपाध्याय

प्रसार प्रभारी

अशोक सैनी

प्रसार सह प्रभारी

अजय राय

अशोक शर्मा

जितेन्द्र सिंह

ग्राफिक्स

संजय सिंह

सम्पादकीय कार्यालय

सी-6/2-एम, चेतगंज थाना के पास,
चेतगंज वाराणसी

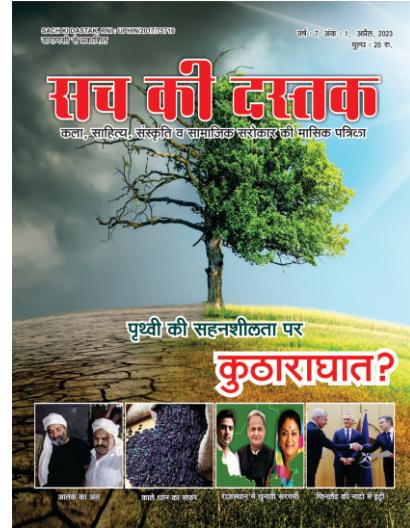
पत्राचार (स्थानीय कार्यालय)

म.न. 1215ए, सुभाषनगर, मुगलसराय (चन्दौली)

मो.न. : 8299678756, 9598056904, 9450096479

पत्रिका में प्रकाशित समाचार / लेख से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र चन्दौली होगा। सभी पद अवैतनिक हैं।

स्वामी प्रकाशक मुद्रक ब्रजेश कुमार द्वारा यादव प्रिंटर्स, ए 14/36 भारद्वाजी ठोला राजघाट वाराणसी से मुद्रित।



स्टेट ब्यूरो प्रभारी

- 1- मृदुला श्रीमाली - उत्तर प्रदेश
- 2- रोहित कोचगवे - उत्तराखण्ड
- 3- दीपाली सोढ़ी - असम
- 4- दीपक कुमार साहा - दिल्ली
- 5- श्री रामकृष्ण सहस्रबुद्धे - महाराष्ट्र
- 6- डा. जय राम झा - बिहार

ब्यूरो संवाददाता / रिपोर्टर

- 1- डॉ निशा अग्रवाल विशेष संवाददाता जयपुर (राजस्थान)
- 2- सुनील मित्तल जिला प्रभारी धौलपुर (राजस्थान)
- 3- विकास गौण जिला प्रभारी वाराणसी (यू.पी.)
- 4- अक्षांशु सक्सेना जिला प्रभारी औरैया (यू.पी.)
- 5- संजय कुमार दुबे जिला प्रभारी जौनपुर (यू.पी.)
- 6- साहिल भारती प्रभारी लखनऊ (यू.पी.)
- 7- राकेश शर्मा जिला प्रभारी चन्दौली (यू.पी.)
- 8- पवन कुमार शर्मा, जिला प्रभारी देहरादून (उत्तराखण्ड)

सदस्यता शुल्क

1 अंक	-	रु. 20/-
वार्षिक	-	रु. 300/- (डाकखर्च सहित)

Sach Ki Dastak

A/c. No. : 13751652000024

IFSC Code : PUNB0137510

Punjab National Bank

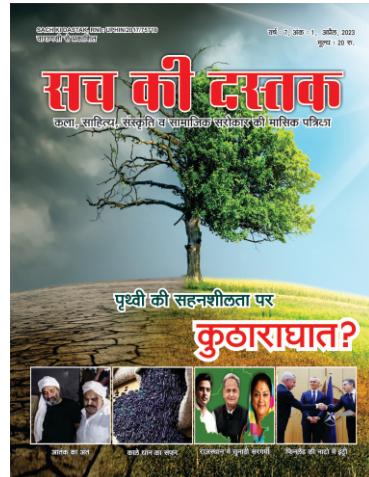
सच की दरताक

कला, साहित्य, संस्कृति व सामाजिक सरोकार की मासिक पत्रिका

इस बार

क्र.स. लेख

1.	संपादकीय - ब्रजेश कुमार, प्रधान संपादक	03
2.	धरोहर - लीलाधर जगौड़ी	05
3.	काले धान का सफर - ब्रजेश कुमार प्रधान संपादक	06
4.	पृथ्वी की सहनशीलता पर कुठाराघात? - आकांक्षा सक्सेना, न्यूज एडीटर	09
5.	कलम इनकी जय बोल - कृष्णकांत श्रीवास्तव	12
6.	राजस्थान में चुनावी सरगर्मी - सच की दस्तक न्यूज नेटवर्क	15
7.	डॉ. अम्बेडकर दलितोत्थान के महानायक - डॉ. सुजीत वर्मा	18
8.	क्या राजनीति में नेताओं और नौकरशाहों का भ्रष्ट होना स्वाभाविक? - पंकज जगन्नाथ जयस्वाल	21
9.	बैबसी - कविता विष्ट 'नेह'	25
10.	लोकपर्व सतुआन - लल्लन सिंह 'ललित'	27
11.	समीक्षायन - वीरेंद्र परमार	29
12.	सलमान खान का पहला प्यार - ब्रजेश कुमार श्रीवास्तव 'मुज्जा'	32
13.	राजनैतिक माहौल - डॉ. जयराम झा	35
14.	विश्वकप :खेल में भी घुटनों पर आया पाक- सच की दस्तक न्यूज नेटवर्क	37
15.	मूंग दाल हलवा रेसपी - सच की दस्तक न्यूज नेटवर्क	38
16.	बच्चों को सुविधा के साथ जिम्मेदारी भी दीजिए -भावना ठाकर 'भावु'	39
17.	सबसे ज्यादा जनसंख्या वाला देश बना भारत - सच की दस्तक न्यूज नेटवर्क	41
18.	फिनलैंड की नाटो में इंटी - सच की दस्तक न्यूज नेटवर्क	43
19.	आतंक का अंत - सच की दस्तक न्यूज नेटवर्क	45
20.	डॉ. अम्बेडकर और पाकिस्तान - डॉ. सुशील उपाध्याय	48
21.	पेट संबंधित रोग में हेपेटाइटिस हो सकता है जानलेवा - सच की दस्तक न्यूज नेटवर्क	50
22.	सनगलासेस खरीदने से पहले सावधान! - सच की दस्तक न्यूज नेटवर्क	52
23.	अगले जनम मोहे बड़े बाबू ही करियो - श्याम सुन्दर श्रीवास्तव 'कोमल	53
24.	गर्भियों में 'खीरा' है 'हीरा' - सच की दस्तक न्यूज नेटवर्क	55
25.	नगर विकास के कार्य और जनभागीदारी - सच की दस्तक न्यूज नेटवर्क	56



संपादकीय



हमारे सम्मानित पाठकों ! आप सभी को वैशाखी पर्व की ढेर सारी शुभकामनाएँ । बहुत हर्ष की बात है कि आप सभी के सहयोग से आप की राष्ट्रीय मासिक पत्रिका ने अपने प्रकाशन के 6 वर्ष पूरे कर सातवें वर्ष में प्रवेश कर लिया है। सफर के इस दौर में आप का सहयोग और स्नेह मिलता रहा है । आगे भी आप सभी का सहयोग इसी तरह बना रहेगा, इसके लिए आशान्वित हूँ।

आइए ! अब हम लोग देश की मौजूदा परिस्थितियों पर बात करें। सबसे पहले मेरे मन में मौसम के बदलते स्वरूप पर बहुत से सवाल जन्म ले रहे हैं । उनको मैं आप के बीच रख रहा हूँ । हमारे भारत वर्ष में ऐसे तो तीन मौसम होते हैं, जाड़ा, गर्मी, बरसात। इनके लिए प्रकृति से समय भी तय है लेकिन वर्तमान दौर में बदलाव समयानुसार नहीं हो रहे हैं। बैमौसम सर्दी, गर्मी, बरसात से मानव जीवन अस्त व्यस्त हो जाता है, काफी जान माल एवं पर्यावरण की हानि होती है। इसका मुख्य कारण ग्लोबल वार्मिंग है, लेकिन यदि गहनता से विचार करें तो हम पाते हैं कि हम लोगों ने जो विकास की अंधी दौड़ शुरू की है यह उसका भी नतीजा है। अपने आप को सर्वश्रेष्ठ बनाने के खातिर पृथ्वी माँ की सहनशीलता पर कुठाराघात करना शुरू कर दिया है। क्या होगा मानव का जब पृथ्वी की सहनशीलता दम तोड़ देगी? यूक्रेन रूस के मध्य पिछले एक वर्ष से युद्ध चल रहा है और फिलहाल कोई अंत होता भी नहीं दिख रहा है। पूरा यूक्रेन तबाह हो गया है। अत्याधुनिक हथियारों, मिसाइलों से प्रहार रूस ने किए हैं। जबाब में नाटो मेड हथियारों का प्रयोग भी यूक्रेन ने रूस पर किया है। इससे काफी जान-माल की क्षति हुई है। साथ में पूरे वातावरण पर भी विपरीत प्रभाव

पड़ा है। इसके अलावा नार्थ कोरिया लगातार परमाणु हथियारों का परीक्षण कर रहा है। ईरान, इजराइल, फिलिस्तीन सीरिया सब जगह हथियारों के टेस्ट की होड़ लगी है। ये सभी पृथ्वी को चोट पहुंचा रहे हैं। पृथ्वी लगातार संकेत दे रही है कि उसकी सहनशीलता काफी चोटिल हो रही है। पृथ्वी की भी अपनी सहनशीलता है। यह चोट मौसम में बदलाव को संकेत द्वारा बतला रही है। ग्लेशियर पिघल रहा है। बिना मौसम बारिश हो रही है, बांदे आ रही हैं। पृथ्वी के तापमान में काफी वृद्धि हो रही है। इन सभी वजहों से ठंड भी काफी पड़ रही है। यह संकेत काफी है। सभी को याद है कि जब जापान के नागासाकी पर परमाणु बम गिरे थे तब से आज तक उस जगह पर उत्पन्न होने वाले, चाहे पेड़ पौधे हों या आम इंसान, सभी बुरी तरह प्रभावित रहे हैं। यदि इसी प्रकार विकास की अंधी दौड़ में वातावरण पर कुठाराघात किया जाता रहा तो निश्चित तौर पर पृथ्वी की सहनशीलता जवाब दे जाएगी और पूरा विश्व एक बार फिर नष्ट हो जाएगा। अब हमें संभलना होगा। वातावरण के संकेत को समझ कर पर्यावरण के अनुकूल कार्य करने होंगे। तभी जीवन आगे चल पाएगा। इसी माह पृथ्वी दिवस भी है। इस अवसर पर हमें संकल्पित होना होगा कि वातावरण के संरक्षण के लिए हम सब मिलकर कदम आगे बढ़ाएंगे, तब जाकर पृथ्वी दिवस मनाना सफल होगा। 'सच की दस्तक' के इस अंक में बदलते वातावरण पर चर्चा की गई है।

आइए, अब प्रयागराज की तरफ चला जाए। पिछले दिनों खूंखार माफिया डॉन अतीक अहमद और उसके भाई अशरफ को पुलिस कस्टडी में शातिर युवा

अपराधियों ने मौत की नींद सुला दिया। यह घटना काफी बड़ी है क्योंकि अतीक एक ऐसा नाम है जिससे लोग थर-थर काँपते रहे हैं। उसके विषय में बोलता कोई नहीं था। पूरा प्रयागराज जुल्मोसितम से परेशान था। किन्तु पुलिस कस्टडी में इस प्रकार की घटना घटित हुई जो कुछ प्रश्न भी उठने लगे। उत्तर प्रदेश सरकार ने माननीय न्यायालय को वचन दिया था कि उसे पूरी सुरक्षा के बीच न्यायालय लाया जाएगा और दोबारा जिस जेल से लाया जाएगा उसी में छोड़ दिया जाएगा, लेकिन ऐसा हो न सका। इस अंक में अपराधी अतीक के संदर्भ में हमने विपक्षियों का पक्ष भी रखा है।

यह भी बात सही है कि अतीक के आतंक से लोगों को छुटकारा मिला। अतीक ने जिस पर जुल्म ढहाया था अब वह खुलकर सामने आ रहे हैं। इससे यह लग रहा है कि अतीक ने आम लोगों पर जुल्म की इंतहा ही कर दी थी। आज जो अतीक से प्रताड़ित हुए हैं वह प्रदेश सरकार से उम्मीद लगाए हैं और नए सवेरे का इंतजार कर रहे हैं।

इस अंक में एक बड़ी मजेदार चीज आपके बीच में रखने जा रहा हूँ। वह है चंदौली जिले का काला धान। जिसके चलते चंदौली को विश्व पटल पर जगह मिली है। चंदौली द्वारा काला धान का निर्यात दूसरे देशों में भी किया जाता है। इस अंक में, काला धान हमारे लिए क्यों महत्वपूर्ण है, पूरे तथ्य के साथ आपके बीच रखा गया है। किसानों का दर्द भी और प्रशासन की मजबूरी भी रखी गई है। इस पर आपके सुझाव भी आमंत्रित हैं। इसके अलावा इस अंक में 'कलम इनकी जय बोल' के तहत एक ऐसी तवायफ की कहानी आपके बीच सच की दस्तक ला रही है जिसने स्वतंत्रता आंदोलन में एक बड़ी भूमिका अदा की। तांत्या टोपे जैसे लोगों को अपने नृत्य के बल पर अंग्रेजों से न केवल बचाया बल्कि स्वतंत्रता आंदोलन को एक नई दिशा भी दी। किसी को इनकी कहानी मालूम

तक नहीं है। सच की दस्तक एक ऐसी नृत्यांगना की कहानी ला रहा है। जिससे अच्छी सीख मिल सकती है। इस अंक में राजस्थान की राजनीति पर भी बात की गई है। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत और कांग्रेस के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष व पूर्व उप मुख्यमंत्री सचिन पायलट के बीच कुर्सी के लिए जंग जारी है। इस वर्ष के अंत में राजस्थान विधानसभा के चुनाव होने हैं। ऐसे में मुख्यमंत्री बनने की होड़ लग गई है। सचिन पायलट अपनी ही सरकार में हुए भ्रष्टाचार के लिए अनशन पर बैठ रहे हैं। विपक्ष इसी पर चुटकी ले रहा है। विपक्ष राजस्थान सरकार पर जो भ्रष्टाचार का आरोप लगाता रहा है, सचिन पायलट उसे सच साबित कर रहे हैं। ऐसे में कांग्रेस आलाकमान क्या फैसला लेती है यह तो आने वाला समय ही बताएगा। निश्चित तौर पर आने वाले विधानसभा चुनाव में कांग्रेस को परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। विपक्ष को बैठे बिठाए मुद्दे भी मिलेंगे।

इसके अलावा हम इस अंक में फिनलैंड की बात करेंगे जो कुछ ही दिन पहले अपने अस्तित्व को बचाने के लिए नाटो में शामिल हुआ है। अब वह नाटो में शामिल होकर स्वयं को सुरक्षित मान रहा है। फिनलैंड को यह कर्तव्य नहीं भूलना चाहिए कि रूस यूक्रेन युद्ध चल रहा है। यूक्रेन ने भी इसी तरह की गलती की थी। वह भी नाटो की तरफ जा रहा था। रूस ने उसे मना किया था लेकिन उसने नहीं माना था। नतीजा सबके सामने है। पूरा यूक्रेन समाप्ति की कगार पर है। जंग अभी जारी है। हो सकता है कि यूक्रेन के माध्यम से तीसरा विश्व युद्ध न छिड़ जाए और इसका शिकार कहीं फिनलैंड भी न हो जाए। इन सब खबरों का विश्लेषण 'सच की दस्तक' के इस अंक में पढ़ने को मिलेगा। एक बार पुनः सभी पाठकों को बैसाखी पर्व की देर सारी शुभकामनाएँ।

ब्रजैश कुमार

कई बार



**लीलाधर जगूड़ी
प्रख्यात कवि एव साहित्यकार**

एक जीना जग जाहिर
एक जीना चुपचाप
दो-दो प्रकार से जीना पड़ता है एक जीवन
कई बार

अकस्मात एक दिन खत्म होने से पहले
अंजुली भर पानी में
सिकुड़ते आकाश की तड़प की तरह
जीना और समाना पड़ता है कई बार
रिसना पड़ता है उड़ जाना पड़ता है
छोजना पड़ता है कई बार

मिट्टी के गुण का शिकार
हवा के गुण का शिकार
पानी के गुण का शिकार
जीवन में जीवन का शिकार होना पड़ता है।



काले धान का सफर

काले चावल में कथित तौर पर 'एंथोसायनिन नामक एक पिगमेंट होता है, जिसकी वजह से इसका रंग काला होता है और यही इसी की वजह से एंटी-इप्पले में टरी, एंटीऑक्सिडेंट और कैंसर रोधी गुण प्रदान करता है। इसमें महत्वपूर्ण कैरोटिनॉयड भी होते हैं जो वास्तव में आंखों के लिए बहुत अच्छा माना जाता है। इसके अलावा यह प्राकृतिक तौर पर ग्लूटेन-फ्री और प्रोटीन, आयरन, विटामिन ई, कैल्शियम, मैग्नीशियम, नेचुरल फाइबर आदि से भरपूर है। इसी कारण ये वजन घटाने में मददगार होता है। इसे एक नेचुरल डिटॉक्सिफायर माना जाता है। इसका सेवन एथेरोस्क्लोरोसिस, डायाबिटीज, अल्जाइमर, हाइपरटेंशन जैसी बीमारियों को भी दूर रखता है।



ब्रजेश कुमार
संपादक सच की दस्तक



चंदौली जिले को धान का कटोरा कहा जाता है। यहां पर धान की पैदावार बहुत अच्छी होती है और यहां से धान कई प्रदेशों में जाता है। चंदौली की भूमि और सिंचाई व्यवस्था काफी बेहतर है। जिले में धान की खेती करने वाले किसानों की उत्सुकता को देखते हुए पहले मोदी सरकार में केंद्रीय मंत्री रहे मेनका गांधी द्वारा 'काले धान' की खेती पर विशेष ध्यान देने को कहा गया था।

2018 में तत्कालीन चंदौली के जिलाधिकारी नवनीत सिंह चहल ने मणिपुर से 25 किलोग्राम बीज ब्लैक राइस का सैंपल स्वरूप मंगाया गया था और पहली बार 30 किसानों ने इसकी खेती की थी। पहली बार 70 किलो ग्राम चावल 300 कि. दर से प्रयागराज कुंभ में बेचा गया था और इससे नई उम्मीद बन काफी बढ़ा। कोरोना के समय में

चंदौली के काले चावल की मांग आस्ट्रेलिया सहित विश्व के कई देशों में हुई है। चंदौली प्रशासन की पहल पर काले चावल को कलेक्टर मार्क यानी विशेष उत्पाद की मान्यता मिली है।

2019 में 200 किसानों द्वारा 100 हेक्टेयर काले चावल की खेती की गई। हार्वेस्टिंग सीजन में लगभग 1129 कुंतल धान पुल हुआ इसमें से 840 कुंतल धान का क्रय सुखबीर एग्रो पंजाब द्वारा किया गया। वही 189 कुंतल मुंबई की कंपनी शिव हिल द्वारा खरीदा गया जो 8500 प्रति कुंतल की दर से ली गई। इसी क्रम में 200 कुंतल स्थानीय स्तर पर मिलिंग कराई गई 200 से 250 प्रति किलोग्राम कि दर से फुटकर में इसकी बिक्री की गई। इससे किसानों का मनोबल काफी बढ़ा। कोरोना के समय में



प्रधानमंत्री द्वारा एक संदेश दिया गया जिसमें कहा गया कि आपदा को अवसर में हम सब के द्वारा मिलकर बदला जाएगा। इसी को मूल मंत्र मानकर 2020 में 250 किसानों ने काले धान की 100 हेक्टेयर में खेती की गई और 1300 कुंतल पैदावार किया इनमें से सॉसेज 300 कुंतल अल्बर्ट एग्रो नोएडा तथा लाल महाल नोएडा की दो कंपनियों द्वारा 25 - 25 कुंतल क्रय किया गया। वहीं, सोनीपत की दो कंपनियों द्वारा भी 25 --25 कुंतल खरीदारी की गई। मिर्जापुर की एक कंपनी ने भी लगभग 25 कुंतल की खरीदारी की। उन सब के बावजूद 1000 कुंतल अभी बचा ही रहा। 2021 में लगभग 50 हेक्टेयर में काले धान की खेती की गई इस बार 500 कुंतल काला धान उत्पादित किया गया। मार्च 2022 के उपरांत पूल हवा। केआरबीएल नोएडा 150 कुंतल धान खरीदा। लगभग 50,000 रुपए की खरीदारी हुई। 2021 में 800 कुंतल धान अभी विपणन के आभाव में भंडारित है।

काले चावल स्वास्थ्य के लिए वरदान है। काले चावल का मूल प्राचीन चीन से जुड़ा है। जहां इसे 'वर्जित चावल' कहा जाता है और माना जाता है कि ये सिर्फ शाही उपभोग के लिए ही होता है।

भारत में काला चावल या चक-हाओ (स्वादिष्ट चावल) सदियों से मणिपुर के मूल व्यंजनों में इस्तेमाल होता रहा है।

काले चावल में कथित तौर पर 'एंथोसायनिन नामक एक पिगमेंट होता है, जिसकी वजह से इसका रंग काला होता है और यही इसी की वजह से एंटी-इफ्लेमेटरी, एंटीऑक्सिडेंट और कैंसर रोधी गुण प्रदान करता है। इसमें महत्वपूर्ण कैरोटिनॉयड भी होते हैं जो वास्तव में आंखों के लिए बहुत अच्छा माना जाता है। इसके अलावा यह प्राकृतिक तौर पर ग्लूटेन-फ्री और प्रोटीन, आयरन, विटामिन ई, कैल्शियम, मैग्नीशियम, नेचुरल फाइबर आदि से भरपूर है। इसी कारण ये वजन घटाने में मददगार होता है। इसे एक नेचुरल डिटॉक्सिफायर माना जाता है। इसका सेवन एथेरोस्क्लरोसिस, डायबिटीज, अल्जाइमर, हाइपरटेंशन जैसी बीमारियों को भी दूर रखता है।

काले चावल की खेती में मेहनत ज्यादा -

काले चावल उगाने में कुछ कठिनाइयां भी हैं क्योंकि ये पूरी तरह से ऑर्गेनिक हैं जिसके लिए बहुत अधिक श्रम की जरूरत पड़ती है। यहां तक कि

कुछ किसानों को शुरू में नुकसान का सामना करना पड़ा। उन्होंने आदतन रासायनिक सामग्री इस्तेमाल कर ली। हालांकि, अब इसकी खेती पर मिलने वाला रिटर्न असाधारण है क्योंकि काले चावल वर्गी उत्पादवर्गता 25 किंवद्दन/हेक्टेयर होती है।

यह करीब पांच फीट की ऊँचाई तक बढ़ता है। चंदौली से शुरू हुई लैंक राइस की खेती अब गाजीपुर, सोनभद्र, मीरजापुर, बलिया, मऊ व आजमगढ़ तक पहुंची है।

चंदौली में काले धान की खेती के लिए किसानों को काफी प्रोत्साहित किया गया। सैकड़ों किसानों ने इसकी खेती की पर लचर मार्किटिंग की वजह से नवीन मंडी में सैकड़ों किसानों का 1300 किंवद्दन काला धान पड़ा हुआ है। न इसकी खरीद हो पा रही है और न ही किसानों को इसके पैसे मिल पा रहे हैं।

कमजोर मार्किटिंग और खरीदारों के रुचि न लेने के चलते लैंक राइस की खेती करने वाले किसानों के अरमानों पर पानी फिरता नजर आ रहा है। इससे किसानों में अब लैंक राइस की खेती से मोह भंग होता नजर रहा है। जबकि कृषि विभाग और पूरे सरकारी अमला का दावा है कि लैंक राइस की खेती से किसानों की आय दोगुनी नहीं बल्कि तीन गुना बढ़ी है। वहीं लैंक राइस की खेती करने वाले किसानों ने बताया कि उन्होंने बेहतर आय की उम्मीद के चलते धान की खेती की थी, लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ और उनकी सारी उम्मीदें धरी की धरी रह गईं। उनकी उपज का कोई खरीदार नहीं मिला। किसानों का कहना है कि वर्ष 2019-20 में

जब दोबारा रोपाई का समय आ गया था, तब खरीदारी हुई थी। वर्ष 2020 - 21 और वर्ष 2021-22 में इसका कोई खरीदार नहीं मिला है। इससे वर्ष 2020-21 का 1200 कुंतल ब्लैक राइस चंदौली मंडी परिषद के गोदाम और वर्ष 2021-22 का ब्लैक राइस किसानों के घर पर पड़ा हुआ है। ये सब देखकर अब इसकी खेती मुनासिब नहीं लगती।

मचवा गांव के किसान अवनींद्र कुमार पांडेय ने करीब एक एकड़ में ब्लैक राइस की खेती किया था। उनकी उपज का कोई खरीदार नहीं मिला। इमिलिया गांव के किसान अजय कुमार सिंह का कहना है कि बाजार में ब्लैक राइस को न तो सही दाम मिल पा रहा है न ही खरीदार मिल पा रहे हैं। कंदवा गांव के किसान अच्युतानंद त्रिपाठी ने बताया कि ब्लैक राइस के उपज की अनुमानित लागत 150 से 200 रुपए आंकी गई थी। वर्ष 2019-20 में चंदौली काला चावल समिति के साध्यम से किसानों ने 8500 रुपए कुंतल के हिसाब से बेंचा था, लेकिन 2020-21 और 2021-22 में कोई खरीदार नहीं मिला है। कहा कि पहले 15 बिस्ते खेती करता था लेकिन इस वर्ष केवल अपने उपयोग के लिए पांच बिस्ते में खेती किया है। सिकठा गांव के किसान रतन सिंह का कहना है कि पहले दो वर्ष तक उन्होंने 16 बिस्ते में खेती किया था। जब 85 रुपए किलो मूल्य मिला तो डेढ़ एकड़ में ब्लैक राइस की खेती किया था। लेकिन इस बार कोई खरीदार ही नहीं मिला। इस संबंध में चंदौली काला चावल समिति के महामंत्री वीरेंद्र सिंह का कहना है कि अभी कोई खरीदार नहीं मिला है। इससे किसानों की



उपज मंडी परिषद में रखी हुई है। इसकी आखिर! क्वालिटी फ्रंट पर नुकसान यदि हो रहा है तो निश्चित है उसमें सुधारने की आवश्यकता है।

जिला कृषि अधिकारी चंदौली बसंत दुबे के अनुसार -

इस संबंध में जिला कृषि अधिकारी बसंत दुबे ने बताया कि 10 से 20 कुंतल प्रति हेक्टेयर काले धान का उत्पादन होता है। चंदौली धान का कटोरा है लेकिन कहीं ना कहीं क्वालिटी फ्रंट पर काले धान को नुकसान हो रहा है। इसकी वजह को किसानों को ही समझना होगा। इसके निर्धारित की गई मूल्य को भी समझना होगा। ऐसा दाम रखे जाए जो लोगों के पहुंच के पास हो। शुरुआत में जिस प्रकार से उत्पादन होने के बाद इनकी बिक्री हुई वह काबिले तारीफ रही। इसके लिए बाकायदा केंद्र सरकार की तरफ से परितोषिक भी दिया गया।

अफसोस की बात है कि जब ऑर्डर विदेशों (ऑस्ट्रेलिया) से आया तो जब यहां से काला चावल भेजा गया तो क्वालिटी देखकर स्टॉक लौटा दिया गया। अब किसानों को यह समझना होगा कि

वर्तमान समय पर डेड एंड तक पहुंच गया है। कृषि विभाग के लोग किसानों से इस विषय पर बात कर रहे हैं कि आपसी विचार विमर्श के बाद कमियों को दूर कर काला धान का एक बार पुनः निर्यात प्रारंभ हो जायेगा।

चलिये! अब काले धान का भविष्य तो समय की बंद मुद्दी में कैद है पर काले धान के सुनहरे सफर को इतना सफर करना पड़ जायेगा यह विचारणीय है। जैसे भारत सरकार ने श्री अन्न को अंतर्राष्ट्रीय फलक पर चमकाया है अब ब्लैक राइस के भी चमकने की बाट जोहर होता है हमारा अपना चंदौली, हमें विश्वास भी है कि अगर सब लोग उचित प्रयास करें तो चंदौली के काले धान का भविष्य जरूर प्रकाशमय होगा और इससे बहुतों के जीवनस्तर में आशातीत परिवर्तन भी देखने को मिलेंगे।



पृथ्वी की सहनशीलता पर कुठाराधात?

प्रकृति के इशारों को दरकिनार कर हम इंसानों की लूट वाली भूख कभी मिटती ही नहीं। हम अनवरत प्रकृति का बड़ी ही क्रूरता से दोहन किये जा रहे हैं जिसकी कीमत हमें भयंकर महामारी और अनेक भयंकर बीमारियों के रूप में चुकानी पड़ रही हैं। बात करें तो आज सबसे बड़ी बीमारी की वजह, जल प्रदूषण है जो हमारे तन - मन को मौत के मुंह में हर पल खीचें जा रहा है। आज बनारस, सोनभद्र, पटना और झारखण्ड के कुछ गांव जहाँ पानी में फ्लोराइड व आर्सेनिक की अधिकता के कारण वहाँ के 70% बच्चे विकलांग पैदा होते हैं।



आकांक्षा सक्सेना
न्यूज एडीटर सच की दस्तक



[हमें पेड़ लगाने ही होंगे, हम स्वार्थी इंसानों के पास और कोई विकल्प नहीं]

साथियों! जब भी पृथ्वी शब्द सुनती हूं तो मुझे भगवान श्री वराह की कथा याद आती है कि कैसे भगवान श्री हरि विष्णु जी ने वराह अवतार लेकर पृथ्वी माता का उद्धार किया था। हमने जबसे याद सम्भाली है तब से यही सुनते चले आ रहे हैं कि पृथ्वी हमारी माता है और सुबह जागते ही पृथ्वी पर पांव रखने से पहले पृथ्वी माता के पांव छूओ। यह सिखाती है हमें हमारी महान भारतीय संस्कृति पर पूर्वजों ने कितना कुछ सिखाया पर अफसोस! आज सबकुछ आधुनिकता की भेंट चढ़ गया। हमारे धार्मिक ग्रंथ कहते हैं कि हम इंसानों को तीन ऋण, 1. देव ऋण, 2. ऋषि ऋण और 3. पितृ ऋण को चुकता यानि उऋण कर के ही संसार से

मुक्ति प्राप्त होती है। पर आज जो हम इंसानों ने अपनी हरकतों से जिस तरह पृथ्वी को संकट में डाल रखा है तो यह कहना गलत न होगा कि 4. पृथ्वी ऋण से भी उऋण होना हमारी प्रतिबद्धता होनी चाहिए। यानि पृथ्वी की रक्षा जागरूकता में हम इंसानों को कुछ समय देना ही होगा और एक जिम्मेदार पृथ्वीवासी होना सिद्ध करना होगा।

आज हमारी महत्वाकांक्षायें अंतरिक्ष के साथ-साथ पृथ्वी माँ का भी कलेजा चीरती हुई दिखाई पड़ती है कि आज जंगल न के बराबर बचे हैं। एक समय था हर भारतीय चंदन लगाता था पर आज चंदन की लकड़ी के दर्शन दुर्लभ हैं। जरा सोचो! कि जब वन नहीं रहे तो शुद्ध वायु नहीं रही और भूक्षरण बढ़ा, वर्षा की अनियमितता दिखी और रही बाढ़ी ग़सर हम इंसानों नहीं

अंतरिक्षचीरती और हृदयभेदती क्रूर असंवेदनशील महत्वाकांक्षा वें परिणामस्वरूप वर्तमान में चल रहे भयंकर युद्धों ने पूरी की हुई है। जी हाँ हम उसी रूस-यूक्रेन युद्ध की बात कर रहे हैं जोकि अभी तक जारी है। उधर, चीन और ताइवान में भी जंग की आहट आने लगी है। इसाइल और ईरान पहले से ही भिड़े हुए हैं। उससे पहले सीरिया में बमबारी कौन भूल सकता है। परिणामस्वरूप तुर्की - सीरिया में आया अभी तक का सबसे विनाशकारी भूकंप भी कोई नहीं भूल सकता जिसकी तस्वीरों ने पूरी दुनिया के लोगों को सहमा दिया था। भूकंप एक चेतावनी है कि पृथ्वी माता की सहनशीलता पर कुठाराघात की अति मत करो वरना भूकंप, सुनामी, बाढ़, तूफान, ग्लेशियर का पिघलना, जलवायु परिवर्तन, भयंकर अम्ल वर्षा, महामारी व जोशीमठ में आयीं दरारों के जिम्मेदार तुम इंसानों के कर्म स्वयं होंगे।

प्रकृति के इशारों को दरकिनार कर हम इंसानों की लूट गाली भूख कभी मिट्टी ही नहीं। हम अनवरत प्रकृति का बड़ी ही क्रूरता से दोहन किये जा रहे हैं जिसकी कीमत हमें भयंकर महामारी और अनेक भयंकर बीमारियों के रूप में चुकानी पड़ रही हैं। बात करें तो आज सबसे बड़ी बीमारी की वजह, जल प्रदूषण है जो हमारे तन - मन को मौत के मुंह में हर पल खीचें जा रहा है। आज बनारस, सोनभद्र, पटना और झारखण्ड के कुछ गांव जहाँ पानी में फ्लोराइड व आर्सेनिक की अधिकता के कारण वहां के 70% बच्चे गिरकलांग पैदा होते हैं। एक अध्ययनानुसार जल प्रदूषण व जल की

कमी को पांच वर्ष तक की उम्र के बच्चों के लिए 'नंबर वन किलर' करार दिया है। आंकड़े बताते हैं कि पांच वर्ष से कम उम्र तक के बच्चों की 3.1 प्रतिशत मौत और 3.7 प्रतिशत विकलांगता का कारण प्रदूषित पानी ही है। किंतु इसका उपाय, आरओ, फिल्टर या बोतलबंद पानी या बाजार नहीं हो सकता। हमें हर कीमत पर पेड़ लगाने ही होंगे। आज देखने में आता है कि हम स्वार्थी इंसानों द्वारा फेंकी गयी पॉलीथिन जिन्हें आवारा जानवर और गायें खा लेती हैं वह भी दस - दस किलो के एवज में और बेमौत मारीं जातीं हैं। आज दिल्ली जैसे बड़े शहरों में हवा इतनी जहरीली हो चुकी है कि कारण वहां बच्चों को मास्क लगाकर स्कूल जाना पड़ता है। और हालत यह है कि हर दूसरे व्यक्ति को श्वास की घातक बीमारियों ने घेरा हुआ है। हम कहां जा रहे हैं क्या यही है आधुनीकरण? और फिर जब प्रदूषण बढ़े तो गम्भीर और लाइलाज महाभयंकर बीमारियों ने हम इंसानों सहित पूरे जीव और पादप जगत को अपनी कभी न बुझने वाले प्यासे खूनी पंजों में जकड़ लिया है जिसका परिणाम यह हुआ कि तनाव बढ़ा, उम्र कम हुई और मृत्युदर बढ़ गयी। और इसीलिए हम अवसरवादी इंसानों ने पृथ्वी माता को दिये अनेकों घाव और आघातों की माफी मांगने और इन्हीं गलियों को सुधारने हेतु पृथ्वी दिवस जैसे दिनों को सामूहिक व सार्वजनिक रूप से विश्व स्तर पर मनाये जाने की घोषणाएं की।

साथियों! पृथ्वी दिवस की शुरुआत का श्रेय अमेरिकी सीनेटर गेलार्ड नेल्सन को जाता है। अमेरिका में 1970 के दशक

में जहां एक तरफ वियतनाम युद्ध को लेकर विद्यार्थियों का आंदोलन जोर पकड़ रहा था। वहीं दूसरी ओर एक तबके में पर्यावरण संरक्षण को लेकर चेतना जाग रही थी। इसी बीच कैलीफोर्निया के सांता बारबरा में 29 जनवरी 1969 को एक बड़ी दुर्घटना घटी। अचानक एक तेल कुएं में विस्फोट हो गया और बड़ी मात्रा में तेल और प्राकृतिक गैस सतह पर आ गया। इस भयानक तेल रिसाव ने सबकी आंखें खोल कर रख दीं। ऐसे में गेलॉर्ड नेल्सन के दिमाग में एक स्वस्थ और जनहित के विकासवादी विचार ने जन्म लिया कि यदि विद्यार्थियों की शक्ति को पर्यावरण चेतना के साथ जोड़ दिया जाए तो पर्यावरण का मुद्दा राष्ट्रीय एजेंडे में शामिल हो जाएगा। और इसी क्रम में गेलॉर्ड नेल्सन ने मीडिया में पर्यावरण पर राष्ट्रीय शिक्षण के विचार की घोषणा कर दी। उन्होंने कांग्रेस में संरक्षणवादी सोच रखने वाले रिपब्लिकन प्रतिनिधि, पीट मैकलोस्की को अपने साथ काम करने के लिए तैयार किया, और डेनिस हायेस को राष्ट्रीय समन्वयक नियुक्त किया। हायेस ने देश भर में इस आयोजन के प्रसार के लिए 85 कर्मचारियों की नियुक्ति की और इस नियुक्ति का परिणाम यह हुआ कि 22 अप्रैल, 1970 को संयुक्त राज्य अमेरिका की सड़कों, चैराहों, पार्कों, कॉलेजों, दफतरों पर स्वस्थ और सतत पर्यावरण को लेकर रैली, जनसभायें, प्रदर्शन, प्रदर्शनी, यात्रा आदि आयोजित किए गये। विश्वविद्यालयों में पर्यावरण में गिरावट और मानवीय तनावपूर्ण भयावह हो रही स्थिति पर लम्बी बहस चल पड़ी। ताप विद्युत संयंत्र, प्रदूषण फैलाने वाली

इकाइयां, जहरीला कचरा, फसलों में पड़ने वाले जहरीले कीटनाशकों के अति प्रयोग तथा वन्य जीव व जैवविविधता सुनिश्चित करने वाली अनेकानेक प्रजातियों के खाते के खिलाफ एकमत हुए दो करोड़ अमेरिकियों ने अपनी आवाज बुलंद की जिसने इस तारीख को पृथ्वी के अस्तित्व के लिए आह्वान बना दिया। तब से लेकर आज तक इस दिन को पूरी दुनिया ने आत्मसात कर लिया और जिंदगी का एक अहम हिस्सा बना लिया। इसके बाद मानो एक अच्छे कार्य की सुबह होने को बैचेन थी कि 1970 के इस पृथ्वी दिवस को अनूठा राजनीतिक समर्थन मिला। वहां के रिप्लिकन और डेमोक्रेट, गरीब और अमीर, शहरी और ग्रामीण किसान, अधिकारी और श्रमिक नेता सभी ने इस आयोजन को अपना पूर्ण समर्थन देकर इस आयोजन ने संयुक्त राष्ट्र में पर्यावरण संरक्षण एजेंसी का गठन कर मानो इस रास्ते को समतल और पूरी दुनिया के लिये खोल दिया।

फिर, 21 मार्च, 1971 को संयुक्त राष्ट्र महासचिव यू थैंट ने पृथ्वी दिवस को अंतर्राष्ट्रीय समारोह घोषित कर दिया। वर्ष 1990 में पहली बार आधिकारिक तौर पर अंतर्राष्ट्रीय पृथ्वी दिवस मनाया गया। पर्यावरण संरक्षण के लिए आयोजित इस विश्व चर्चित भव्य समारोह या दिवस में दुनियाभर के 141 देशों में लगभग 20 करोड़ लोगों ने हिस्सा लेकर इस समारोह को दुनिया के सामने बड़ी गम्भीरता से रखा। और वर्ष 1992 में रियो डी जेनेरियो में संयुक्त राष्ट्र पृथ्वी शिखर सम्मेलन हुआ। बाद में पृथ्वी दिवस की स्थापना के लिए राष्ट्रपति बिल किल्टन ने सीनेटर

गेलॉर्ड नेल्सन को प्रेसीडेंट मेडल ऑफ़ फ्रीडम-1995 प्रदान किया। तब, गेलॉर्ड नेल्सन ने एक बयान में कहा था कि- “यह एक जुआ था; जो काम कर गया।” सचमुच ऐसा ही है। सच



कहा नेल्सन ने कि आज जितने भी इंसानों ने चमत्कार किये हैं उनके पीछे एक मजबूत सोच और स्वस्थ विचार ही था। परिणामस्वरूप पर्यावरण संरक्षण के आधुनिक सजग आंदोलन का यह यादगार दिन अब प्रतिवर्ष 22 अप्रैल को पृथ्वी दिवस के रूप में पूरी दुनिया में मनाया जाता है। और पर्यावरण बचाओ पृथ्वी बचाओ अभियान के तहत समाज और देश में सजगता और समरसता लाने हेतु सरकारी और गैरसरकारी स्तर पर इस दिन अनेकों आयोजन किये जाते हैं।

सच है कि 22 अप्रैल का पृथ्वी माता से सीधे-सीधे कोई लेना-देना नहीं है। पर यह वही दिन था जब एक महाविद्रोह घटा जिसे प्रकृति प्रेम की तरफ मोड़ दिया गया। परिणामस्वरूप वहां का हर कोना आज के दिन ‘क्लीन-ग्रीन सिटी’ के नारे से गूँज उठा था। गैरतलब हो कि जब पूरी दुनिया 22 अप्रैल को पृथ्वी दिवस मनाती है तब अमेरिका में इसे वृक्ष दिवस के रूप में मनाया जाता है। हाँ यही सच है कि हमें एसी कमरों से निकल कर प्रकृति की गोद में लौटना ही होगा तथा स्वच्छ हवा और स्वस्थ जीवन के लिये हमें बहुतायत से पेड़ लगाने ही होंगे, हम स्वार्थी इंसानों के

पास और कोई दूसरा विकल्प नहीं। क्योंकि धरती माँ स्वस्थ होगी तभी हम और आप स्वस्थ रहेगें। आज अस्तित्व की पुकार को हमें शांति से सुनना व व्यवहार में लाना होगा। हमें समझना होगा कि जो कुछ भी हमें जन्म से प्रकृति प्रदत्त निशुल्क मिला है वह बहुत अनमोल है और जिसका ऋण उतारें बिना जीवन की आशा करना बेमानी होगा। आज दुनिया में हर बड़े मुद्दे पर बहस शुरू होते देर नहीं लगती। हम तो कहते हैं कि जिस पृथ्वी पर हम सब इंसान रहते हैं उसकी सुरक्षा व स्वच्छता के परिपेक्ष्य पर भी हर घर स्तर से लेकर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्वस्थ सकारात्मक बहस आखिर! कब शुरू होगी? और कब बंद होंगे हमारी धरती माता की संवेदनशीलता पर हो रहे कुठाराघात? याद रखो इंसानों धरती माता की सहनशीलता की भी एक सीमा है। समय रहते सुधर जाओ वरना तुम मुझी भर अतिमहत्वाकांक्षी गैरजिम्मेदार इंसानों की सजा पूरी पृथ्वी के प्राणियों को अपनी जान से चुकानी पड़ेगी फिर कोई पछतावा आपका पाप नहीं धुल सकेगा।

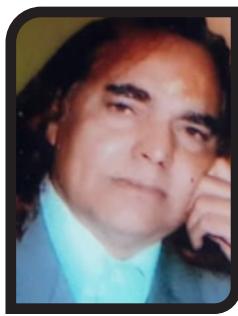


अजीजन बेगम

घुंधरु उतारकर स्वतंत्रता संग्राम में कूदने वाली कानपुर की एक वीरांगना नर्तकी..... अजीजन बेगम

स्वतंत्रता के अमृत महोत्सव ने एक आत्मीय अपील की है कि हम सबको संकलिप्त होना होगा ताकि स्वर्णिम महोत्सव तक हमारा देश विश्वगुरु के साथ सर्वमुखी विकसित राष्ट्र भी बन सके। इस संकल्प में कलमकारों की भूमिका भी महत्वपूर्ण है ताकि वे आजादी के वीर सपूत्रों की गाथा को जन-जन तक पहुंचा कर स्मृति पटल पर जागरूक करते रहे। उल्लेखनीय है कि पिछले कई महीनों से चंदौली जनपद (वाराणसी) के दीनदयाल उपाध्याय नगर (मुगलसराय) के निवासी वरिष्ठ नागरिक- स्तंभकार वृष्णकान्त श्रीवास्तव जी की कलम इस विषय पर निरंतर चल रही है। प्रस्तुत है इस अंक में घुंधरु उतारकर स्वतंत्रता संग्राम में कूदने वाली कानपुर की नर्तकी अजीजन बेगम की गाथा.....

संपादक



कृष्णकान्त श्रीवास्तव
वरिष्ठ रंगकर्मी - रचनाकर्मी



बैइंतहा खूबसूरत जैसे चांद झील में तैर रहा हो , दिल से बेहद उदार, अपने वतन से बेपनाह मोहब्बत करने वाली, एक पेशेवर नर्तकी जिसने गुलामी की बेड़ियों को तोड़ने के लिए उतार दिए अपने घुंधरु, अपने रसिकों के लिए महफिल सजाने वाली नर्तकी तात्या टोपे के साथ मिलकर करने लगी क्रांतिकारियों की बैठके, बनाने लगी रणनीतियाँ, अपने गहने- अपनी दौलत और अपनी दूसरी सभी चीजें क्रांतिकारियों के कदमों में रख दी और कहा इससे मुल्क की हिफाजत के लिए जरूरी इंतजाम करो, फिरंगियों को देने के लिए टक्कर बना ली महिलाओं की एक सशस्त्र सेना और संभाल ली उनकी कमान.....।

ब्रिटिश इतिहासकार सर जार्ज ट्रेवेलियन ने लिखा 'सैनिक वेशभूषा में अनेक तमगे लगाए घोड़े पर सवार और हाथ में पिस्तौल लिए अजीजन बिजली की

तरह अंग्रेज सैनिकों को रौंदती चली जाती थी।

गिरफ्तार होने के बाद जब यह वीरांगना नर्तकी अंग्रेजों के सामने लाई गई तो अंग्रेजों ने कहा... 'वह सिर्फ यह बता दें कि उसने किसे मदद पहुंचाई है, हम गुनाह माफ कर देंगे और बाइज्जत रहने देंगे....। वह नृत्यांगना मुस्कुराई और बोली.....

'भले तुम मेरी जबान खींच लो मगर खूबसूरत गजल गाने वाली ये जुबान उफ नहीं करेगी... भले ही मेरी खाल खींच लो, यह खूबसूरत खाल जिसपर जमाना आहें भरता है, मुझे इसकी जरा भी फिक्र नहीं होगी.... भले ही तुम मेरे टुकड़े-टुकड़े कर दो, हर टुकड़ा जो कुदरत के दिये नायाब हुनर की गवाही देता है, वह शिकवा भी नहीं करेगा..... मगर तुम जान लो कि अजीजन की जान भले ही चली जाए पर अपनी जुबान से उन पाक

क्रांतिकारियों का नाम नहीं लेगी.... वे मेरे मुल्क को तुम्हारी धिनौनी साजिश उसे आजाद करा के रहेंगे.....।

इस बेखौफ जगवाब को सुनकर अंग्रेज तिलमिला गए और उन्होंने उस वीरांगना नर्तकी को तोप से उड़ा दिया।

अंजीजन बाई का जन्म 22 जनवरी 1824 को मध्यप्रदेश के मालवा राज्य के राजगढ़ में हुआ था। बहुत बड़े जागीरदार शमशेर सिंह के यहां जन्मी इस बच्ची का नाम 'अंजुला' रखा गया। ये इकलौती संतान थी और पूरे घर- परिवार में बहुत लाडली बेटी। एक बार अपनी सहेलियों के साथ ये हरादेवी के मंदिर में लगने वाले मेले में घूमने गई। एक अंग्रेज सिपाही ने इनका अपहरण कर लिया। इस सदमे को पिता शमशेर सिंह बर्दाश्त नहीं कर पाए और चल बसे। अंग्रेजों ने उनकी जागीर पर कब्जा कर लिया।

कुछ दिनों तक बच्ची अंजुला से दुष्कर्म करने के बाद

अंग्रेज सिपाही ने उसे कानपुर लाकर लाठी मोहाल के कोठे की मालकिन अम्मीजान को 500 रुपये में बेच दिया। अम्मीजान ने बच्ची अंजुला का नया नाम रखा 'अंजीजन बाई'..... और इस तरह राजपूत बेटी अंजुला बन गई अंजीजन बाई।

मजबूर अंजीजन ने समय के साथ समझौता कर लिया और कानपुर की मशहूर तवायफ उमराव जान अदा से नाचने गाने का काम सीखने लगी। अंजीजन जब जगान हुई तो उनकी बेमिसाल खूबसूरती और गीत-संगीत-नृत्य के हुनर की चर्चा चारों ओर फैल गई।

इतिहासकार रामकिशोर बाजपेई के अनुसार अंजीजन मूलगंज की रोटी वाली गली में रहती थी। यहां पर अंग्रेज फौज के अफसर भी मुजरा देखने आया करते थे।

एक दिन तात्याटोपे ने अंजीजन बाई को नृत्य करने के लिए बिनूर बुलाया। जब तात्याटोपे इनाम के रूप में अंजीजन को पैसे देने लगे तो अंजीजन ने कहा..... 'मुझे पैसे नहीं अपनी सेना की वर्दी दे दीजिए।' इस बात पर तात्याटोपे ने अंजीजन को अंग्रेजों की मुखियिरी करने का काम दिया।

जब 10 मई 1857 को मेरठ की घटना के बाद क्रांति का बिगुल बजा तो अंजीजन के दिल में बचपन से ही अंग्रेजों के खिलाफ जल रही चिंगारी शोला बनकर धृधक उठी।

1 जून 1857 को जब कानपुर में नाना साहब के नेतृत्व में तात्या टोपे, अंजीमुला खां, बाला साहब, सूबेदार टीका सिंह और शमसुद्दीन खान क्रांति की योजना बना रहे थे तो उनके साथ उस बैठक में अंजीजन भी शामिल हुई। अंजीजन की कहानी जब नाना साहब ने सुनी तो उन्हें लगा कि अंजीजन एक कुलीन परिवार से है। उन्हें मजबूरी में नर्तकी बनकर तवायफ का पेशा अपनाना पड़ा। नाना साहेब ने अंजीजन को अपनी बहन मान लिया और एक तलवार भेंट करते हुए राखी भी बधावाई। इसके बाद अंजीजन फिर से अंजुला (अपने मूल) नाम से पहचानी जाने लगी। अंजीजन ने अपने गहने, धन- दौलत और क्रांति में पड़ने वाली सभी जरूरत की चीजें क्रांतिकारियों को समर्पित कर दिया।

सभी ने गंगाजल को साक्षी मानकर कसम खाई कि हम भारत में ब्रिटिश सत्ता को समाप्त कर देंगे।

अंजीजन- एक योद्धा के रूप में-

नाना साहब के आह्वान पर अंजीजन ने लगभग 400 महिलाओं को अपने साथ जोड़ा। उनको हथियार चलाना सिखा कर 'मस्तानी' नाम से एक सशस्त्र टोली बनाई और खुद उसकी कमान संभाली। अंजीजन की ये टोली दिन में वेश बदलकर पुरुष वेश में तलवार लिए घोड़ों पर चढ़कर नवयुवकों को क्रांति में भाग लेने की प्रेरणा देती थी और रात में अंग्रेज छावनियों में जाकर मुजरा कर के गुप्त सूचनाएं नाना साहब को पहुंचाती थी।

अंजीजन के प्रभाव से अंग्रेजी फौज के हजारों सिपाही नाना साहब के फौज में शामिल हो गए। इन सिपाहियों की मदद से नाना साहब ने कानपुर के प्रथम युद्ध में अंग्रेजों को उखाइ फेंका और बिनूर का शासन अपने हाथ में लेकर 8 जुलाई 1857 को वहां के स्वतंत्र पेशवा बन गए।

इस युद्ध में अंजीजन की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण थी। अंजीजन ने अपनी मस्तानी टोली के साथ नवाबगंज और बिनूर के बीच अंग्रेज सिपाहियों को मौत के घाट उतारा। महाराजपुर के युद्ध में अंजीजन तात्या टोपे के साथ थी और उस युद्ध में उन्होंने तात्याटोपे की जान भी बचाई।

युद्ध के दौरान अंजीजन और उनकी मस्तानी टोली घायल सैनिकों का इलाज करती थी। उनके घावों की मरहम पट्टी करती थी। फल, मिठाइयां और भोजन वितरित करती थीं और अपनी मोहक

अपनत्व भरी मुस्कान से उनकी पीड़ा हरने की कोशिश करतीं।

युद्ध के दौरान अजीजन ने साबित कर दिया कि वह डनृत्यांगना नहीं अपितु वीरांगना हैं।

प्रसिद्ध ब्रिटिश इतिहासकार सर जॉर्ज ट्रेवेलियन ने लिखा है.....

'सैनिक वेशभूषा में अनेक तमगे लगाए घोड़े पर सवार और हाथ में पिस्तौल लिए अजीजन बिजली की तरह अंग्रेज सैनिकों को रौंदती चली जाती थी। उसके साथ महिलाओं की घुड़सवार टुकड़ी भी घुमा करती थी। सैनिकों को हथियार देना, प्यासे सैनिकों को पानी पिलाना और घायलों की देखभाल करना उनके महत्वपूर्ण कार्य थे।'

लेकिन कानपुर पर नाना साहब का अधिकार अधिक दिनों तक नहीं रह सका। 17 जुलाई को जनरल हैवलाक एक बड़ी सेना लेकर कानपुर आया और कुछ विश्वासघातियों की सहायता से उसने कानपुर पर कब्जा कर लिया।

शहीद अजीजन

युद्ध में पराजित नाना साहब और तात्या टोपे वहां से पलायन करना पड़ा। अजीजन भी जंगल में जाकर छिप गई। पुरुष वेश में अजीजन जब एक कुएं के पास छिपी थीं अंग्रेज सैनिकों की एक टुकड़ी ने उन्हें पहचान लिया और गिरफ्तार कर लिया। इतिहासकारों के अनुसार अजीजन को जब अंग्रेज कमांडर जनरल सर हेनरी हैवलाक के समक्ष लाया गया तो हेनरी ने अजीजन से कहा.... अपनी गलतियों को स्वीकार कर क्षमा मांग लो... सिर्फ इतना बता दो

कि किनको मदद पहुंचाई है.... वे अभी कहां छुपे हुए हैं....

क्रांतिकारियों का पता बता दो... तुम्हारे सारे गुनाह माफ करके शहर में बाइज्जत रहने दिया जाएगा। तुम पुनः रास-रंग की दुनिया सजा सकती हैं।

अजीजन मुस्कुराई और बोली-

'भले तुम मेरी जुबान खींच लो मगर खूबसूरत गजल गाने वाली यह जुबान उफ भी नहीं करेगी.... भले ही मेरी खाल खींच लो, यह खूबसूरत खाल जिसपर जमाना आहें भरता है, मुझे इसकी जरा भी फिक्र नहीं होगी..... भले ही तुम मेरे टुकड़े-टुकड़े कर दो, हर टुकड़ा जो कुदरत के दिये नायाब हुनर की गवाही है, वह शिकवा भी नहीं करेगा..... मगर तुम जान लो कि अजीजन की जान भले ही चली जाए पर अपनी जुबान से उन पाक क्रांतिकारियों का नाम नहीं लेगी..... वे मेरे मुल्क को तुम्हारी घिनौनी साजिश से आजाद करा कर रहेंगे....।'

देशभक्ति की भावना से भरे अजीजन के बेखौफ जवाब को सुनकर हैवलाक तिलमिला उठा और उसने आदेश दे दिया कि अजीजन को तोप के मुंह पर बांधकर कर उड़ा दिया जाए।

उसी रात अजीजन की गूँजती आवाज 'हिन्दुस्तान अमर रहे' के बीच उनको तोप से उड़ा दिया गया। शरीर तो चिथड़े- चिथड़े हो गया लेकिन उनकी गाथा अमर हो गई और आजादी के



दीवानों के लिए प्रेरणा बन गई।

नानाराव पार्क में लगी अजीजन बाई की प्रतिमा आज भी उनके बलिदान को याद दिलाती है।

श्री वीर विनायक दामोदर सावरकर ने अजीजन के संबंध में लिखा है -

'अजीजन एक नर्तकी थी, परंतु सिपाहियों को उससे बेहद स्नेह था। अजीजन का प्यार साधारण बाजार में धन के लिए नहीं बिकता था। उनका प्यार पुरस्कार स्वरूप उस व्यक्ति को दिया जाता था जो देश से प्रेम करता था। अजीजन के सुंदर मुख की मुस्कुराहट भी युद्धरत सिपाहियों को प्रेरणा से भर देती थी। उनके मुख पर भृकुटी का तनाव युद्ध से भाग कर आए हुए कायर सिपाहियों को पुनः रणक्षेत्र की ओर भेज देता था।'



राजस्थान में चुनाव की सरगर्मी बढ़ी

सतीश पूनियां पहली बार आमेर से विधायक बने हैं। इसलिए उन्हें उपनेता का पद ही मिल पाया है। चर्चा है कि मीणा समाज के राज्यसभा सदस्य डॉ गटर किरोड़ीलाल मीणा को केंद्र में मंत्री बनाया जा सकता है। राजपूत समाज के गजेंद्रसिंह शेखावत, यादव (अहीर) समाज के डॉक्टर भूपेंद्र यादव, ब्राह्मण समाज के अश्विनी वैष्णव केंद्र सरकार में कैबिनेट मंत्री हैं। वहीं जाट समाज के कैलाश चौधरी, अनुसूचित जाति के अर्जुन राम मेघवाल केंद्र सरकार में राज्य मंत्री हैं। बनिया समाज के ओम बिरला लोकसभा अध्यक्ष हैं। वहीं गुलाबचंद कठारिया को असम का राज्यपाल बनाया गया है। झुंझुनू से सांसद, केंद्र सरकार में उप मंत्री, अजमेर जिले के किशनगढ़ से विधायक व पश्चिम बंगाल के राज्यपाल रहे जगदीप धनखड़ भी उपराष्ट्रपति पद पर हैं।



जिस तरह नगरपालिका चुनाव ने जोरदार दस्तक दी हुई है। ठीक उसी प्रकार राजस्थान विधानसभा के चुनाव होने में बस सात महीने का समय बाकी बचा है। ऐसे में अब सभी राजनीतिक पक्ष विपक्षी दल अपने संगठन को मजबूत बना कर चुनावी व्यूह योजना बनाने में रत हैं। जहां सत्तारूढ़ कांग्रेस पार्टी के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत का मानना है कि उनकी लोक हितकारी योजनाओं से इस बार के चुनाव में हर बार सत्ता बदलने का रिवाज बदल जाएगा। वहीं भाजपा सहित सभी विपक्षी दलों के नेताओं का मानना है कि प्रदेश की जनता गहलोत सरकार को हटाकर राज बदलने को तैयार बैठी है। वोट पड़ेंगे तब राज भी बदल जाएगा। जिसकी शुरुआत आप पार्टी ने कर दी है। बता दें कि आम आदमी पार्टी ने कोटा के नवीन पालीवाल को प्रदेश अध्यक्ष बनाकर अपने संगठन को मजबूत करने की दिशा में काम करना प्रारंभ कर दिया है। केजरीवाल पार्टी ने विधानसभा चुनाव का



मिले थे। हालांकि अब पार्टी के नेता प्रदेश में अगली सरकार बनाने का दावा कर रहे हैं। राजस्थान में मुख्य विपक्षी दल भाजपा भी विधानसभा चुनाव की तैयारी करने में कोई कसर नहीं छोड़ना चाहती। पिछले विधानसभा चुनाव में कांग्रेस ने 1.22 प्रतिशत यानी एक लाख 77 हजार 699 वोट अधिक प्राप्त कर 79 सीट अधिक जीत ली थी। वहीं इतने वोटों के अंतर पर भाजपा की 90 सीटें कम हो गई थी। जिससे भाजपा सत्ता से बाहर हो गई थी। अपनी पिछले विधानसभा चुनावों की कमी को दूर करने के लिए भाजपा अभी से जुट गई है। आगामी विधानसभा चुनाव को देखते हुए भाजपा प्रदेश की राजनीति में सोशल इंजीनियरिंग के फार्मूले पर काम कर रही है। इसके अलावा पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष पद पर ब्राह्मण समाज के चंद्रप्रकाश जोशी (सीपी जोशी) को नियुक्त किया गया है। सीपी जोशी चित्तौड़गढ़ से दूसरी बार लोकसभा सदस्य हैं। जयपुर में कुछ दिनों पूर्व ही ब्राह्मण समाज ने लाखों लागों को एकत्रित कर एक विशाल सम्मेलन का आयोजन किया था। जिसमें ब्राह्मण समाज ने प्रदेश की सभी पार्टियों से उनके समाज को सत्ता में अधिक भागीदारी देने की मांग की थी। उस सम्मेलन के कुछ दिनों बाद ही भाजपा ने सीपी जोशी की प्रदेश अध्यक्ष के रूप में ताजपोशी कर दी। इस बार भाजपा पूरी तरह जाति-धर्म पेच फंसा कर मोर्चे पर डटी है। उसने राजपूत समाज के सातवें बार विधायक बने राजेंद्र राठौड़ को विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष नियुक्त किया है। जबकि प्रदेश अध्यक्ष पद से हटाए गए डॉक्टर सतीश

पूनियां को विधानसभा में उपनेता प्रतिपक्ष बना कर जाट समाज को भी साधने का काम किया है। सतीश पूनियां पहली बार आमेर से विधायक बने हैं। इसलिए उन्हें उपनेता का पद ही मिल पाया है। चर्चा है कि मीणा समाज के राज्यसभा सदस्य डॉक्टर किरोड़ीलाल मीणा को केंद्र में मंत्री बनाया जा सकता है। राजपूत समाज के गजेंद्रसिंह शेखावत, यादव (अहीर) समाज के डॉक्टर भूपेंद्र यादव, ब्राह्मण समाज के अश्विनी वैष्णव केंद्र सरकार में कैबिनेट मंत्री हैं। वहीं जाट समाज के कैलाश चौधरी, अनुसूचित जाति के अर्जुन राम मेघवाल केंद्र सरकार में राज्य मंत्री हैं। बनिया समाज के ओम बिरला लोकसभा अध्यक्ष हैं। वही गुलाबचंद कटारिया को असम का राज्यपाल बनाया गया है। झुंझुनू से सांसद, केंद्र सरकार में उप मंत्री, अजमेर जिले के किशनगढ़ से विधायक व पश्चिम बंगाल के राज्यपाल रहे जगदीप धनखड़ भी उपराष्ट्रपति पद पर हैं। गुर्जर समाज की अलका गुर्जर भाजपा की राष्ट्रीय सचिव हैं। ओमप्रकाश माथुर केंद्रीय चुनाव समिति के सदस्य हैं। अभी तक पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे या उनके किसी समर्थक को भाजपा चुनाव अभियान समिति का संयोजक बनाने की चर्चा चल रही थी। मगर कांग्रेस नेता सचिन पायलट द्वारा उन पर भ्रष्टाचार के आरोप लगाने के बाद पार्टी में उनकी भूमिका कम हो सकती है। इसके अलावा ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन के राष्ट्रीय अध्यक्ष असदुदीन ओरैसी भी प्रदेश में अपनी पार्टी संगठन को मजबूत करने में लगे हुये हैं। राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी का पूरा संगठन पार्टी

अध्यक्ष व नागौर सांसद हनुमान बेनीवाल के इर्द गिर्द ही घूमता रहता है। बेनीवाल ने हाल ही में दिल्ली में अपनी पुत्री का जन्मदिन मनाया था। जिसमें दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल व पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान शामिल हुये थे। अब, कांग्रेस की चुनावी कमान पूरी तरह मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने संभाल रखी है। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा भी संगठन के काम में लगे हैं। उन्हें अध्यक्ष बने तीन साल होने वाले हैं। ऐसे में चर्चा चल रही है कि प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष पद पर किसी अन्य नेता को नियुक्त किया जा सकता है। यदि प्रदेश अध्यक्ष बदला जाता है तो मुख्यमंत्री अशोक गहलोत का पूरा प्रयास रहेगा कि उनके समर्थक महेश जोशी, महेंद्र चौधरी, नरेंद्र बुडानिया, लालचंद कटारिया, रघु शर्मा में से किसी को अध्यक्ष बनाया जाए ताकि चुनाव में उनके मन मुताबिक टिकटों का वितरण हो सके। बता दें कि कांग्रेस के 400 में से 367 लोक अध्यक्षों की तो नियुक्तियां हो चुकी हैं। मगर अधिकांश जिला अध्यक्षों के पद लंबे समय से खाली पड़े हैं। इस कारण नीचे के स्तर पर संगठन पूरी तरह सक्रिय नहीं हो पा रहा है। हालांकि प्रदेश अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा ने हाल ही में 3 विधायकों- अमित चाचान, इंद्राज सिंह गुर्जर, प्रशांत बैरवा सहित कुल 8 लोगों को पार्टी का प्रवक्ता नियुक्त किया है। वहीं सात लोगों को मीडिया पैनलिस्ट और तीन लोगों को मीडिया कोऑर्डिनेटर बनाया गया है। तदुपरांत, कांग्रेस में 25 सितंबर 2022 की घटना में दोषी नेताओं पर अभी तक कार्यवाही नहीं होने से भी सचिन

पायलट खासे नाराज बताये जा रहे हैं। सचिन पायलट ने जयपुर में एक दिन का उपवास रखकर अपनी ही सरकार को कटघरे में खड़ा कर दिया है। पायलट ने मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे पर मिलीभगत का खेल खेलने का आरोप लगाया है। पायलट के अनशन को रोकने के लिए कांग्रेस आलाकमान ने बहुत दबाव बनाया था मगर पायलट अनशन करके ही माने। हालांकि कांग्रेस प्रभारी सुखजिंदर सिंह रंधारा ने पायलट के अनशन को पार्टी विरोधी गतिविधि घोषित कर दिया था। मगर पायलट के खिलाफ अभी तक अनुशासनात्मक कार्यवाही करने की किसी ने हिम्मत नहीं दिखाई है। अंदरखाने पायलट को हनुमान बेनीगल सहित आम आदमी पार्टी का भी समर्थन मिल रहा है। कांग्रेस आलाकमान को पता है कि यदि पायलट के खिलाफ किसी तरह की अनुशासनात्मक कार्यवाही करेंगे तो राजस्थान की स्थिति भी पंजाब की तरह हो सकती है। कुल मिलाकर चुनावी दौर में कांग्रेस पार्टी आपसी गुटबाजी की शिकार हो गई है जिसका खामियाजा उन्हें अगले विधानसभा चुनाव में उठाना पड़ेगा। परिणामस्वरूप कांग्रेस ने पिछले साल उदयपुर में चिंतन किया, उसके बाद भारत जोड़े यात्रा निकाली और इस साल रायपुर में महा अधिवेशन किया। इस दौरान कांग्रेस नेताओं ने पार्टी में आमूल चूल सुधार को लेकर बड़ी-बड़ी बातें कहीं, लेकिन नतीजा शून्य रहा। कांग्रेस नेताओं में उत्तर से लेकर दक्षिण तक और पूरब से लेकर पश्चिम तक पार्टी छोड़ने की जो होड़ लगी है वह दर्शा रही है कि आजादी

की लड़ाई लड़ने वाली यह पार्टी आजादी पायलट को दरकिनार कर गहलौत को सीएम बना देना, कांग्रेस की युवा विरोधी विचारधारा दर्शाता है। यह सचिन पायलट के बयानों से कोई भी महसूस किया जा सकता है। वैसे बात सिर्फ राजस्थान तक ही सीमित नहीं है, जिस तरह छत्तीसगढ़ में मुख्यमंत्री भूपेश बघेल और कैबिनेट मंत्री टीएस सिंहदेव के बीच जंग छिड़ी हुई है वह भी चुनावी वर्ष में कांग्रेस के लिए बड़ा सिरदर्द साबित हो सकती है। यही नहीं, कर्नाटक में अपने

को सत्ता के करीब देख रही कांग्रेस में मुख्यमंत्री पद हासिल करने के लिए पूर्व मुख्यमंत्री सिद्धारमैया और प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष डीके शिवकुमार के बीच की बींजंग भी ऐन चुनावों के समय जगजाहिर हो गयी है जिसे कांग्रेस अब तक दबाती आ रही थी। राहुल गांधी और मलिलकार्जुन खरगे को समझना होगा कि नेतृत्व की यह शिथिलता एक बड़ी विफलता को आमंत्रण देकर कांग्रेस को पूरी तरह ले दूबो देगी और ठीकरा बीजेपी और निर्दोष जनता पर फोड़ा जाता रहेगा।

कविता



हरेन्द्र सिंह
चंडीगढ़।

कविता से ही जीवन है, औं कविता से उद्धार है,
जबतक कविता है जीवन में, भरा पुरा संसार है।
दुःख निवारण कविता करती, हमें सिखाती प्यार है,

जीवन में खुशबू ला देती, तोड़ देती दीवार है।
मन की गहरी बातों को, शब्दों में पिरोती कविता है,

आपस में संवाद बढ़ाती, दिल को छूती कविता है।
आ जाये जब गांव, शहर में, रहने कोई कवि, शायर,

हो जाती मशहुर वो बस्ती, यही तो इसकी खुशबू है।
पंत, निराला, दिनकर, मीरा, सुर, कबीर औं तुलसी है,

नीरज, भिखारी ठाकुर, महेनदर मिसिर में कविता बसती है।

कविता है तो शांति है, औं कविता से ही जीवन है,
दिल में समा जाती है कविता, आपसे सुनकर महफिल में।

रहे सदा गुलजार ए महफिल, जिसने इसे सजाया है,
प्रेमभाव, सद्बाव से भरकर, रंग गुलाल लगाया है।

डॉ भीमराव अंबेडकर-एक समाज सुधारक, दलितोत्थान के महानायक

कृष्णा जी केशव अंबेडकर डॉ भीमराव के शिक्षक थे। वे जाति से ब्रह्मण थे। भीमराव अपने शिक्षक के व्यक्तित्व से इतने प्रभावित थे कि उन्होंने अपना उपनाम(सरनेम) 'सकपाल' हटाकर अंबेडकर उपनाम जोड़ लिया। इसे जन्म के आधार पर मिले जातिबोधक उपनाम के विरुद्ध प्रतिरोध के रूप में देखा जा सकता है। उनका यह कार्य अपने गुरु के प्रति अगाध प्रेम और श्रद्धा को दर्शाता है। बड़ौदा राज के सयाजी राव गायकवाड़ के आर्थिक सहयोग से ये भारत तथा विदेशों में जाकर उच्च शिक्षा को प्राप्त किये।



डॉ सुजीत वर्मा
पटना।



'कुछ लोग सोचते हैं कि धर्म समाज के लिए अनिवार्य नहीं है, मैं इस दृष्टिकोण को नहीं मानता। मैं धर्म की नींव को समाज के जीवन तथा व्यवहार के लिए अनिवार्य मानता हूँ।'- डॉ अंबेडकर।

अपने समय की चुनौतियों से लड़ते हुए सफलता के मुकाम पर पहुंचना डॉ भीमराव अंबेडकर का जीवन अनेक लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। वे जीवन भर सामाजिक रूढ़ियों, ढोंग, पाखंड, कर्मकांड तथा कुरीतियों से लड़ते रहे। 1930 में All India Depressed classes Association की स्थापना इस दिशा में मील का पत्थर है। व्यक्तिगत रूप से वे करुणा, प्रेम, ममता, दया, आदि मानवीय गुणों से युक्त थे, किन्तु अंग्रेजी शासन में दलितों पर हो रहे अत्याचार से वे बहुत क्षुब्धि थे। स्वयं भी अनेक बार अपमानजनक स्थितियों का सामना किये। भारतीय समाज का ताना-बाना इस मामले में विचारणीय है कि इसमें

आसानी से भेदभाव उत्पन्न किया जा सकता है। अंग्रेजों ने अपने शासन को सुदृढ़ करने के लिए भारत के सामाजिक स्तरीकरण का खूब दुरुपयोग किया। विदित हो कि महायुद्धों का समय भारत के लिए एक परिवर्तन बिंदू था। द्वितीय विश्व युद्ध में ब्रिटिश सरकार की पराजय, लार्ड माउंटबेटन योजना के तहत भारत को पूर्ण स्वराज देने की योजना, भारत के लिए संविधान निर्मात्री सभा की प्रस्तावना, सांप्रदायिक दंगे और जातिय संघर्ष के संक्रामक समय तक डॉ अंबेडकर एक राष्ट्रीय नेता के रूप में शीर्ष पर पहुंच गए थे। डॉ अंबेडकर का प्रारंभिक जीवन जितना संघर्षों से भरा हुआ था, उत्तरार्द्ध भी कम चुनौतीपूर्ण नहीं था।

कृष्णा जी केशव अंबेडकर डॉ भीमराव के शिक्षक थे। वे जाति से ब्रह्मण थे। भीमराव अपने शिक्षक के व्यक्तित्व से इतने प्रभावित थे कि उन्होंने अपना

उपनाम(सरनेम) 'सकपाल' हटाकर अंबेडकर उपनाम जोड़ लिया। इसे जन्म के आधार पर मिले जातिबोधक उपनाम के विरुद्ध प्रतिरोध के रूप में देखा जा सकता है। उनका यह कार्य अपने गुरु के प्रति अगाध प्रेम और श्रद्धा को दर्शाता है। बड़ोदा राज के सयाजी राव गायकवाड़ के आर्थिक सहयोग से ये भारत तथा विदेशों में जाकर उच्च शिक्षा को प्राप्त किये। इस तरह डॉ अंबेडकर के जीवन में सफलता का प्रारंभिक मार्ग प्रशस्त हुआ और फिर तमाम विरोधों और अंतर्विरोधों का समाना करते हुए दलितों के नायक बने। समाज सुधार, अछूतोद्धार, शिक्षा, आर्थिक सुधार, महिला उत्थान, हिन्दू मुस्लिम एकता, सांप्रदायिक सङ्घाव और स्वतंत्रता आंदोलन में उनके योगदान को रेखांकित किया जाता रहा है। वे एक लेखक थे। उनकी अनेक पुस्तकों में प्रमुख हैं -Pakistan or the partition of India, Who were the shudras, Annihilation of caste, Waiting for a Visa आदि। इसके अतिरिक्त विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में उनके प्रकाशित आलेख, भाषण भी बेहद महत्वपूर्ण हैं। आज देश में सांप्रदायिक समस्या बहुत गंभीर रूप ले चुकी है। इस संदर्भ में सामाजिक सौहार्द के लिए उनकी किताब Pakistan or the partition of India बहुत ही उल्लेखनीय है। वे बहुमूखी प्रतिभा से संपन्न व्यक्ति थे। संविधान निर्माण में भी उनका योगदान अविस्मरणीय है। संविधान सभा में पूरे देश से 289 विशिष्ट लोगों को शामिल किया गया जो विभिन्न रियासतों, रजवाड़ों, वर्गों, समुदायों और जनता के प्रतिनिधि थे। संविधान सभा ने जिसके अध्यक्ष डॉ सचिदानन्द सिन्हा (अल्पकालिक) एवं तत्पश्चात डॉ राजेन्द्र प्रसाद (स्थाई) स्वतंत्र भारत के संविधान निर्माण लिए कुल 22 समितियों एवं का

गठन किया। जिनमें प्रमुख हैं -1.ad hoc committee on the national flag - Dr Rajendra Prasad 2. Advisory committee on fundamental rights - Vallabhbhai Patel 3.Committee on the function of the constituent assembly - G.V.Mavalankar 4. Committees on minorities and tribal areas - Vallavbhai Patel 5. Committee on the rules of procedure- Dr Rajendra Prasad 6. Special committee to examine the draft consultation (संविधान के प्रारूप पर विशेष सलाह समिति)- Alladi Krishna Swami Ayyar 7.Provincial Constitution Committee - Vallabhbhai Patel 8. Draft committee - Dr Bhimrao Ambedkar 9.Excluded and partially excluded areas - A.V.Thakkar 10.Finance and staff committee - Dr Rajendra Prasad 11. Fundamental and staff committee -Dr Rajendra Prasad 12.Fundamental rights sub committee -J.B..kriplani 13.House Committee - Pattabhi Sitaramaiyya 14. Minorities sub committee - H.C.Mukharjee 15. North East Frontier Areas and Assam - Gopinath Bardoloi 16. Order of Business committee - K. M. Munshi 17.States committee - J.L.Nehru 18.Steering Committee - Dr Rajendra Prasad 19. Union constitution committee - J.L.Nehru 20. Union powers committee -J.L.Nehru. संविधान सभा के स्थाई अध्यक्ष डॉ राजेन्द्र प्रसाद की देख-रेख में संविधान का निर्माण और

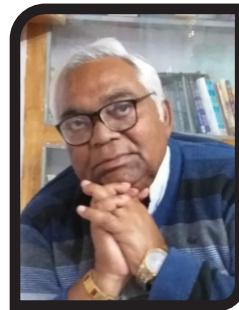
सफल संचालन किया गया। डॉ अंबेडकर प्रारूप समिति के अध्यक्ष बनाए गए। इस समिति के सदस्यों ने ही भारतीय संविधान का निर्माण किया। प्रारूप समिति के सदस्य के.एम. मुंशी, अल्लादी कृष्णास्वामी अच्यर, मो. सादुल्ला, एन. गोपालस्वामी आयंगर, बी. एल. मीटर एवं डी. पी. खेतान थे। सदस्यों ने अमेरिका, इंग्लैंड, फ्रांस, जर्मनी, स्वीटजरलैंड, आयरलैंड, कनाडा, आस्ट्रेलिया, जापान, दक्षिण अफ्रीका आदि विश्व के विभिन्न संविधानों का अध्ययन किया। वहां से वे सभी भारत के समाज, संस्कृति, रीति रिवाज, विधि विधान, पर्व त्यौहार, परंपराओं के अनुकूल भारतीयों के लिए श्रेष्ठ प्रावधानों को संविधान के लिए संकलित किये। साथ ही ब्रिटिश कालीन भारत शासन अधिनियम 1858,1919, 1935, 1942, 1947 आदि प्रावधानों का अध्ययन किया और संविधान लेखन का कार्य प्रारंभ हुआ। बहुविध संस्कृति वाले राष्ट्र के लिए एक आदर्श संविधान बनाना कोई आसान काम नहीं था। संविधान सभा को अनेक जटिल स्थितियों से गुजरना पड़ा। किन्तु सभी सदस्यों के निरंतर प्रयास से भारत का संविधान 2 वर्ष, 11 माह और 18 दिन में बनकर तैयार हो गया। जिसके लिए 114 बैठकों में संविधान के स्वरूप, प्रारूप आदि पर निरंतर विचार विमर्श, बहस, आपत्ति, सुझाव के बीच समन्वय और तारतम्य के बाद इसे अंतिम रूप दिया गया। नंदलाल बोस के निर्देशन में शांतिनिकेतन के कलाकारों ने इसके पन्जों पर सैंधव सभ्यता, वैदिक सभ्यता, महाभारत, रामायण एवं महात्मा बुद्ध के चित्र बनाए गए। तत्पश्चात डॉ अंबेडकर ने अपने सभी सदस्यों के हस्ताक्षर के साथ इसे संविधान सभा के स्थाई अध्यक्ष डॉ राजेन्द्र प्रसाद को सौंप दिया। अंततः डॉ

राजेन्द्र प्रसाद के हस्ताक्षर से 26 नवंबर 1949 को स्वतंत्र भारत का संविधान लागू हुआ। डॉ अंबेडकर स्वतंत्र भारत के प्रथम विधि एवं न्याय मंत्री बने। 1990 में इन्हें भारत रत्न सम्मान मिला। इनका जीवन केवल वंचित वर्ग ही नहीं बल्कि समाज के सभी वर्गों के लिए आदर्श है। आज सभी के लिए यह जरूरी है कि हम उन्हें केवल जन्मदिन मनाने के लिए हीं याद नहीं करें बल्कि जाति और धर्म से ऊपर उठकर मानवता के हित में अपना योगदान दें। डॉ अंबेडकर जातितांत्रिक शासन व्यवस्था के विरुद्ध एक जनतांत्रिक संविधान के पक्ष में सदैव खड़े रहे। बिहार में आज जातिय जनगणना जैसी योजना पर सरकार को पुनः एकबार विचार करने की जरूरत है। जिस जातिय विडंबना, सामाजिक न्याय और समता के लिए महापुरुष डॉ अंबेडकर जीवन भर लड़ते रहे, आज विभिन्न जातियों की जनगणना समाज के लिए कितना लोककल्याणकारी हो सकता है, यह तो आनेवाला समय ही बताएगा ? प्राचीन काल से ही जाति व्यवस्था एक सामाजिक विडंबना है। उस समय भी जाति का निर्धारण राजतांत्रिक व्यवस्था द्वारा किया जाता था। आज लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था में जाति का प्रमाण पत्र सरकारी कार्यालयों द्वारा निर्गत किया जाता है। डॉ अंबेडकर अरक्षण को भी लंबे समय तक बनाए रखने के पक्ष में नहीं थे। आज जरूरी है सभी के लिए रोजगार और आर्थिक स्वावलंबन हेतु प्रयास हो। उनका मानना था 'जहां नैतिकता और अर्थशास्त्र के बीच संघर्ष होता है वहां जीत आर्थशास्त्र की होती है।' वे आत्मस्वाभिमान वाले व्यक्ति थे। अपनी योग्यता के बलबूते वे सफलता के शिखर को छूए और सभी के लिए आदर्श बन गये। आज जरूरत है कि उनके बताए मार्ग पर हम सभी चले, न कि तुष्टिकरण और

अवसरवाद के तरे पर राजनीति की रोटियां सेके। तभी सदियों से समाज के मुख्य धारा से कटे हमारे वंचित वर्ग का उत्थान संभव है। समाजिक भेदभाव को समाप्त करने के लिए समान नागरिक संहिता (NRC) शीघ्र लागू करने की आवश्यकता है। भारत के संविधान में अनुच्छेद 14,15,16 एवं 17 में वर्णित मौलिक अधिकार के तहत समानता का अधिकार, नियोजन में अवसर की समानता तथा अस्पृश्यता का निवारण तथा एक समरस और कल्याणकारी

समाज का निर्माण ही डॉ अंबेडकर का सपना था। वस्तुत डॉ अंबेडकर का जीवन संघर्ष, उनका आदर्श और विशेषकर समाज सुधार के लिए उनका योगदान अतुलनीय और अविस्मरणीय है। अंततः संविधान निर्माण के लिए संविधान सभा के अध्यक्ष डॉ सच्चिदानंद सिन्हा और डॉ राजेन्द्र प्रसाद तथा समिति के 289 सभी सदस्यों के सम्मिलित प्रयास से हम भारतीयों को अपना संविधान मिला।

मुत्तक



डॉ छग्न लाल गर्ग विज्ञ
सिरोही, राजस्थान

प्राण लीला कोरको में, दीप्ति का आकाश हो !

सृष्टि की नव चेतना में, नेह का विश्वास हो!

गंध ढूबा प्राण अब क्यों, राग के संसार की !

पाश लिपटा मोह में मधु, प्राण का उल्लास हो !!

विश्व छाया राग क्रन्दन , राज उर के खोलती !

सांस सीमा और गहरी, मुक्ति मानस तोलती!

कौन मेरी मधुरता मे , वेदना रस छोड़ता !

मूक पागल प्राण में क्यों, नागरानी डोलती!!

नींद थी मेरी अटल जब , रश्मि बनकर निखरते !

स्वज के हर अंश में तुम , मेघ बनकर बरसते!

अनुसरण निश्वास मेरे, चूमते हो छाँव बन !

वेदना की गूँज बनकर, उर गगन में गरजते!!

क्या राजनीति में नेताओं और नौकरशाहों का भ्रष्ट होना स्वाभाविक है?

हम कई राजनीतिक नेताओं की परिस्थिती की कल्पना कर सकते हैं जो सत्ता की लालसा करते हैं और पैसा लूटते हैं, और कुछ मामलों में हमारे देश का नुकसान करने के लिए विदेशी धन प्राप्त करते हैं। यहां तक कि ये भ्रष्ट नेता यह भी मानते हैं कि उन्हें भ्रष्टाचार करने और भावनात्मक कार्ड खेलकर जनता को धोखा देने का स्वाभाविक अधिकार है। केंद्र सरकार की एजेंसियां सीबीआई, ईडी और अन्य एजेंसियां जब मोदी सरकार के उचित समर्थन और कामकाज में दखलांदाजी नहीं करने के कारण इन भ्रष्टाचारियों के खिलाफ काम करती हैं तो वे पीएम मोदी को तानाशाह करार देती हैं और भ्रष्टाचार के खिलाफ कार्रवाई को लोकतंत्र विरोधी कहती हैं।



पंकज जगन्नाथ जयस्वाल
महाराष्ट्र



यहां में उन तथाकथित भ्रष्ट नेताओं और नौकरशाहों की बात कर रहा हूं जिनके कारण हमारे देश का हर महकमे शक के घेरे में देखा जाता है। यह

भ्रष्टाचार, हमारी राजनीतिक, सरकारी और सामाजिक व्यवस्थाओं में गहराई तक समाया हुआ है। कई लोगों ने इसे स्वार्थी लाभ के लिए जीवन के एक तरीके के रूप में स्वीकार कर लिया है, यह भूल कर कि भ्रष्टाचार के रूप में जाना-जाने वाला यह अभिशाप मध्यम और निम्न वर्ग के लोगों को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक रूप से नष्ट कर रहा है। मुगल आक्रमण के समय से ही हम इस खतरे के शिकार होते रहे हैं। जब केंद्र सरकार की एजेंसियां सत्ता का इस्तेमाल कर जनता

का पैसा लूटने वाले इन राजनीतिक नेताओं के खिलाफ कानून के मुताबिक कार्रवाई करती हैं तो कई राजनीतिक दलों के समर्थक या नेता, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को गाली देने लगते हैं।

सबसे बुरी बात यह है कि मुख्यधारा के अधिकांश मीडिया और सोशल मीडिया भ्रष्ट नेता का पक्ष लेने के लिए भावनात्मक और झूठी कहानियां गढ़ते हैं और आम जनता के मन में पीएम मोदी की नकारात्मक छवि बनाते हैं। अलग विचारधारा रखने में कुछ भी गलत नहीं है, लेकिन किसी को भी किसी भी पार्टी के भ्रष्ट नेता, सरकारी कर्मचारी या भ्रष्टाचार में शामिल किसी भी व्यक्ति को केवल पीएम की विचारधारा का विरोध करने के लिए समर्थन नहीं करना चाहिए।

जब हम ऐसे भ्रष्ट नेताओं का समर्थन करते हैं क्योंकि हमने अतीत में कुछ रुपये या कुछ अनुग्रह प्राप्त किया है या भविष्य में ऐसे नेता से सहायता प्राप्त करेंगे, तो हम राजनीतिक और सरकारी नौकरशाही व्यवस्था में गहरे बैठे भ्रष्टाचार के मूल कारण में योगदान दे रहे होते हैं।

शराब आबकारी नीति घोटाले में नामित मनीष सिसोदिया के हालिया मामले में उनके नेता अरविंद केजरीवाल ने उनका खुलकर समर्थन किया और मांग की कि उन्हें 'भारत रत्न' से सम्मानित किया जाए। हमें उच्च न्यायालय द्वारा की गई टिप्पणियों को समझना होगा, साजिश के 'प्रथम दृष्टया वास्तुकार' है मनीष सिसोदिया, इस टिप्पणी को गहराई से समझने की जरूरत है।

हम कई राजनीतिक नेताओं की परिस्थिती की कल्पना कर सकते हैं जो सत्ता की लालसा करते हैं और पैसा लूटते हैं, और कुछ मामलों में हमारे देश का नुकसान करने के लिए विदेशी धन प्राप्त करते हैं। यहां तक कि ये भ्रष्ट नेता यह भी मानते हैं कि उन्हें भ्रष्टाचार करने और भावनात्मक कार्ड खेलकर जनता को धोखा देने का स्वाभाविक अधिकार है। केंद्र सरकार की एजेंसियां सीबीआई, ईडी और अन्य एजेंसियां जब मोदी सरकार के उचित समर्थन और कामकाज में दखलअंदाजी नहीं करने के कारण इन भ्रष्टाचारियों के खिलाफ काम करती हैं तो वे पीएम मोदी को तानाशाह करार देती हैं और भ्रष्टाचार के खिलाफ कार्रवाई को लोकतंत्र विरोधी कहती हैं। भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई लोकतंत्र विरोधी कैसे हो

सकती है?

आइये! जानते हैं, मोदी सरकार भ्रष्टाचार और भ्रष्ट व्यवस्था से कैसे लड़ रही है?

3 अप्रैल, 2023 को, प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने नई दिल्ली में विज्ञान भवन में केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) की हीरक जयंती समारोह का उद्घाटन किया। प्रधान मंत्री ने जोर देकर कहा कि सीबीआई की प्राथमिक जिम्मेदारी देश को भ्रष्टाचार से मुक्त करना है। उन्होंने कहा, 'भ्रष्टाचार कोई सामान्य अपराध नहीं है, यह गरीबों के अधिकारों को छीन लेता है, यह अन्य अपराधों को जन्म देता है, और यह न्याय और लोकतंत्र के लिए सबसे बड़ी बाधा है।' उनके अनुसार, सरकारी तंत्र में भ्रष्टाचार लोकतंत्र को कमजोर करता है, और सबसे पहले शिकार युवाओं के सपने होते हैं, क्योंकि ऐसी परिस्थितियों में एक निश्चित प्रकार का परिस्थितिकी तंत्र फलता-फूलता है, प्रतिभाओं की हत्या करता है। भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद और एक वंशवादी व्यवस्था को बढ़ावा देता है जो राष्ट्र को कमजोर करता है और विकास को रोकता है।

प्रधानमंत्री ने याद किया कि, दुर्भाग्य से, भारत को आजादी के समय भ्रष्टाचार की विरासत विरासत में मिली थी और उन्होंने इस तथ्य पर दुख व्यक्त किया कि इसे खत्म करने के बजाय, कुछ लोग इस बीमारी को बढ़ावा दे रहे हैं। ठीक एक दशक पहले, उन्होंने घोटालों के दृश्य और प्रचलित भावना को याद किया। उनके अनुसार, इस स्थिति के

परिणामस्वरूप सिस्टम का विनाश हुआ और नीतिगत पक्षाधात के माहौल ने विकास को रोक दिया। उन्होंने भगोड़ा आर्थिक अपराधी अधिनियम का उल्लेख किया, जिसके परिणामस्वरूप अब तक भगोड़े अपराधियों की 20,000 करोड़ रुपये मूल्य की संपत्तियों को जब्त किया गया है।

प्रधानमंत्री ने सरकार के खजाने को लूटने के दशकों पुराने तरीकों में से एक पर प्रकाश डालते हुए कहा कि भ्रष्टाचारी सरकारी योजनाओं के लाभार्थियों को भेजी जाने वाली सहायता को लूटने की हद तक चले गये। प्रधान मंत्री के अनुसार, मूल लाभार्थी हर बार ठंगा हुआ। महसूस करता है, चाहे वह राशन हो, घर हो, छात्रवृत्ति हो, पेंशन हो या कोई अन्य सरकारी योजना हो। श्री मोदी ने कहा, 'एक प्रधानमंत्री ने एक बार कहा था कि गरीबों को भेजे गए प्रत्येक रुपये में से केवल 15 पैसे ही उन तक पहुंचते हैं।' उदाहरण के रूप में डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर का उपयोग करते हुए, प्रधान मंत्री ने कहा कि सरकार ने अब तक 27 लाख करोड़ गरीबों को हस्तांतरित किए हैं, और एक रुपये 15 पैसे के सिद्धांत के आधार पर, 16 लाख करोड़ पहले ही गायब हो गए होते। प्रधान मंत्री ने कहा कि जन धन, आधार और मोबाइल की त्रिमूर्ति के साथ, लाभार्थियों को उनका पूरा हक मिल रहा है, और 8 करोड़ से अधिक फर्जी लाभार्थियों को सिस्टम से हटा दिया गया है। प्रधानमंत्री ने कहा, 'डीबीटी ने देश को करीब 2.25 लाख करोड़ रुपये गलत हाथों में जाने से बचाया है।'

2014 से 2022 तक, ईडी ने 3,010 छापे मारे, 2004 और 2014 के बीच 112 खोजों से लगभग 27 गुना वृद्धि हुई। ईडी के पास 31 मार्च 2022 तक 1 लाख करोड़ रुपये से अधिक की संपत्ति की हिरासत है, जो जांच के तहत मामलों से जुड़ी हैं। इनमें से 57,000 करोड़ रुपये बैंक धोखाधड़ी और पॉंजी स्कीम से जुड़े हैं।

आइये! यह भी जानते हैं कि भ्रष्टाचार ने सामाजिक आर्थिक रूप से हममें से प्रत्येक को कैसे नुकसान पहुँचाया है?

2005 के ट्रांसपरेंसी इंटरनेशनल सर्वेक्षण के अनुसार, 62 इंडियनों से अधिक भारतीयों ने अपने जीवन में किसी समय सरकारी अधिकारी को रिश्वत दी थी। 2008 में एक अन्य रिपोर्ट में पाया गया कि लगभग 50 भारतीयों को सार्वजनिक कार्यालयों से सेवाएं प्राप्त करने के लिए रिश्वत देने या संपर्कों का उपयोग करने का प्रत्यक्ष अनुभव था; हालांकि, 2019 में, उनके भ्रष्टाचार धारणा सूचकांक ने देश को 180 में से 80वां स्थान दिया, जो भ्रष्टाचार के प्रति लोगों की धारणा में लगातार सुधार को दर्शाता है।

गाशिंगटन स्थित ग्लोबल फाइनेंशियल इंटीग्रिटी की नवंबर 2010 की रिपोर्ट के अनुसार, 1948 से शुरू होने वाली 60 साल की अवधि में, भारत ने अवैध वित्तीय प्रवाह में 213 बिलियन अमेरिकी डॉलर का नुकसान किया; मुद्रास्फीति के लिए समायोजित, यह 2010 में ₹462 बिलियन या लगभग ₹50 बिलियन प्रति वर्ष (₹ प्रति व्यक्ति प्रति

वर्ष) होने का अनुमान है। रिपोर्ट के अनुसार, 2008 के अंत में भारत की भूमिगत अर्थव्यवस्था का मूल्य लगभग 640 बिलियन अमेरिकी डॉलर था, या देश के सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 50%।

प्रोफेसर बिबेक देबराय और लवीश भंडारी ने अपनी पुस्तक करप्शन इन इंडिया: द डीएनए एंड आरएनए में दावा किया है कि भारत में सार्वजनिक अधिकारी भ्रष्टाचार के माध्यम से ₹921 बिलियन (यूएस ₹ 12 बिलियन), या सकल घरेलू उत्पाद का 5% तक रिश्वत के रूप में अपनी जेब भरते हैं। पुस्तक के अनुसार, अधिकांश रिश्वतखोरी सरकार द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाओं, परिवहन और अचल संपत्ति में होती है।

रिश्वतखोरी और भ्रष्टाचार व्यापक हैं, लेकिन कुछ क्षेत्र दूसरों की तुलना में अधिक प्रभावित हैं। 2013 ईवाई (अन्सर्ट एंड यंग) के एक अध्ययन के अनुसार, बुनियादी ढांचे और रियल एस्टेट, धातु और खनन, एयरोस्पेस और रक्षा, और बिजली और उपयोगिताओं में भ्रष्टाचार की सबसे अधिक चपेट में आने वाले उद्योग हैं। विभिन्न प्रकार के विशिष्ट कारक एक उद्योग को दूसरों की तुलना में रिश्वतखोरी और भ्रष्टाचार के जोखिमों के प्रति अधिक संवेदनशील बनाते हैं। बिचौलियों का उपयोग, उच्च-मूल्य वाले अनुबंध, संपर्क गतिविधियां, और अन्य कारक कमजोर क्षेत्रों में भ्रष्ट प्रथाओं की गहराई, मात्रा और आवृत्ति में योगदान करते हैं।

एशिया की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं

के 2009 के एक सर्वेक्षण के अनुसार, भारतीय नौकरशाही न केवल सिंगापुर, हांगकांग, थाईलैंड, दक्षिण कोरिया, जापान, मलेशिया, ताइवान, वियतनाम, चीन, फिलीपींस और इंडोनेशिया में सबसे कम कुशल है, बल्कि भारतीय सरकारी अधिकारियों के साथ काम करना एक 'धीमी और दर्दनाक' प्रक्रिया है।

संभावित नवप्रवर्तक निश्चित नहीं हो सकते हैं कि उनके आविष्कार को पेटेंट द्वारा संरक्षित किया जाएगा और उन लोगों द्वारा कॉपी नहीं किया जाएगा जो जानते हैं कि वे अधिकारियों को रिश्वत देकर इससे बच सकते हैं क्योंकि भ्रष्ट अर्थव्यवस्थाओं की कानूनी व्यवस्था में बहुत कम भरोसा है जिसमें कानूनी निर्णयों में हेराफेरी की जा सकती है। नतीजतन, नवाचार करने के लिए एक निरुत्साहित है, और नतीजतन, उभरते हुए देश आम तौर पर प्रौद्योगिकी आयातक होते हैं क्योंकि ऐसी तकनीक अपने स्वयं के समाजों के भीतर नहीं बनाई जाती है। 2014 के बाद, मोदी सरकार की नीति और भ्रष्टाचार पर नकेल करने से स्टार्ट-अप, यूनिकॉर्न, अनुसंधान और पेटेंट में भारी वृद्धि हुई है।

भ्रष्टाचार विदेशी निवेश के लिए बाधाओं में से एक है। निष्पक्ष और प्रतिस्पर्धी कारोबारी माहौल की तलाश करने वाले निवेशक उच्च स्तर के भ्रष्टाचार वाले देशों में निवेश करने से बचते हैं। जबकि उभरते बाजारों में निवेश लोकप्रिय बना हुआ है, निवेशक उच्च स्तर के भ्रष्टाचार वाले देशों में अपने पैसे को जोखिम में डालने से स्वाभाविक

रूप से हिचकिचाते हैं। अध्ययनों के अनुसार, देश के भ्रष्टाचार के स्तर और उसके बारोबारी माहौल वही प्रतिस्पर्धात्मकता के उपायों के बीच सीधा संबंध है। भ्रष्टाचार व्यापार पर एक अक्षम कर के रूप में कार्य करता है, अंततः उत्पादन लागत बढ़ाता है और निवेश लाभप्रदता कम करता है। भ्रष्टाचार संसाधन की गुणवत्ता को कम करके निवेश उत्पादकता को भी कम कर सकता है। भ्रष्टाचार, उदाहरण के लिए, स्वास्थ्य और शिक्षा सेवाओं की गुणवत्ता और मात्रा को कम करके देश की मानव पूँजी को कम कर देता है। भ्रष्टाचार के खिलाफ मोदी सरकार की लड़ाई और काम को देखते हुए हर साल विदेशी और घरेलू निवेश बढ़ रहा है, जिससे रोजगार और आर्थिक स्थिति मजबूत हो रही है।

यद्यपि भ्रष्टाचार केंद्र सरकार के स्तर पर समाप्त हो गया है। लेकिन राज्य और स्थानीय सरकार के नेताओं और प्रशासकों को अभी भी गांव, शहर और राज्य स्तर पर कार्रवाई करनी चाहिए। यह तभी संभव होगा जब लोग सभी स्तरों पर भ्रष्टाचार को समाप्त करने के लिए प्रतिबद्ध हों। केवल केंद्र की मोदी सरकार ही सभी स्तरों पर भ्रष्टाचार को समाप्त नहीं कर सकती है, इस तथ्य के बावजूद कि वे भ्रष्टाचार से निपटने के लिए प्रत्येक प्रणाली में विभिन्न तरीकों को लागू कर रहे हैं। हालाँकि, भ्रष्टाचार लोगों की भागीदारी और गंभीरता के विपरीत आनुपातिक है।



विज्ञापन शुल्क निम्न प्रकार से हैं

- कलर पेज फूल पेज ₹ 20000 मात्र
- हाफ पेज ₹10000 मात्र
- ब्लैक एंड व्हाइट फूल पेज ₹12000 मात्र
- हाफ पेज ₹6000 मात्र
- रंगीन पेज पर छोटा विज्ञापन ₹2000 मात्र
- ब्लैक एंड व्हाइट पर छोटा विज्ञापन ₹1000 मात्र

विज्ञापन के लिए शुल्क निम्न बैंक खाता में जमा करा सकते हैं:

Account Name: **Sach Ki Dastak**
A/c. No. : **13751652000024**
IFSC Code : **PUNB0137510**
Bank: **Punjab National Bank**

Gpay-

(1) 9045610000
(2) 9621503924

बेबसी

'बेटी, यही मेरा घर-संसार है।' कहकर कमला जी ने अन्दर आने का आग्रह किया। उनकी सहेलियां भी अच्छे घर की सुलझी हुई महिलाएं लग रही थीं।

सभी ने मुझसे ढेरों बातें की। लग रहा था इनसे मिलने कोई भी नहीं आता है। ये लोग अपनत्व और प्रेम के लिए आतुर हैं। मेरी आंखों में आंसू आ गए।

कमला जी ने कहा कि 'अब तुम हमसे मिलने आओगी न! हमें भी बाहर जाना और लोगों से बातें करने का बहुत मन होता है।'



'सुनो! सुनो न, कृपया गाड़ी रोको।' एक वृद्ध महिला ने मुझे आवाज़ दी। जैसे ही मैंने गाड़ी रोकी। बात करने का मन था मुझे। इसलिए सुबह से निकल गई थी कि शायद कोई मिल जाए तुम जैसी।'

'मैं कमला हूँ।'

जी, मैं कविता हूँ।

मैंने पूछा, 'हाँ, आंटी जी आपको कहाँ जाना है?' मैं।'

'मुझे आंटी मत कहो, मैं कमला हूँ। आंटी कहने से उम्र बड़ी लगने लगती है।'

'हा हा हा..., यह सही कहा कमला जी आपने।' फिर थोड़ा रुककर मैंने फिर पूछा

'कहाँ तक जाना है कमला जी?' मैं।'

'कविता, तुम बस चलती ही जाओ। आज बहुत दिनों बाद अपनत्व का अहसास हुआ है। कुछ अलग लोगों से

मैंने गाड़ी आगे बढ़ा दी।

'कमला जी, कुछ बताइए अपने बारे मैं।'

'क्या कहूँ, मैं मस्तमौला हूँ। यह संसार ही मेरा घर-परिवार है। मेरी बहुत सारी सहेलियां हैं जिनके साथ मेरा पूरा समय कट जाता है।'

उनकी बातें मैं रुचि लेते हुए मैंने कहा 'कमला जी, आप कहती रहिये मन कर रहा है सुनती ही रहूँ।'

मैंने फिर चुटकी लेते हुए कहा, 'कमला जी, आपकी उम्र क्या है?' मैं।'

'कविता, हम अब उम्र के आखिरी



कविता बिष्ट 'नेह'
देहरादून उत्तराखण्ड

पड़ाव पर हैं। लेकिन लगता है अभी तो जीवन शुरू हुआ है।'

'जी हाँ, आपकी चमकती आँखों का नूर तो अभी भी बरकरार है।' वह हर बात को खूबसूरती से बयां कर रही थी जैसे कानों में मिश्री सी घुल रही हो।

कमला जी कहने लगी 'कविता, मुझे यहीं उतार दो।'

'कमला जी, मैं आपको घर तक छोड़ आती हूँ।'

कमला जी की आँखों में कुछ असमंजस के भाव देखकर मुझे अजीब तो लगा पर मैं उन्हें घर तक छोड़ना चाहती थी।

'कमला जी, यह तो ओल्ड एज होम है। कहाँ है आपका घर?'

'बेटी, यही मेरा घर-संसार है।' कहकर कमला जी ने अन्दर आने का आग्रह किया। उनकी सहेलियां भी अच्छे घर की सुलझी हुई महिलाएं लग रही थीं।

सभी ने मुझसे ढेरों बातें की। लग रहा था इनसे मिलने कोई भी नहीं आता है। ये लोग अपनत्व और प्रेम के लिए आतुर हैं। मेरी आँखों में आंसू आ गए।

कमला जी ने कहा कि 'अब तुम हमसे मिलने आओगी न! हमें भी बाहर जाना और लोगों से बातें करने का बहुत मन होता है।'

मैंने उन्हें बाहों में जकड़ लिया। मेरे पास कोई अल्फाज़ नहीं थे बयां करने को।

काश! इस बैबसी को अपनों का प्यार और सम्मान मिल पाता जिनके ये लोग हकदार हैं....

सच की दस्तक

कला, साहित्य, संस्कृति व सामाजिक सरोकार की मासिक पत्रिका

पाठकों से निवेदन।

प्रिय पाठक बन्धु,

सच की दस्तक मासिक पत्रिका आप की अपनी पत्रिका है। हिन्दी साहित्य और भाषा के विकास के लिए आपका सहयोग अपेक्षित है। पत्रिका निरन्तर आप के घर पहुँचती रहे इसलिए निम्न फार्म भरकर शीघ्र भेजने की कृपा करें या हमारे प्रतिनिधि से सम्पर्क करें।

श्री/श्रीमती /कुमारी.....

पता.....

.....पिन कोड..... मोबाइल संख्या.....

ईमेल.....

वार्षिक सदस्यता - 300/- रुपए मात्र।

पंचवर्षीय सदस्यता - 1200/- रुपए मात्र।

पाठक अपनी सदस्यता राशि निम्न खाते में जमा कर सकते हैं और जमा करने के बाद मोबाइल पर अवश्य सूचित कर देंगे।

Sach Ki Dastak

ब्रजेश कुमार

A/c. No.: 13751652000024

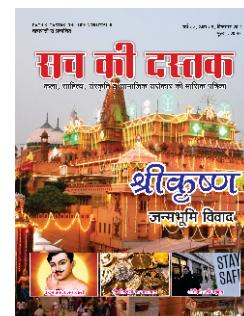
सम्पादक, सच की दस्तक

IFSC Code : PUNB0137510

Punjab National Bank

पता : 1215/A सुभाष नगर, दीनदयाल उपाध्याय नगर, चन्दौली

पिन कोड - 232101, मोबाइल नम्बर - 9621503924



लोकपर्व सतुआन

मनौती और 'भाड़ा भाखना' भी इन्हीं लोकपरंपराओं का एक हिस्सा है, जिसके माध्यम से हम अपनी अभीष्ट की पूर्ति करने का उपक्रम करते हैं। सुदीर्घ काल से ऐसी लोक परम्परायें और पर्व-त्योहार हमारे जीवन का अविभाज्य हिस्सा बनते आये हैं। आधुनिकता की अँधी दौड़ में हम आज इनकी महत्ता को भूल, अपनी जड़ों से कटते जा रहे हैं। आज की पीढ़ी इन पर्व त्योहार और परंपराओं से दूर होती जा रही है, क्योंकि माता पिता और सामाजिक संस्थायें उनको इसका समुचित ज्ञान नहीं देते हैं। परिणाम स्वरूप हमारे बच्चे संस्कार शून्य और आत्मगौरव से हीन होते जा रहे हैं।



ललन सिंह 'ललित'
भोखरी बिहार



सतुआन पर्व बैशाखी का एक महत्वपूर्ण पर्व होता है अपने गाँव देहात में। मौसम और प्रकृति के हिसाब से हमारे लोक-पर्व सनातन परम्परा से मनाये जाते हैं। सबका अपना महत्व और एक खास रंग होता है। इन पर्वों को लोकमंगल की कामना करते हुए प्रतीकात्मक तौर पर मनाया जाता है। हमारी परंपरा में ऋतुचक्र परिवर्तन के हिसाब से इनको मनाया जाता है। मौसम के अनुकूल भोजन, पेय पदार्थ लेने और वस्त्र पहनने की इसमें रुझान दीखती है जो न सिर्फ समयानुकूल होती है, अपितु उसकी वैज्ञानिकता भी जाँची- परखी रहती है। आज सत्तू गुड़ का शुद्ध धी में मिश्रण तैयार कर खाया जाता है। 'गुरमा' बनाया जाता है, जो आम और गुड़ के साथ सिरा डालकर बनाया जाता है। गुरमा और पुड़ी खाया जाता है। वैशाख में नया चना और आम दोनों तैयार हो जाते हैं, अतः इनको पूजा जाता है और तत्पश्चात भोजन का हिस्सा बनाकर सम्मानित किया जाता रहा है। हमारे पूर्वजों ने वैदिक काल से ही ऋषि-मुनियों की अगुआई और निर्देशन में स्वस्थ और वैज्ञानिक परम्पराओं का नींव रखा था, जो आज भी नदियों की तरह सतत प्रवाहमान है। इन लोक परम्पराओं और पूजा-पद्धतियों ने अपना अस्तित्व बनाये रखने में सफलता पाई है। ये हमारी प्रवाही संस्कृति के बेमिसाल पड़ाव हैं, जिनके आगमन पर हम समवेत खुशियाँ मनाते हैं और अपने देवी-देवताओं को पूजते हैं।

हैं, अर्ध देते हैं, तरह-तरह के पकवान चढ़ाते हैं और उनका भोग लगाकर अभ्यर्थना करते हैं। मनौती और 'भाड़ा भाखना' भी इन्हीं लोकपरंपराओं का एक हिस्सा है, जिसके माध्यम से हम अपनी अभीष्ट की पूर्ति करने का उपक्रम करते हैं। सुदीर्घ काल से ऐसी लोक परम्परायें और पर्व-त्योहार हमारे जीवन का आविभाज्य हिस्सा बनते आये हैं। आधुनिकता की अँधी दौड़ में हम आज इनकी महत्ता को भूल, अपनी जड़ों से कटते जा रहे हैं। आज की पीढ़ी इन पर्व त्योहार और परंपराओं से दूर होती जा रही है, क्योंकि माता पिता और सामाजिक संस्थायें उनको इसका समुचित ज्ञान नहीं देते हैं। परिणाम स्वरूप हमारे बच्चे संस्कार शून्य और आत्मगौरव से हीन होते जा रहे हैं। पाश्चात्य सभ्यता की विकृतियों के शिकार हो रहे हैं। वेद शास्त्रों में सन्निहित ज्ञान-विज्ञान से वंचित होकर भौतिकता और भोगवादी प्रवृत्तियों के व्यामोह में फँसकर अपने लोक एवं परलोक का नाश कर रहे हैं।

जरूरत है कि आज की पीढ़ी अपने सदियों पुराने लोकमंगल के इन पर्व त्योहारों को संरक्षित रखे और नये उल्लास, उमंग और उत्साह से इन्हें मनाये। सहयोग, समन्वय, सहकारिता और समरेत आनंदोत्सव मनाने के सद्गुणों को विकसित करे तथा हमारे इस आर्ष वाणी को प्रतिस्थापित करे -

सर्व भवन्तु सुखिनः,
सर्व भवन्तु निरामयाः।
सर्व भद्राणी पश्यन्तु ,
मा कश्चित् दुःख भाव भवेत्।

झंकृत कर दो तार हृदय के

साज़ कहे आवाज हमें दो, चिंता उन्मन घिरती जाए।

अनचाहे अभिनय में काया, पसोपेश में ढलती जाए।

मौन करे जो अंतस पीड़ा,
साँझ सकारे बढ़ी उलझने।
करे गमन ये किस पथ पर,
चिंतन बनकर लगी उतरने।

झंकृत कर दो तार हृदय के, औषधि सरिस उतरती जाए।

साज़ कहे आवाज हमें दो, चिंता उन्मन घिरती जाए।

चौखट पर जो खड़ी चुनौती,
शनैः शनैः है पार लगाना।
भ्रमित करे नित नयी भूमिका,
धैर्य रखें हर फर्ज निभाना।

सुर सरगम की विमल साधना, दुविधा मन की ढलती जाए।

साज़ कहे आवाज हमें दो, चिंता उन्मन घिरती जाए।

इक जीवन की रथ यात्रा में,
अनुदिन मिलते सत्य अनोखे।
दूर दृष्टि विश्वास जगाकर,
तर्क - सहित रंगत दें चोखे।

सुंदर कल-कल, हंस सुशोभित, सरित निरंतर बहती जाए।

साज़ कहे आवाज हमें दो, चिंता उन्मन घिरती जाए।

'लता' प्रेम की मुरझाए बिन,
श्वासों के तोड़े अवरोधन।
सूत्रधार तुम अलख जगा लो,
ध्वनित करे जो नित अंतर्मन।

सत्य शिवं के गान करे मन, ललित-कलित ये बढ़ती जाए।

साज़ कहे आवाज हमें दो, चिंता उन्मन घिरती जाए।



डॉ. प्रेमलता त्रिपाठी
इन्दिरा नगर लखनऊ

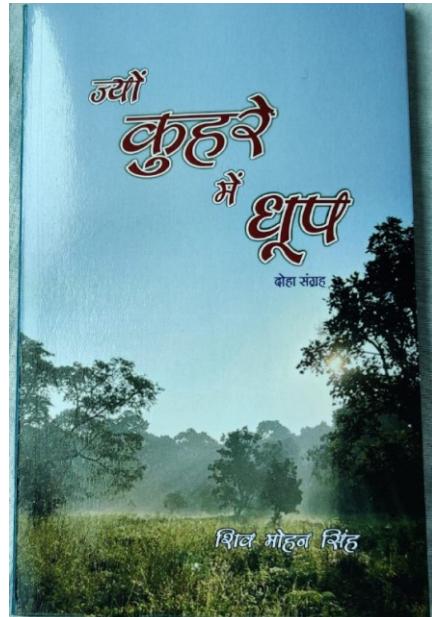
समीक्षायन

'ज्यों कुहरे में धूप' में जीवन के सूत्र

'ज्यों कुहरे में धूप' के दोहे आशा और विश्वास के दीप जलाते हैं और दूटे हुए दिलों को संबल प्रदान करते हैं। ये दोहे निराश और दूट चुके लोगों को आशा का संदेश देते हैं, मानव को धैर्य एवं साहस का साथ कभी नहीं छोड़ना चाहिए। धैर्य और प्रेम से सभी समस्याओं के समाधान का मार्ग प्रशस्त होता है। ये दोहे जीवन से हताश लोगों को नई राह दिखाते हैं और संकटों से जूझने का हौसला देते हैं। अपने जीवन में मानव को पवित्रता और ईमानदारी के मार्ग का अनुसरण करना चाहिए अन्यथा अपवित्र और भ्रष्ट मार्ग हमें पतन की ओर धकेलते हैं और पश्चाताप करना पड़ता है।



वीरेंद्र परमार
फरीदाबाद, हरियाणा



दोहा मुक्तक काव्य का प्रधान छंद और साहित्य की एक लोकप्रिय विधा है जो कम शब्दों में अधिक भावराशि को समेट लेती है। इसमें संक्षिप्त और तीखी भावव्यंजना को प्रकट करने की अद्भुत क्षमता है। दोहा लिखना गागर में सागर भरने के समान है। प्रसिद्ध गीतकार श्री शिव मोहन सिंह ने भी अपने दोहा संग्रह 'ज्यों कुहरे में धूप' में गागर में सागर भरने का प्रयास किया है। इसमें संकलित दोहों का फलक बहुत विस्तृत है। जीवन के विविध पहलुओं को अभिव्यक्त करनेवाले इन दोहों में आशा, विश्वास, समर्पण और शांति का संदेश है। यह संग्रह आशावाद का प्रतिबिम्ब है। ये दोहे नैतिक और मानवीय मूल्यों के प्रति अनुराग जाग्रत करते हैं। दोहाकार ने माँ सरस्वती से

वरदान माँगा है कि उनकी रचनाएं जनसामान्य के भावोद्धार को प्रकट करने में समर्थ हों और

इन दोहों से जनसामान्य को ज्ञान-रश्मि प्राप्त हो-

कृपा दृष्टि माँ की रहे, इतना लें संज्ञान।

मेरे दोहों से मिले, सभी जनों को ज्ञान ॥

'पावस की प्रस्तावना' के दोहों में प्रकृति का मोहक रूप प्रस्तुत किया गया है। जब धरती पर वर्षा की बूँदें गिरती हैं तो तपती धरती निहाल हो जाती है। दोहाकार ने जल संचय के महत्व को रेखांकित करते हुए लिखा है-

जल को संचित कीजिए, बूँद-बूँद अनमोल ।

वरना आँसू पीजिए, रिक्त कमंडल डोल ॥

दोहाकार ने अपने दोहों में जीवन के सभी रंगों को स्पर्श किया है। इस संग्रह में वर्षा ऋतु के साथ-साथ अन्य ऋतुओं का भी जीवंत वर्णन किया गया है-

भीगी चादर ओढ़कर, विदा हुई बरसात।

दिन ढलते ही शरद की, दस्तक
देती रात ॥

तपी दुपहरी जेठ की, नभ बरसे
अंगार ।

माँग रही जड़-चेतना, शीतल एक
फुहार ॥

कोरोना वायरस ने पूरी दुनिया की स्वास्थ्य संरचना और आर्थिकी को बुरी तरह प्रभावित किया है। सभी देश इस महामारी से परेशान हैं। इस महामारी ने अमीर और विकसित देशों के अर्थतंत्र को भी असंतुलित कर दिया है। बेरोजगारी की समस्या पहले से ही विकराल थी, कोरोना ने उस समस्या को और बढ़ा दिया है। सभी भाषाओं के रचनाकारों ने कोरोना महामारी विषयक भरपूर लेखन किया है। शिव मोहन सिंह जी ने लॉकडाउन में मनुष्य की विवशता का यथर्थ चित्र प्रस्तुत किया है-

कोरोना ने कर दिया, हम सबको
मजबूर।

मिलना-जुलना बंद है, दूर-दूर सब
दूर ॥

दोहाकार को जब अवसर मिलता है तब वे प्रकृति का मनोहारी चित्र भी अंकित करते हैं। उन्होंने प्रकृति चित्रण के लिए अभिनव रूपकों और उपमाओं का प्रयोग किया है जो कोई गंभीर अध्येता ही कर सकता है-

धरती पर पर्यावरण, जीवन का
आधार ।

हरियाली के अंक में, जड़-चेतन
आहार ॥

'ज्यों कुहरे में धूप' के दोहे आशा और विश्वास के दीप जलाते हैं और दूटे हुए दिलों को संबल प्रदान करते हैं। ये दोहे निराश और दूट चुके लोगों को आशा का संदेश देते हैं, मानव को धैर्य एवं साहस का साथ कभी नहीं छोड़ना चाहिए। धैर्य और प्रेम से सभी समस्याओं के समाधान का मार्ग प्रशस्त होता है। ये दोहे जीवन से हताश लोगों को नई राह दिखाते हैं और संकटों से जूझने का हौसला देते हैं। अपने जीवन में मानव को पवित्रता और ईमानदारी के मार्ग का अनुसरण करना चाहिए अन्यथा अपवित्र और भ्रष्ट मार्ग हमें पतन की ओर धकेलते हैं और पश्चाताप करना पड़ता है-

पावन पथ होता सरल, जब हो वैसी
सोच ।

छोर पकड़ चल दीजिए, छोड़ सभी
संकोच ॥

संग्रह के दोहों में सकारात्मकता का सौरभ और शांति के पुष्प पराग हैं। शिव मोहन सिंह जी ने सामाजिक और राजनैतिक विद्वपत्ताओं, पाखंड और लालफीताशाही पर धारदार व्यंग्य किया है, लेकिन इनके लेखन का परम उद्देश्य देशवासियों को सद्बाव और सौहार्द का संदेश देना है। आज की राजनीति अत्यंत दूषित हो चुकी है। राजनीति का पहला पाठ है कि जो तुमको सहारा दे अथवा तुम्हारा पथ प्रशस्त करे उसे धक्के देकर गिरा दो और आगे बढ़ जाओ। दूसरों को

सीढ़ी बनाकर आगे बढ़ना युग का व्याकरण बन गया है। राजनीति में एक दूसरे को धकेलकर आगे बढ़ने की होड़ मची हुई है, कोई पीछे नहीं रहना चाहता। सभी शीघ्रातिशीघ्र सबसे आगे निकल जाना चाहते हैं। वे जिसके सहारे आगे बढ़ते हैं उसे ही धक्के देकर गिरा देते हैं। राजनीति अब व्यवसाय बन गई है और वोट के लिए समाज में घृणा का विष घोला जा रहा है। राजनीति से नैतिकता और शुचिता गायब

हो चुकी है-

राजनीति करने लगी, सच्चाई में छेद ।
धीरे-धीरे मिट रहा, बुरे भले का
भेद ॥

साहित्यकार युगीन वातावरण से प्रभाव ग्रहण करता है। युगीन परिवेश चेतन-अचेतन रूप में उस पर अपनी छाप छोड़ता है। जिसके लेखन में अपने समय की संवेदना व्यक्त नहीं होती उसका लेखन शीघ्र ही काल-प्रवाह में विलीन हो जाता है। इसलिए कलाकार को समय की उपज कहा जाता है। श्री शिव मोहन सिंह के दोहे समकालीन जीवन-जगत के प्रतिबिम्ब हैं। इन दोहों में सामाजिक, धार्मिक और राजनैतिक विसंगतियों की चीरफाड़ की गई है-

ज्ञानी गिरवी रखे रहे, अपनी बुद्धि-
विवेक ।
भेड़ चाल चलने लगे, प्रजातंत्र की
टेक ॥

आधुनिकता और फैशन के नाम पर भारतीय संस्कृति का निरंतर चीरहरण हो रहा है। मर्यादा, शील और संयम का कोई महत्व नहीं है। फैशन के नाम पर अब लज्जा ने भी मौन धारण कर लिया है-

अल्प वस्त्र से ढांकती, नारी तन अभिराम ।

मर्यादा दुबकी पड़ी, लज्जा जपती राम ॥

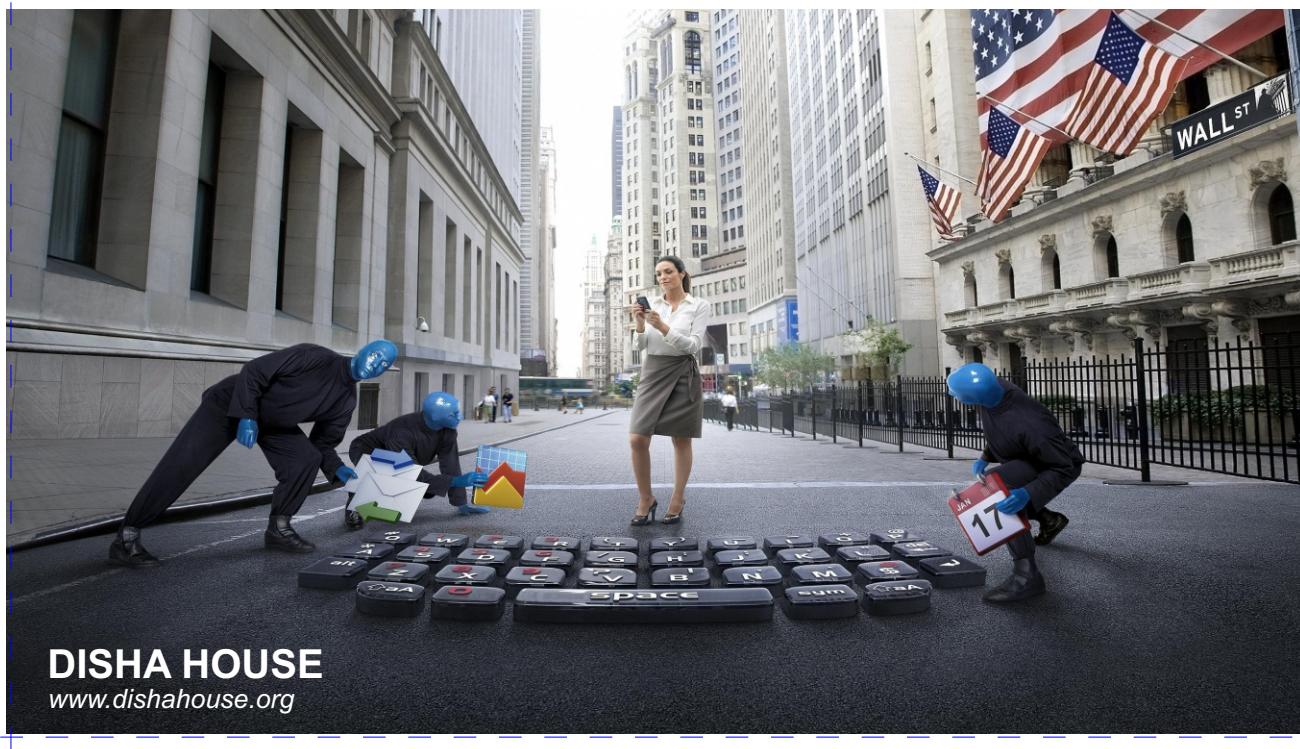
कवि सम्मलेन में चुटकुलेबाजी होती है, अनेक प्रकार के करतब दिखाए जाते हैं और अश्लीलता परोसी जाती है। | दोहाकार ने कवि सम्मेलनों की सच्चाई प्रस्तुत की है-

कवि सम्मलेन मंच पर, देखा अद्भुत कृत्य ।

काव्य पाठ को भूलकर, होता कौतुक नृत्य ॥

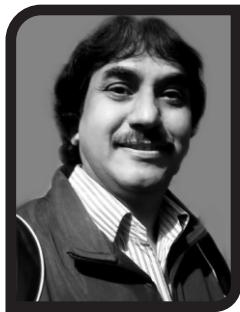
'ज्यों कुहरे में धूप' के दोहों में मानवीय और नैतिक मूल्यों को प्रतिस्थापित करने की छटपटाहट दृष्टिगोचर होती है। जीवन की पाठशाला में बैठकर इन दोहों का सृजन किया गया है। यथार्थ की भावभूमि पर आधारित इन दोहों में आशागाद का संदेश और एक बेहतर भारत के निर्माण का संकल्प निहित है। शिव मोहन सिंह जी ने सरल शब्दों के माध्यम से जीवन-रहस्य का बोध कराया है। भाव और कला की दृष्टि से इस संग्रह के दोहे अत्यंत प्रभावशाली हैं। | कवि के पास भाषा और अनुभव की

पूँजी तथा जादुई शब्दों का समृद्ध भंडार है। इन्हें सरल और आमफहम शब्दों में गूढ़ अर्थ भर देने का हुनर मालूम है। इसलिए इन दोहों की प्रभाव क्षमता दूरगमी है। शिव मोहन जी की सशक्त लेखनी ने इन दोहों में जीवन के अनमोल सूत्रों को व्याख्यायित किया है। इन्होंने बहुत गहराई से आधुनिक समाज में आ रहे बदलाव का अध्ययन किया है जिसका प्रतिबिंब इन दोहों में दिखाई पड़ता है। | दोहाकार ने आत्मानुशासन, संयम, शील, सर्माण इत्यादि मानवीय मूल्यों की महत्ता प्रतिपादित की है। इन दोहों में जीवन के सूत्र छिपे हुए हैं जो जीवन जीने की कला सिखाते हैं। इसमें नीति, मानवता, प्रेम, धर्म, संस्कृति इत्यादि को पारिभाषित किया गया है। आशा है कि श्री शिव मोहन सिंह की लेखनी इसी प्रकार सृजन-पथ पर अग्रसर होकर हिंदी साहित्य को समृद्ध करती रहेगी। ■ ■ ■



सलमान खान का पहला प्यार.... शाहीन जाफरी

शाहीन भी सेंट जेवियर कॉलेज में पढ़ती थी और मॉडलिंग करती थी। सलमान खान शाहीन की खूबसूरती के दीवाने हो गए। इस मुलाकात के बाद सलमान खान और शाहीन दोस्त बन गए, नज़दीकियां बढ़ीं और सलमान खान शाहीन को अपना दिल दे बैठे। 18 साल के सलमान खान ने शाहीन को डेट करना शुरू कर दिया। सलमान खान, शाहीन के प्यार में इतना झूब गए कि वे शाहीन की एक झलक पाने के लिए घंटों कॉलेज के गेट पर खड़े रहते थे। जब भी मौका मिलता वे शाहीन के साथ अक्सर घूमने जाया करते थे। सलमान खान, शाहीन को इतना प्यार करने लगे कि वे शाहीन से मिलने के लिए दूध वाला और ब्रेड वाला बन कर उनके घर जाते थे।



बृजेश श्रीवास्तव मुन्जा



हर दिल अजीज बॉलीवुड के मोस्ट वांटेड 57 साल के भाईजान सलमान खान अपनी फिल्मों, बॉडी बिल्डिंग, फिटनेस और सबसे खास अपनी लव लाइफ और अफेयर को लेकर सुर्खियों में रहते हैं।

वैसे तो सलमान खान की जिंदगी में फिल्म इंडस्ट्री की कई नामी हसीनाएं आई और कुछ समय तक साथ रहकर उनकी जिंदगी से चली गई.... जैसे संगीता बिजलानी, सोमी अली, ऐश्वर्या राय, स्नेहा उल्लास, कैटरीना कैफ, यूलिया वंतुर और अब पूजा हेगडे। सलमान खान की गर्लफ्रेंड्स की एक लंबी लिस्ट है, पर वे अभी तक कुंवारे ही हैं। अभी तक उन्होंने शादी नहीं की है। संगीता बिजलानी के साथ सलमान खान की शादी की डेट फिक्स हो गई थी। कार्ड भी छप गए थे, पर शादी नहीं हो पाई।

क्या आप जानते हैं कि सलमान खान ने जब जवानी की दहलीज पर कदम

रखा, जब वे 18 साल के छैल छबीले बांके जवान हुए तब उनका दिल पहली बार किस हसीना के लिए धड़का ? कौन थी वह खूबसूरत परी जो बनी थी सलमान खान का पहला प्यार ?

सलमान खान का पहला प्यार थी शाहीन जाफरी जिन्हें रायलन भी कहा जाता है। शाहीन जाफरी गुजरे जमाने की मशहूर सुपरस्टार दादामुनि अशोक कुमार की नातिन है। असल कहानी यह है कि अशोक कुमार की बेटी भारती गांगुली की पहली शादी एक गुजराती डॉक्टर से हुई थी पर यह शादी चल नहीं पाई। तलाक हो गया। बाद में भारती गांगुली ने अपनी दूसरी शादी अभिनेता हामिद जाफरी से की जो मुसलमान थे और पहले से ही तलाकशुदा थे। ये फेमस एक्टर सईद जाफरी के भाई थे।

हामिद जाफरी की पहली पत्नी का नाम वालेरी साल्वे था। ये एक स्कॉटिश

ब्रिटिश महिला थी यानि स्कॉटलैंड की थी। हामिद जाफरी और वालेरी साल्वे से दो बेटियां पैदा हुई.... जेनिव जाफरी और शाहीन जाफरी। जब ये बच्चियां 12- 13 साल की थीं तब हामिद जाफरी ने अपनी पत्नी वालेरी साल्वे को तलाक दे दिया। तलाक के बाद वालेरी विश्व भ्रमण के लिए निकल पड़ी।

हामिद जाफरी ने अपनी दूसरी शादी अशोक कुमार की तलाकशुदा लड़की भारती गांगुली से की और भारती बन गई भारती जाफरी।

भारती जाफरी ने हामिद जाफरी की दोनों लड़कियों जेनिव और शाहीन को गोद ले लिया और सर्गी मां सा प्यार दिया।

इस तरह भारती गांगुली (जाफरी) के पिता अशोक कुमार और चाचा फेमस सिंगर किशोर कुमार शाहीन जाफरी के सौतेले नाना थे और शाहीन उनकी नातिन।

दूसरी ओर शाहीन जाफरी का रिश्ता अपने जमाने की फेमस हीरोइन सायरा बानो और ट्रेजडी किंग दिलीप कुमार से भी है। शाहीन जाफरी, सायरा बानो और दिलीप कुमार की भतीजी भी लगती हैं।

कैसे मिले सलमान खान और शाहीन जाफरी

बात 1983 की है। सलमान खान उन दिनों बांद्रा में रहते थे और 12वीं क्लास पास करने के बाद सेंट जेवियर कॉलेज में ग्रेजुएशन के सेकंड ईयर में थे। बांद्रा में ही शाहीन जाफरी और उनकी बहन जेनिव जाफरी भी रहती थी। जेनिव

बचपन से ही सलमान खान की दोस्त थीं और दोनों साथ में ही साइकिल चलाया करते थे। जेनिव ने ही अपनी बेइंतहा खूबसूरत बहन शाहीन की मुलाकात सलमान खान से कराई।

शाहीन भी सेंट जेवियर कॉलेज में पढ़ती थी और मॉडलिंग करती थी। सलमान खान शाहीन की खूबसूरती के दीवाने हो गए। इस मुलाकात के बाद सलमान खान और शाहीन दोस्त बन गए, नज़दीकियां बढ़ीं और सलमान खान शाहीन को अपना दिल दे बैठे। 18 साल के सलमान खान ने शाहीन को डेट करना शुरू कर दिया। सलमान खान, शाहीन के प्यार में इतना दूब गए कि वे शाहीन की एक झलक पाने के लिए घंटों कॉलेज के गेट पर खड़े रहते थे। जब भी मौका मिलता वे शाहीन के साथ अक्सर घूमने जाया करते थे। सलमान खान, शाहीन को इतना प्यार करने लगे कि वे शाहीन से मिलने के लिए दूध वाला और ब्रेड वाला बन कर उनके घर जाते थे।

अपने लिए सलमान खान की दीवानगी को देखकर शाहीन उनसे इंप्रेस हो गई और उन्होंने अपना दिल सलमान खान को दे दिया। दोनों एक दूसरे को बेइंतहा प्यार करने लगे। दोनों का यह पहला- पहला प्यार था।

सलमान खान के घरवालों से सलमान और शाहीन का यह प्रेम रिश्ता छुप नहीं पाया। सलमान ने शाहीन को अपनी गर्लफ्रेंड के तौर पर अपने परिवार वालों से मिलवाया। फिर वे शाहीन को अक्सर अपने घर फिनर के लिए बुलाने लगे और अपने परिवार वालों से मिलवाने लगे। सलमान के परिवार वालों ने भी

सोच लिया था कि सलमान, शाहीन से ही शादी करेंगे। इसलिए वे शाहीन को पसंद करने लगे। दोनों के परिवार वालों ने सलमान और शाहीन के रिश्ते को कबूल कर लिया। अब उम्मीद की जाने लगी कि जल्द ही सलमान और शाहीन में शादी हो जाएगी।

लेकिन ऐसा कुछ नहीं हो पाया क्योंकि सलमान खान की जिंदगी में उनसे उम्र में काफी बड़ी एक और हसीना आ गई, जिसके कारण सलमान खान और शाहीन जाफरी का प्रेम रिश्ता हमेशा-हमेशा के लिए दूर गया।

हुआ यूं कि सलमान और शाहीन दोनों फिल्म में काम करना चाहते थे, इसलिए वे दोनों अलग-अलग प्रोडक्शन हाउस में ऑडिशन देने जाते रहते थे। अपनी बॉडी को फिट बनाए रखने के लिए वे दोनों मुंबई के एक होटल सी रॉक के हेल्थ क्लब में जाते थे। इसी हेल्थ क्लब में 1980 में मिस इंडिया यूनिवर्स बनी संगीता बिजलानी भी आती थी। वे अपने बॉयफ्रेंड से ब्रेकअप के बाद दुखी और तन्हा थीं। संगीता बिजलानी भी फिल्मों में काम खोज रही थी। सलमान खान भी फिल्मों में काम करने के लिए स्ट्रगल कर रहे थे। वे अपने से उम्र में काफी बड़ी संगीता बिजलानी से अट्रैक्ट हो गए। दोनों में दोस्ती हो गई, दोस्ती गहरी होती चली गई और धीरे-धीरे दोनों एक दूसरे के करीब आने लगे। साल 1986 से सलमान खान ने संगीता बिजलानी को डेट करना शुरू कर दिया और शाइन को साइड में कर दिया।

साल 1987 में जब राजश्री प्रोडक्शन के बैनर तले सूरज बड़जात्या

की फिल्म 'मैंने प्यार किया' के लिए ऑडिशन चल रहा था तब सलमान खान और शाहीन दोनों ने ऑडिशन दिया। सलमान ने फिल्म के हीरो 'प्रेम' के लिए और शाहीन ने फिल्म की हीरोइन 'सुमन' के लिए ऑडिशन दिया। सलमान खान का सिलेक्शन तो हो गया लेकिन शाहीन रिजेक्ट हो गई। सुमन का रोल 'भाग्यश्री' को मिल गया। पर फिल्म की शूटिंग शुरू होने में थोड़ा समय था।

इसी बीच जनवरी 1988 में सलमान खान को जेके बिहारी की फिल्म 'बीवी हो तो ऐसी' में काम करने का मौका मिल गया। हालांकि फिल्म में उनकी आवाज नहीं थी, उनकी आवाज किसी और ने डब की थी, पर फिल्म 'बीवी हो तो ऐसी से' सलमान खान ने बॉलीवुड में एंट्री कर ली। इसी साल संगीता बिजलानी को भी फिल्म 'कातिल' में हीरोइन के रूप में काम मिल गया। उन्होंने भी बॉलीवुड में एंट्री कर ली। पर अभी तक सलमान खान की पहली प्रेमिका शाहीन जाफरी फिल्मों में काम पाने के लिए स्ट्रगल कर रही थी।

फिल्म 'मैंने प्यार किया' 29 दिसंबर 1989 को रिलीज हुई। फिल्म सुपरहिट हो गई और सलमान खान स्टार बन गए। सलमान खान और संगीता बिजलानी में नजदीकियां बढ़ने लगी। दोनों फिल्मों में काम करने लगे पर शाहीन को काम नहीं मिल पा रहा था। सलमान और संगीता की बढ़ती नजदीकियों को देखकर शाहीन को लगने लगा कि सलमान उनको धोखा दे रहे हैं। शाहीन ने सलमान के साथ ब्रेकअप करने का फैसला कर लिया। उन्होंने सलमान की जिंदगी से निकल कर अपने जीवन को

आगे बढ़ाने का मन बना लिया। इस तरह सलमान खान और शाहीन जाफरी का प्रेम रिश्ता अपनी मंजिल पाने के पहले ही टूट गया।

सलमान से धोखा मिलने और दिल टूटने के बाद शाहीन जाफरी ने साउथ की फिल्मों की ओर रुख किया। उन्होंने साउथ की कुल 27 फिल्मों में काम किया। इनमें से एक फिल्म सिल्वर जुबली हुई।

उधर सलमान और संगीता एक दूसरे के प्यार में पूरी तरह इब गए। दोनों ने एक साथ कोई फिल्म नहीं की, लेकिन कई विज्ञापन फिल्मों में साथ साथ काम जरूर किया।

शाहीन जाफरी ने साउथ की फिल्मों में काम करने के साथ-साथ बॉलीवुड में एंट्री की। उनकी पहली हिंदी फिल्म 1990 में रिलीज हुई 'महासंग्राम'। इस फिल्म में विनोद खन्ना, गोविंदा, आदित्य पंचोली, माधुरी दीक्षित ने भी काम किया था। इस फिल्म में एक्टर सुमित सहगल ने भी एक भूमिका की थी। इसी फिल्म की शूटिंग के दौरान शाहीन जाफरी और सुमित सहगल में दोस्ती हुई, प्यार हुआ और फिर दोनों ने शादी कर ली। शाहीन जाफरी की दूसरी हिंदी फिल्म 1991 में रिलीज हुई जिसका नाम है 'आई मिलन की रात'। इस फिल्म में उनके हीरो थे अविनाश वाधवन।

फिल्मों में काम करने के साथ-साथ शाहीन टीवी सीरियल की प्रोड्यूसर भी बनी। उन्होंने कई सीरियल बनाए जैसे करवट। शादी के 6 साल के बाद अगस्त 1997 में शाहीन जाफरी और सुमित सहगल के घर एक बेटी ने जन्म लिया जिसका नाम रखा गया सायशा। शादी के

13 साल के बाद 2003 में शाहीन जाफरी का पति सुमित सहगल से तलाक हो गया। सुमित सहगल ने शाहीन से तलाक के बाद फिल्म एक्ट्रेस तबू की बहन फराह नाज से शादी कर ली। शाहीन अब अपनी 6 साल की बेटी सायशा के साथ अकेली रह गई।

शाहीन जाफरी की बेटी सायशा जब 18 साल की हुई तो उन्होंने तमिल फिल्मों में काम करना शुरू कर दिया। बेहद खूबसूरत सायशा आज साउथ की फिल्म इंडस्ट्री में एक फेमस नाम है। सायशा ने 2016 में अजय देवगन की फिल्म 'शिवाय' से बॉलीवुड में डेब्यू किया। सायशा ने साउथ फिल्म इंडस्ट्री के तमिल एक्टर आर्या से शादी की है। इनकी एक बच्ची भी है। सायशा ने फिल्म इंडस्ट्री में वह मुकाम हासिल कर लिया जिसका सपना उनकी माँ शाहीन जाफरी देखा करती थी।

आज सलमान खान की सबसे पहली प्रेमिका शाहीन जाफरी काफी बदल चुकी है। मोटी हो चुकी है और नानी बन गई है। ■ ■

समस्याएँ हमारे जीवन में बिना किसी वजह के नहीं आती...

**उनका आना एक
इशारा है कि हमें अपने
जीवन में कुछ
बदलना है...**

राजनीतिक माहौल

आज के युवा को सिर्फ और सिर्फ टारगेट ऑरिएंटेड बना दिया गया है मतलब यह है कि आजकल के माता-पिता स्वयं नहीं चाहते कि उनका पुत्र या पुत्री अपने कार्यों के अलावा देश के सामाजिक कार्यों में भी अपना योगदान दें। क्योंकि आजकल का माहौल ही कुछ इस तरह का हो गया है कि सब केवल अपना भविष्य बनाने में लगे हुए हैं। यहां तक की आजकल के युवाओं को उनके परिवार के प्रति जिम्मेदारी का अहसास तक नहीं होता इसलिए हमें इसके लिए कोई ठोस कदम उठाने होंगे। आज भारत का हर नागरिक भली-भांति अपना अच्छा बुरा समझता है। युवाओं को संप्रदायवाद और राजनीति से परे अपनी सोच का दायरा बढ़ाना होगा।



डॉ जयराम झा
स्टेट ब्यूरो बिहार



हम जानते हैं कि भारत एक प्रजातांत्रिक देश है आज भारत में दूसरे देशों से सबसे ज्यादा युवा बसते हैं। युवा वर्ग वह वर्ग होता है जिसमें 14 वर्ष से लेकर 40 वर्ष तक के लोग शामिल होते हैं।

आज भारत देश में इस आयु के लोग सबसे बड़ी संख्या में मौजूद हैं। एक ऐसा वर्ग है जो शारीरिक एवं मानसिक रूप से सबसे ज्यादा ताकतवर है। जो देश और अपने परिवार के विकास के लिए हर संभव प्रयत्न करते हैं। आज भारत देश में 75% युवा पढ़ना लिखना जानता है आज भारत ने अन्य देशों की तुलना में अच्छी खासी प्रगति की है इसमें सबसे बड़ा योगदान शिक्षा का है आज भारत का हर युवा अच्छी से अच्छी शिक्षा पा रहा है उन्हें पर्याप्त रोजगार के अवसर मिल रहे हैं। लेकिन दुख इस बात का है कि आज का युवा भले ही कितना ही पढ़ लिख गया हो परंतु अपने संस्कार व देश और परिवार की प्रति जिम्मेदारियों को दिन प्रतिदिन भूलता ही जा रहा है। आज भारत का

युवा वर्ग ऊँचाइयों को छूना चाहता है परंतु वह यह भूलता जा रहा है कि उन उच्चाइयों को छूने के लिए वह स्वयं अपनी जड़ें खुद काट रहा है भारत का युवा वर्ग तैयार है एक नई युवा क्रांति के लिए।

लेकिन अफसोस की बात है कि कुछ इस युवा वर्ग को रोक रही है भारत का युवा वर्ग भारत में अपना योगदान देने के बजाय विदेशों में जाकर बस जाता है।

राजनीतिक माहौल

भारत की राजनीति में आज वृद्ध लोगों का ही बोलबाला है और चंद गिनेचुने युवा ही राजनीति में हैं इसका एक कारण यह है कि भारत में राजनीति का माहौल दिन-ब-दिन बिगड़ रहा है और सच्चे राजनीतिक लोगों की जगह सत्तालोलुप और धन के लालची लोगों ने ले ली है। राजनीति में देश प्रेम की भावना की जगह परिवारवाद, जातिवाद और संप्रदाय ने ले ली है। आए दिन जिस तरह से नेताओं के भ्रष्टाचार के किस्से बाहर आ रहे हैं देश के युवा वर्ग में राजनीति के प्रति उदासीनता बढ़ती जा रही है।

अब भारत की राजनीति में सुभाषचंद्र बोस, शहीद भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद, लोकमान्य तिलक जैसे युवा नेता आज नहीं हैं। जो अपने होश और जोश से युवा वर्ग के मन में नई क्रांति का संचार कर सकें। लेकिन अफसोस आजादी के बाद नसीब में है यह बूढ़े नेता जो खुद की हिफाजत नहीं कर सकते युवा को क्या देशभक्ति या क्रांति की बात सिखाएंगे यहीं वजह है कि भारत के युवा अब इस देश को अपना न समझ कर दूसरे देशों में अपना अशियाना खोज रहे हैं। वे यहां कि राजनीति सत्ता और फैले हुए भ्रष्टाचार से दूर होना चाहते हैं। इसलिए वे कोई भी ठोस कदम उठाने से पहले कई बार सोचते हैं। यहां तक कि भारत में वोट डालने वाली युवा को अपने चुने हुए उम्मीदवारों पर भरोसा नहीं होता है।

जिम्मेदारी का अहसास क्यों नहीं

आज के युवा को सिर्फ और सिर्फ टारगेट ओरिएंटेड बना दिया गया है मतलब यह है कि आजकल के माता-पिता स्वयं नहीं चाहते कि उनका पुत्र या पुत्री अपने कार्यों के अलावा देश के सामाजिक कार्यों में भी अपना योगदान दें। क्योंकि आजकल का माहौल ही कुछ इस तरह का हो गया है कि सब केवल अपना भविष्य बनाने में लगे हुए हैं। यहां तक की आजकल के युवाओं को उनके परिवार के प्रति जिम्मेदारी का अहसास तक नहीं होता इसलिए हमें इसके लिए कोई ठोस कदम उठाने होंगे। आज भारत का हर नागरिक भली-भांति अपना अच्छा बुरा समझता है। युवाओं को संप्रदायवाद और राजनीति से परे अपनी सोच का दायरा बढ़ाना होगा। युवाओं को इस मामले में एकदम सोच समझकर आगे बढ़ना होगा।

और ऐसी किसी भी भावना में ना बहकार सोच समझकर निर्णय लेना होगा।

भारत का युवा वर्ग वार्कर्ड में समझदार है जो सच में इस मामले में एक है और ज्यादातर युवावर्ग राष्ट्रधर्म को सर्वोपरि मान रहा है। यह वार्कर्ड में एक अच्छी सकारात्मक बात है। जो भारत जैसे देश के लिए बड़ी बात है। और भी चीजें हैं जैसे बेरोजगारी, सरकारी नौकरियों में जगह पाने के लिए रिश्वत जैसी बात है।

हमें समय-समय पर अपनी युवाओं का मार्गदर्शन करना चाहिए जिससे वे सही और गलत की पहचान कर सकें तथा अपने देश को आगे तथा तरकी के मार्ग पर ले जाने में सहयोग प्रदान कर सकें।

'भारत की हेल्थकेयर प्रतिभा ने जीता दुनिया का भरोसा' - पीएम मोदी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 'वन अर्थ वन हेल्थ- एडवांटेज हेल्थकेयर इंडिया 2023 समिट' को संबोधित किया। इस दौरान मोदी ने कहा कि स्वास्थ्य के प्रति भारत की दृष्टि केवल बीमारी की कमी पर ही नहीं रुकती। उन्होंने कहा कि रोगों से मुक्त होना कल्याण के मार्ग का एक पड़ाव मात्र है। भारत ने 20 की प्रेसीडेंसी 'वन अर्थ वन हेल्थ वन फ्यूचर' की थीम के साथ शुरू की। उन्होंने कहा कि दुनिया भर के सैकड़ों देश इस पहल में हमारे साथ आगे बढ़ रहे हैं, और पेशेवर और अकादमिक डोमेन से सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों के हितधारकों का होना बहुत अच्छा है। यह भारत के 'वसुधैव कुटुम्बकम' के दर्शन का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि हमारा लक्ष्य सभी का अच्छा स्वास्थ्य और कल्याण है। हमारा लक्ष्य सभी का शारीरिक, मानसिक और सामाजिक कल्याण है।

मोदी ने कहा कि वैक्सीन और दवाओं के माध्यम से जीवन बदलने के महान मिशन में भारत को कई देशों का

भागीदार होने पर गर्व है। उन्होंने कहा कि भारत ने कोविड महामारी के दौरान 30 करोड़ से ज्यादा वैक्सीन डोज 100 से ज्यादा देशों में मदद के लिए पहुंचाई हैं। यहा हमारी क्षमता और प्रतिबद्धता को दिखाता है। उन्होंने कहा कि जब समग्र स्वास्थ्य सेवा की बात आती है, तो भारत के पास कई महत्वपूर्ण ताकतें हैं। हमारे पास टैलेंट है, हमारे पास टेक्नोलॉजी है, हमारे पास परंपराएं हैं।

प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत और बाहर दोनों जगह, हमारे डॉक्टरों को उनकी क्षमता और प्रतिबद्धता के लिए व्यापक रूप से सम्मान दिया जाता है। दुनिया भर में कई हेल्थकेयर सिस्टम हैं जो भारतीय पेशेवरों की प्रतिभा से लाभान्वित होते हैं। उन्होंने कहा कि भारत में संस्कृति, जलवायु और सामाजिक गतिशीलता में जबरदस्त विविधता है। भारत की हेल्थकेयर प्रतिभा ने जीता दुनिया का भरोसा!

- सच की दस्तक न्यूज नेटवर्क

खेल में भी घुटनों पर आया पाक

भारत और पाकिस्तान लीग राउंड के बाद सेमीफाइनल में भी एक दूसरे के खिलाफ उतर सकते हैं। इसके बाद अगर दोनों टीमें सेमीफाइनल के मुकाबले को जीत लेती है, तो फाइनल में भी एक दूसरे के खिलाफ भिड़ेंगे। इस तरह से देखे तो अगर सब कुछ ऐसे ही रहा तो दोनों देश के दर्शकों को तीन बड़े मुकाबले देखने को मिल सकते हैं। 2023 वनडे वर्ल्ड कप के लिए बीसीसीआई ने 12 वेन्यू शॉर्टलिस्ट किए हैं। हर जगह पर चार मुकाबले खेले जा सकते हैं। चोक्रई, अहमदाबाद, बैंगलुरु, लखनऊ, इंदौर, दिल्ली, धर्मशाला, हैदराबाद, गुवाहाटी, राजकोट, कोलकाता और मुंबई के स्टेडियम बीसीसीआई द्वारा चयनित किए गए हैं।



पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) ने भारत के मैचों का आयोजन तटस्थ स्थल पर कराने के साथ एशिया कप की मेजबानी का प्रस्ताव को एशियाई क्रिकेट परिषद (एसीसी) को दिया है। पीसीबी प्रमुख नजम सेठी ने बताया कि उन्होंने इस प्रस्ताव को एसीसी के पास भेजा है। इसमें भारत अपने मैच तटस्थ स्थल पर खेल सकता है जबकि बाकी टीमें पाकिस्तान में खेलेंगी। सेठी ने कहा- हमें बताया गया है कि रिश्ते सामान्य हो सकते हैं। अगर ऐसा तब होता है तो 2025 में पाकिस्तान में चैंपियंस ट्रॉफी में भाग लेने पर भारत विचार करेगा। हमें तटस्थ स्थान पर एशिया कप खेलने के साथ विश्व कप के लिए भारत जाने की सलाह दी गई है।

कुछ दिन पहले अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद के महाप्रबंधक वसीम खान जो पाकिस्तान से ताल्लुक रखते हैं,

उन्होंने गीदङ्गभकी दी थी कि पाकिस्तान विश्व कप खेलने भारत नहीं जाएगा। पाकिस्तान, भारत के बजाय किसी तटस्थ स्थान पर वर्ल्ड कप खेलेगा। लेकिन अब पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड अपने घुटनों पर आ चुका है और उसे हर हाल में वर्ल्ड कप खेलने भारत आना ही होगा।

एकदिवसीय वर्ल्ड कप की बात करें तो अब तक इसका 12 बार आयोजन किया जा चुका है। ऑस्ट्रेलिया ने सबसे अधिक 5 बार इस खिताब को अपने नाम किया है। वहीं भारत और वेस्टइंडीज ने दो-दो बार टाइटल पर कब्जा किया। इसके अलावा इंग्लैंड, पाकिस्तान, और श्रीलंका की टीमें एक-एक बार चैंपियन बनी हैं। यानी अब तक छह टीम एकदिवसीय वर्ल्ड कप का खिताब जीत चुकी हैं।

वर्ल्ड कप 2023 की बात करें तो यह राउंड रोबिन आधार पर चला जाएगा।



मनोज उपाध्याय
खेल सम्पादक

मूँग का हलवा



मूँग का हलवा बनाने के लिए सामग्री

1 कप पीली मूँग दाल (5 घंटे फूली हुई) दरदरी पिसी

1 कप दूध

कुछ केसर के धागे

1 चुटकी इलायची पाउडर

1/2 टी स्पून बादाम कतरन

5 टेबल स्पून देसी धी

1/2 कप चीनी

मूँग का हलवा बनाने की विधि -

मूँग दाल का हलवा बनाने के लिए सबसे पहले दाल को साफ करें और इसे अच्छी तरह से धोकर पानी में 3 घंटे के लिए भिगोकर रख दें। तय समय के बाद दाल को छलनी में डालकर छान लें और सारा पानी निकाल दें। अब मिक्सर जार की मदद से दाल को दरदरा पीसकर एक बर्तन में अलग रख दें। अब एक कटोरी में थोड़ा सा गुनगुना दूध लें और उसमें केसर डालकर चम्मच से अच्छी तरह से घोलें

और इसे भी अलग रख दें। अब एक गहरे तले गाली कड़ाही लें और उसमें धी डालकर मीडियम आंच पर गर्म करें। जब धी पिघल जाए तो उसमें मूँग दाल का दरदरा पिसा पेस्ट डालें और सेकें। दाल को तब तक सेकना है जब तक कि इसका रंग गोल्डन ब्राउन न हो जाए। दाल को अच्छी तरह से सिकने में 25-30 मिनट का वक्त लग सकता है। इस दौरान दाल को लगातार चलाते हुए सेकें मतलब चलाते रहें। करछी की मदद से सारी सामग्रियों को अच्छी तरह से मिक्स करें। इसके बाद मूँग दाल का हलवा 4-5 मिनट तक और पकने दें। इसके बाद गैस बंद कर दें। स्वादिष्ट मूँग का हलवा बनकर तैयार हो चुका है। इसके ऊपर बादाम की कतरन की गार्निश कर दें। सर्विंग बातुल में डाल कर परिवार के साथ खायें और खिलायें। यह सेहत के लिए बेजोड़ पकवान है।

यानी सभी टीमों को विरोधी 9 टीमों के खिलाफ मुकाबले खेलने होंगे। यानी एक टीम का 9 मैच खेलना तय है। इसके बाद टॉप 4 टीमें सेमीफाइनल में जाएंगी। वर्ल्ड कप के लीग राउंड के बाद सेमीफाइनल मुकाबले होंगे। जहां नंबर 1 टीम की भिंडंत नंबर 4 से तो नंबर 2 का मुकाबला नंबर 3 टीम से होगा।

भारत और पाकिस्तान लीग राउंड के बाद सेमीफाइनल में भी एक दूसरे के खिलाफ उत्तर सकते हैं। इसके बाद अगर दोनों टीमें सेमीफाइनल के मुकाबले को जीत लेती हैं, तो फाइनल में भी एक दूसरे के खिलाफ भिंडेंगे। इस तरह से देखे तो अगर सब कुछ ऐसे ही रहा तो दोनों देश के दर्शकों को तीन बड़े मुकाबले देखने को मिल सकते हैं।

2023 वनडे वर्ल्ड कप के लिए बीसीसीआई ने 12 वेन्यू शॉर्टलिस्ट किए हैं। हर जगह पर चार मुकाबले खेले जा सकते हैं। चेन्नई, अहमदाबाद, बैंगलुरु, लखनऊ, इंदौर, दिल्ली, धर्मशाला, हैदराबाद, गुवाहाटी, राजकोट, कोलकाता और मुंबई के स्टेडियम बीसीसीआई द्वारा चयनित किए गए हैं।

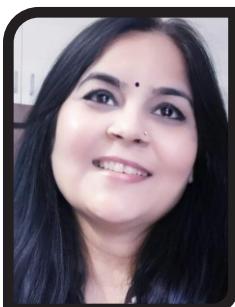
इससे पहले सभी स्टेडियम में कई सुविधाएं भी बढ़ाई जाएंगी। जिसके लिए 500 करोड़ से अधिक रुपए का बजट रखा गया है। जिसमें सबसे ज्यादा खर्च कोलकाता के ईडन गार्डन पर किया जाएगा। जहां पर बुनियादी सुख-सुविधाओं की काफी कमी है। बोर्ड इस बार तैयारी में कोई कमी नहीं छोड़ना चाहती है। इसीलिए हर छोटी से छोटी कमियों पर पूरा ध्यान दिया जा रहा है।



बच्चों को हर सुविधा के साथ जिम्मेदारी भी दीजिए'

बच्चों को हर सुविधा सहज हासिल करवाकर निर्माल्य मत बनाईये। अपने दीजिए संघर्ष के यज्ञ में, कुंदन की तरह निखर जाएँगे अगर बच्चों को ज़िंदगी की चुनौतियों से लड़ना सिखाना है, तो चार लोग सुनेंगे तो क्या कहेंगे वाले कथन को तोड़ मरोड़ कर दरिया में डाल दीजिए।

बच्चों को खुद अपनी समस्याओं के बारे में जानने दीजिए और समस्याओं का हल निकालने दीजिए। बच्चों को यह बात गांठ बांध लेनी चाहिए कि हम गिरने से भी बहुत कुछ सीखते हैं। अपने दम पर गिरना, संभलना उसके बाद पाने की खुशी ही अलग होती है।



भावना ठाकर 'भावु'
बैंगलोर



बच्चों के सारे शौक पूरे करना हर माँ-बाप की ख़वाहिश होती है, खुशी होती है। अपने ख़वाबों को परे रखकर, अपना पेट काटकर हर माँ-बाप बच्चों को राज कुमार और राज कुमारी की तरह रखना चाहते हैं। हर सुख सुविधा से सज्ज ज़िंदगी देकर बच्चों को वो ज़िंदगी देना चाहते हैं जो खुद को नहीं मिली। बेशक दीजिए हर सुविधा, पर एक जिम्मेदारी के साथ बच्चों को आत्मनिर्भर बनाते हुए। सहज, सुलभ मिली सहुलियत की उतनी कद्र नहीं होती। बच्चों की हर जायज़-नाजायज़ मांग को पूरा करना बच्चों को बिगाड़ देता है। बच्चे की हर मांग पूरी न करें, लेकिन ना करने का कारण भी उसे जरूर बताएं। समझाएं कि जिसकी वह मांग कर रहा है, वह वाकई जरूरी है भी या नहीं। बच्चों से खुलकर संवाद करें। उन्हें समय दें। अच्छे बुरे का फ़र्क समझाईये।

पैसों की वैल्यू समझना बचपन से ही सिखाईये। एक उम्र के बाद बच्चों को वो समझ देनी जरूरी होती है कि पैसें पेड़ पर नहीं उगते, कितने बीस मिलाने पर सौ बनते हैं। भले आप करोड़ पति, या अरब पति हो। अगर बीस, बाईस साल के बेटे

को आप स्कूटर या बाइक लाकर देते हैं तो इस शर्त के साथ दीजिए, कि देख बेटे लाख रुपये का बाइक लाकर देते हैं पर पेट्रोल भरवाने की जिम्मेदारी तेरी रहेगी, फिर जितना मर्ज़ी चाहे घूमो। फ़ेरारी या मर्सिडीज भी दीजिये, पर इसी शर्त के साथ कि पेट्रोल का जुगाड़ भाई तू करेगा, ताकि बच्चों को जिम्मेदारी उठाने का महावरा हो और पैसों की कीमत भी समझ में आए। कोई किसान है तो अपने बच्चे को खेत पर जरूर अपने साथ समय व्यतीत कराये कि उसे खेती का किसान का अन्न का महत्व पता चले।

सच मानिए बेटा समय से पहले जिम्मेदार और समझदार बन जाएगा।

यही बात बेटियों के लिए भी उतनी ही लागू होनी चाहिए। आगे की पढ़ाई से लेकर किसी भी चीज़ को आसानी से देने की बजाय एक जिम्मेदारी के साथ दीजिए कि अगर एयर हास्टेस बनना है, या फ़ेशन डिज़ायनर बनना है, तो पार्ट टाइम जॉब करके फ़ीस का जुगाड़ करना होगा। सच मानिए ये शिक्षा बेकार नहीं जाएगी! इसी बहाने बेटी आत्मनिर्भर बनकर अपने पैरों पर खड़ी होना सीख जाएगी, जो

आजकल के ज़माने में बहुत ही जरूरी है। कभी बेटी का तलाक हो जाये जीवन में विपरीत परिस्थितियों का सामना तो कर सकेगी। किसी के सामने कम से कम हाथ तो नहीं फैलायेगी।

बच्चों को हर सुविधा सहज हासिल करवाकर निर्मात्य मत बनाईये। तपने दीजिए संघर्ष के यज्ञ में, कुंदन की तरह निखर जाएंगे अगर बच्चों को ज़िंदगी की चुनौतियों से लड़ना सिखाना है, तो चार लोग सुनेंगे तो क्या कहेंगे वाले कथन को तोड़ मरोड़ कर दरिया में डाल दीजिए।

बच्चों को खुद अपनी समस्याओं के बारे में जानने दीजिए और समस्याओं का

हल निकालने दीजिए। बच्चों को यह बात गांठ बांध लेनी चाहिए कि हम गिरने से भी बहुत कुछ सीखते हैं। अपने दम पर गिरना, संभलना उसके बाद पाने की खुशी ही अलग होती है।

बेशक आपका बच्चा पढ़ाई के साथ नौकरी करेगा तो लोग इधर-उधर की बातें करेंगे ही, ये देखिए फलाने भाई का बेटा बाप अरब पति हैं फिर भी नौकरी कर रहा है। ऐसी बातों को कान पर मत धरिए, बच्चों को हर परिस्थिति से लड़ने के काबिल बनाईये। वक्त कभी किसी का एक सा नहीं रहता, कभी-कभी वक्त इंसान पे एसा भी आता है राह में छोड़के साया भी

चला जाता है, तब कम सुविधा में चलाना और अपने दम पर आगे बढ़ना बचपन से सीखा होगा तो ज़िंदगी के उतार चढ़ाव में ज़ूझना आसान रहेगा। बच्चों को ये हुनर सिखाना भी एक तरह का प्यार है, परवाह है और माँ-बाप की जिम्मेदारी भी।

बच्चों को राजा-महाराजा सी ज़िंदगी देने के लिए तपस्वी की तरह पालिए। परवरिश ऐसी हो कि आगे जाकर अपने दम पर बच्चे ऐसे बनें कि, ज़िंदगी की तपिश उसे जला न पाए। हर परिस्थिति से उभरने में आसानी होगी और ज़िंदगी सहज लगेगी। ■ ■

पांच दशक से दासी हूं, मैं धूल भरी चंधासी हूं पीएम के संसदीय क्षेत्र के समीप होने पर भी नहीं हुआ मेरा उद्धार

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के संसदीय क्षेत्र गराणसी की पूर्वी सीमा से मात्र छह किलोमीटर दूर स्थित मैं एशिया की सबसे बड़ी कोयला मंडी धूल भरी चंधासी हूं। मेरा अतीत भी धूल युक्त था वर्तमान भी यही है। अपनी धूल के कारण मैं लोगों से दुकारी जाती हूं। लोग मेरे पास आने में संकोच करते हैं क्योंकि मैं अपने पास आने वालों को अपने रंग में रंगना बखूबी जानती हूं।

लगभग पांच दशक पूर्व में जब अस्तित्व में आई तो मेरा ठिकाना गंगा के किनारे गराणसी जिले में पड़ाव पर था। जब मैंने आसपास के लोगों को कालिख बांटना शुरू किया तो मुझे विस्थापित करने की मांग उठी। मेरा अगला ठिकाना तत्कालीन मुगलसराय के पश्चिमी छोर पर शहर के बाहर बनाया गया। धीरे-धीरे शहर ने खुद का विस्तार किया और मेरे समीप तक पहुंच गया। अब मेरे और शहर के बीच रक्ती भर फासला नहीं रहा। मैं अपने आगोश में हजारों व्यापारियों के आजीविका के साथ-साथ ऐश्वर्य का कारण भी हूं। दूर प्रांतों के लोग आए और मेरा उपयोग किया और मैंने उन्हें रंक से राजा बनाते देर भी नहीं लगाया, लेकिन टिंडना यह है कि मेरे रक्त से वे पुष्पित पल्लवित हुए और मुझे जीर्ण शीर्ण अवस्था में छोड़ अपनी राह पर चल पड़े। मेरे सीने पर काले हीरे का ऐसा व्यापार हुआ जिसकी वैधता हमेशा से संदिग्ध रही। यहीं वजह है कि वर्ष 1980 में गराणसी के तत्कालीन जिलाधिकारी भूरे लाल ने यहां हो रहे अवैध व्यापार पर छापेमारी की तो मेरे ही गोद में खेलने वाले व्यापारी सङ्गठकों पर नोटों के बंडल छोड़कर भाग चले। राजनीतिक संरक्षण ने व्यापारियों को भरोसा दिलाया और

फिर कोई भूरेलाल सामने नहीं आया, आए तो फिर वही व्यापारी जिन्होंने मेरी कमाई से अपने घड़े भरे। वर्षों तक मैं माफियाओं का चारागाह भी बनी रही। मेरे सीने पर खूब गोलियां चली और बम पटके गए। ऐसा नहीं है कि मैंने सरकार को टैक्स नहीं दिया जिसके कारण मुझे मेरी हालत पर छोड़ दिया गया हो। मुझसे सेल टैक्स, वन विभाग और कुछ हद तक नगरपालिका भी टैक्स वसूलती रही, लेकिन मेरी सूरत संवारने को कोई आगे नहीं आया। अब मैं अपने वीभत्स रूप में हूं। अगर आप खुले गाहन में मेरी राहों से होकर गुजरना चाहते हैं तो मैं आपको अपने रंग में जरूर रंगना चाहूँगी। मैंने अपने साथ रहने वालों को टीबी, दमा और सांस की बीमारियों से नवाजा है। जाम की समस्या मेरा दूसरा नाम है। स्कूली बच्चे हैं या फिर कर्मचारी उनका मुझसे रोज का पाला पड़ता है। जाम के नाम पर मैं उन्हें रोजाना अपने साथ कुछ देर तक खड़ा रखती हूं। समस्याएं तो सभी बताते हैं लेकिन मेरा उद्धार करने कोई सामने नहीं आता है। हां पिता (पल्लिक इंटरेस्ट थिंकर्स एसोसिएशन) संस्था जरूर आगे आई। अधिकारियों से, व्यापारियों से संपर्क किया, बात नहीं बनी तो धरना प्रदर्शन भी किया, लेकिन उनकी आवाज नक्कारखाने में तूती की तरह साबित हुई। ग्रीन हाउस क्लब ने सरकारी मंशा के अनुरूप हर्बल मार्ग बनाने की कोशिश को अंजाम देते हुए आसपास पौधरोपण भी किया लेकिन स्थिति ढाक के तीन पात ही रही। लोग मुझसे परेशान तो रहते हैं लेकिन मैं कभी चुनाव में मुद्दा नहीं बन सकी। यहीं वजह है कि नेता भी मेरी तरफ उदासीन ही नजर आते हैं। ■ ■

- पवन तिवारी ■ ■

सबसे ज्यादा जनसंख्या वाला देश बना 'भारत'

यहां लोकतंत्र है यहां हर वोट अनमोल है और वोट के लिए चुनावों में गोलियां तक चल जाती हैं। पश्चोपेशा, यहां जिस तरह साम्राज्यिक पारा हाई लेवल पर चढ़ता है या कुछ अति महत्वाकांक्षी लोगों द्वारा चढ़वाया जाता है। ग्र उतना ही पारा उतनी ही गर्मी और जोश सकारात्मक कार्यों के लिए हो तो क्या बात हो? जितना प्रचार नेताओं और गोरे होने वाले उत्पादों का होता है बिल्कुल उतना ही देश की मूलभूत सुविधाओं के केन्द्रबिंदु आबादी पर फोकस करके हर घर यह जागरूकता अभियान चलाया जाये तो बात बन सकती है। खैर मुझे तो हर तरफ बेरोजगार कुंवारे कुंवारी ही दिखते हैं फिर पता नहीं कैसे और किसने यह जनसंख्या बढ़ा ली, यह सवाल आज धृधक रहा है।



विश्व गुरु कहलाने वाला देश भारत सबको शिक्षा देता रहा कि अति सर्वत्र वर्जयेत् पर वही कि दिया तले अंधेरा वाली कहावत। कि हम सबको समझा सके पर अपने देश के कुछ तथाकथित लोगों को नहीं। बिल्कुल यही हुआ है कि देश के प्रधानमंत्री, देश के न्यायालय व अनेकों स्वंय सेवी संस्थाओं ने समझाया कि सब लोग जनसंख्या पर काबू रखो पर लोगों ने इसमें भी पर्ते उखेड़ी ज्यादा वोटों की राजनीति खेली। परिणामस्वरूप हम जनसंख्या में भी आगे निकल गये। बता दें कि संयुक्त राष्ट्र के आंकड़ों के अनुसार भारत की जनसंख्या बढ़कर 142.86 करोड़ हो गई है और अब हम चीन को पीछे छोड़कर दुनिया के सबसे अधिक जनसंख्या वाले देश बन गये हैं। इससे साबित यह होता है कि भविष्य में कितनों को रोटी-रोजगार मिल सकेगा? तथा मोदी सरकार कब तक राशन बांट कर दर्द की गठरी को सहलाती रहेगी। पर यह बात कम्पटीशन की तैयारी कर रहे

युवाओं को ही रूला सकती है परन्तु सच कहूं तो नेताओं के लिए यह भी कम है। क्योंकि नेताओं का आधार तो वोट हैं। ज्यादा से ज्यादा वोट, कैसे भी करके वोट मिले, वोट प्रतिशत बढ़े। इसी वोट बैंक की राजनीति का ही यह परिणाम पूरा देश देख रहा है। नेता कहते हैं नौकरी नहीं काम धंधा करो उद्योग लगाओ, लोन सरकार देगी। पर नेताओं को कौन समझाये कि लोन लेना भी कितनी मुसीबत जोखिम भरा काम है। दूसरा यह है कि हर बच्चे की जबरन उद्योग चलाने की मनोवृत्ति तो नहीं होती। लता मंगेशकर सानिया मिर्जा नहीं बन सकतीं और सलमान खान, अटल बिहारी की तरह कवि नहीं बन सकते हर कोई रतन टाटा अंबानी नहीं बन सकता और हर कोई टीचर या मजदूर नहीं बन सकता। यह स्वंय का फैक्ट्री लगाओ आत्मनिर्भर हो जाओ जैसी बातें थोपना भी उचित नहीं। क्या कोई नेता, राजनीति छोड़कर खेती करके आत्मनिर्भर होना पसंद



करेगा? यह ज्ञान देना और इसे जमीन पर झेलना बहुत कठिन है। पर युवा पीढ़ी फिर भी पेट के कारण जैसा बन पा रहा कर रही है। परन्तु भीतर से युवा परेशान है कि कोई पार्टी उसके लिये गम्भीर नहीं। जनसंख्या बृद्धि का नगाड़ा वर्षों से पीटा जा रहा पर अब तक कोई कठोर कानून नहीं। बस यही विडम्बना है। कि एक तरफ जब दो हजार नियुक्ति पत्र बांटे जाते हैं तो दूसरी तरफ दो करोड़ बेरोजगारों की नयी लाईन खड़ी हो जाती है, एक ओर दो अस्पताल या स्कूल बनते हैं तो दूसरी ओर 200 और अस्पतालों और स्कूलों की जरूरत पड़ जाती है। संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या के दिये आंकड़ों पर गौर करें तो भारत की 25 प्रतिशत जनसंख्या 0-14 (वर्ष) आयु वर्ग की, 18 प्रतिशत 10 से 19 आयु वर्ग, 26 प्रतिशत 10 से 24 आयु वर्ग, 68 प्रतिशत 15 से 64 आयु वर्ग की और सात प्रतिशत आबादी 65 वर्ष से अधिक आयु की है। यानि आबादी का जो सर्वाधिक प्रतिशत है वह 15 से 64 साल की उम्र वर्ग का है। यहीं वह वर्ग है जिसके लिए बड़ी संख्या में स्कूल, कॉलेज और नौकरियां चाहिए। लेकिन संसाधन सीमित हैं और आबादी बड़ी है इसलिए समस्या सुरक्षा के मुंह की तरह बड़ी होती जा रही है। इन आंकड़ों के मुताबिक भारत की सबसे अधिक यानि 25.4 करोड़ आबादी युवा (15 से 24 वर्ष के आयुर्वर्ग) की है। देखा जाये तो युवाओं की यह ताकत नवाचार, नई और उन्नत सोच और समस्याओं के स्थायी समाधान का नवीन स्रोत हो सकती है। लेकिन सवाल फिर यही है कि इसके लिए संसाधन कहा से आएंगे? भारत

लोकतांत्रिक देश है यहां तो वोट बैंक की ही राजनीति चरम पर है। नेता गणित बिठाते हैं कि किस जाति-धर्म की जनसंख्या ज्यादा है, हमें वहीं सबसे ज्यादा हाथ जोड़ने हैं। सबसे ज्यादा उन लोगों को खुश और प्रभावित, लाभान्वित करना है। इससे वह वर्ग समझ जाता है कि यह नेता हमारे तीस वोट के कारण इतनी नाक रगड़ा यानि हमें और ज्यादा वोट बढ़ाने चाहिए। भविष्य में हमारा आदमी नेता बने। आज ज्यादातर बेरोजगार युवाओं की पसंद नेता बनने पर टिक चुकी है कि नेता बनो, नेता के लिये कोई कम्पटीशन अनिवार्य नहीं। इस सोच अनेकों युवाओं का जीवन भटक चुका है और ज्यादा वोट के लालच में लोग लगातार जनसंख्या विस्फोट कर रहे हैं। फिर जिसकी जनसंख्या ज्यादा उसी का राज। राज्य फिर देश भी..। यहां लोकतंत्र है यहां हर वोट अनमोल है और वोट के लिए चुनावों में गोलियां तक चल जाती हैं। पशोपेश, यहां जिस तरह साम्राज्यिक पारा हाई लेवल पर चढ़ता है या कुछ अति महत्वाकांक्षी लोगों द्वारा चढ़वाया जाता है। ग्रंथ उतना ही पारा उतनी ही गर्मी और जोश सकारात्मक कार्यों के लिए हो तो क्या बात हो? जितना प्रचार नेताओं और गोरे होने वाले उत्पादों का होता है बिल्कुल उतना ही देश की मूलभूत सुविधाओं के केन्द्रबिंदु आबादी पर फोकस करके हर घर यह जागरूकता अभियान चलाया जाये तो बात बन सकती है। खैर मुझे तो हर तरफ बेरोजगार कुंवारे कुंवारी ही दिखते हैं फिर पता नहीं कैसे और किसने यह जनसंख्या बढ़ा ली, यह सवाल आज धृष्टक रहा है।

आज कि सरकारें शिक्षा का अधिकार, स्वास्थ्य का अधिकार, अनेकों योजनाएं चला रही हैं, अनेकों कानून भी बने हैं। लेकिन उन्हें बताना चाहिए कि जब बुनियादी ढांचे और संसाधनों का अभाव बढ़ेगा है तो देश के नागरिक यह अधिकार कैसे हासिल कर सकेंगे? अब समय आ गया है कि इस मुद्दे पर संसद और विधानसभाओं में मुख्य संवाद हो चर्चा हो मंथन हो, केंद्र और राज्य स्तर पर लगातार सर्वदलीय बैठकें हों और देश की जनता की भी राय प्रमुख मानी जाये और (जनमत संग्रह) आम सहमति बना कर यह सुनिश्चित किया जाये कि बढ़ती जनसंख्या भी किसी महामारी से कम नहीं है। अब तत्काल जनसंख्या नियंत्रण कानून जैसे सख्त कदम उठायें जायें वरना संयुक्त राष्ट्र का यह अनुमान भी कहीं सही साबित न हो जाये कि भारत की आबादी करीब तीन दशकों तक लगातार बढ़ती रहेगी और 165 करोड़ पर पहुँच जायेगी। यह काम हम सभी जिम्मेदार देशवासियों को अपनी आने वाली पीढ़ियों के सुन्दर भविष्य की खातिर आपसी सहमति से एक होकर, गम्भीर हो जाना चाहिए। वरना पृथ्वी की भी अपनी सहने की सीमा है, कहीं ऐसा न हो कि प्रकृति का कोप हमें रूला जाये। हमें जिम्मेदार नागरिक का कर्तव्य निभाना होगा और मिलजुलकर जनसंख्या नियंत्रण का सहगामी होना होगा। यह भी एक प्रकार की देशभक्ति ही होगी। जिसपर सबको नाज़ होगा।



फिनलैंड की नाटो में इंट्री

रूस और फिनलैंड आपस में करीब 1,300 किलोमीटर से अधिक की सीमा साझा करते हैं। मास्को ने कहा है कि वह अपने पश्चिम और उत्तर पश्चिम सीमा पर तैनात सैनिकों की संख्या में पहले की तुलना में और वृद्धि करेगा। बताएं कि रूस के यूक्रेन पर हमले के बाद फिनलैंड की जनता में नाटो के प्रति झुकाव लगातार बढ़ता गया, जो बाद में बढ़कर करीब 80 प्रतिशत हो गया। फिनलैंड के नाटो में शामिल होने के बाद राष्ट्रपति साउली निनिस्तो ने फिनलैंड के लिए एक नए युग की शुरुआत बताते हुए कहा कि यह देश के लिए एक महान और बहुत बड़ा दिन है।



जबसे रूस - यूक्रेन युद्ध शुरू हुआ है तब से लेकर अब तक रूस नाटो पर गुराता दिखा है। हाल ही में चीन ने स्पष्ट कर दिया है कि संघर्ष के किसी भी पक्ष को हथियार नहीं दिये जायेंगे। रही बात भारत की तो भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पहले ही स्पष्ट कर चुके हैं कि यह समय युद्ध का नहीं है। भारत तो हमेशा से ही शांति का पक्षधर रहा है। अभी हाल ही में आयीं यूक्रेन की उप विदेश मंत्री एमिन झापरोवा द्वारा राष्ट्रपति जेलेंस्की का पीएम मोदी को संबोधित एक पत्र विदेश राज्यमंत्री मीनाक्षी लेखी को सौंपा गया था। इस पत्र में यूक्रेन ने दबाओं और चिकित्सा उपकरणों सहित अतिरिक्त मानवीय आपूर्ति का अनुरोध किया है। इस पर लेखी ने ट्वीट कर यूक्रेन को मानवीय सहायता भेजने का आश्वासन दिया है। बता दें, सोमवार को यूक्रेनी मंत्री ने कहा था कि कीव चाहता है कि भारत रूस के साथ चल युद्ध को सुलझाने में

मदद करे। विदेश मंत्रालय की तरफ से जारी एक बयान में यह जानकारी देते हुए बताया गया कि यूक्रेनी मंत्री ने यह भी प्रस्ताव दिया कि यूक्रेन में बुनियादी ढांचे का पुनर्निर्माण भारतीय कंपनियों के लिए एक अवसर हो सकता है। उन्होंने कहा था कि यूक्रेन का समर्थन करना ही सच्चे विश्वगुरु के लिए एकलौता सही विकल्प है।

आइये! पहले यह जान लें कि पुतिन जिस नाटो को बार-बार चेतावनी देते हैं आखिर! यह है क्या - जान लीजिये कि नाटो अथवा उत्तर अटलांटिक संधि संगठन (नाटो) एक राजनीतिक और सैन्य गठबंधन है, जिसके पहले 30 सदस्य थे। हालांकि फिनलैंड के इस समूह में 4 अप्रैल 2023 को शामिल होने के बाद इसकी संख्या बढ़कर 31 हो गई है। इस नाटो का गठन 1949 में किया गया था, जिसका मुख्य उद्देश्य रक्षा और सामूहिक सुरक्षा को बढ़ावा देना था।



नाटो जिस समय बना तब इसके कुल 12 संस्थापक सदस्य थे, जिसमें अमेरिका, कनाडा, ब्रिटेन, बेल्जियम, डेनमार्क, फ्रांस, आइसलैंड, इटली, लक्जमबर्ग, नीदरलैंड, नॉर्वे और पुर्तगाल शामिल थे। फिर नाटो गठबंधन बनने के बाद से इसमें कुल 19 देश शामिल हुए हैं। साल 1952 में ग्रीस और तुर्किये ने इस गठबंधन में शामिल हो गए, जबकि 1955 में जर्मनी, 1982 में स्पेन, 1999 में चेक गणराज्य, हंगरी और पोलैंड, साल 2004 में स्लोवाकिया, स्लोवेनिया बुलारिया, एस्टोनिया, लातविया, लिथुआनिया और रोमानिया, साल 2009 में अल्बानिया और क्रोएशिया, 2017 में मॉटेनेग्रो, 2020 में उत्तर मैसेडोनिया शामिल हुए थे। हालांकि फिनलैंड इस गठबंधन में शामिल होने वाला सबसे नया देश है, जो साल 2023 में इसको ज्वाइन किया।

फिनलैंड के नाटो में शामिल होने पर रूस ने बहुत तीखी प्रतिक्रिया दी है। रूस का मानना है कि फिनलैंड के अमेरिकी प्रभाव वाले ग्रुप उत्तर अटलांटिक संधि संगठन (नाटो) का 31वां सदस्य बन जाने से उसकी सुरक्षा और राष्ट्रीय हितों पर अतिक्रमण है। रूसी राष्ट्रपति कार्यालय क्रेमलिन के प्रवक्ता दिमित्री पेस्कोव ने चेतावनी दी है कि फिनलैंड में जो भी कुछ हो रहा है उस पर दृष्टि बनाए हुए है। वहीं, रूसी रक्षा मंत्री सर्गेई शोइगु ने कहा है कि फिनलैंड के नाटो में शामिल होने से यूक्रेन संघर्ष और बढ़ेगा। मालूम हो कि रूस और फिनलैंड आपस में करीब 1,300 किलोमीटर से अधिक की सीमा साझा करते हैं। मास्को ने कहा है कि वह अपने पश्चिम और उत्तर पश्चिम

सीमा पर तैनात सैनिकों की संख्या में पहले की तुलना में और वृद्धि करेगा। बतादें कि रूस के यूक्रेन पर हमले के बाद फिनलैंड की जनता में नाटो के प्रति झुकाव लगातार बढ़ता गया, जो बाद में

बढ़कर करीब 80

प्रतिशत हो गया। फिनलैंड के नाटो में शामिल होने के बाद राष्ट्रपति साउली निनिस्तो ने फिनलैंड के लिए एक नए युग की शुरुआत बताते हुए कहा कि यह देश के लिए एक महान और बहुत बड़ा दिन है। राष्ट्रपति ने इस दौरान कहा कि फिनलैंड नाटो का एक भरोसेमंद सहयोगी साबित होगा। रूस-यूक्रेन युद्ध के एक साल पूरे होने से मात्र चार दिन पहले अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन अचानक यूक्रेन की राजधानी कीव पहुंच गए थे। अमेरिकी राष्ट्रपति का यूक्रेन में अचानक जाना ये उनके खुले समर्थन को दर्शाता है। मालूम हो कि रूस-और यूक्रेन के बीच जारी युद्ध में अमेरिका ने यूक्रेन की काफी मदद की है। अमेरिका अपने समर्थित मुल्क को लड़ाकू विमान देने के साथ-साथ कई प्रकार के हथियार मुहैया करा चुका है। इधर, चीनी राष्ट्रपति शी चिंफिंग की रूस यात्रा ऐसे समय में हुई है, जब रूस अपने मुश्किल दौर से गुजर रहा है। इस विनाशकारी युद्ध के बाद विश्व की महाशक्तियां दो धड़ों में बंटती देखी जा रही हैं। रूस इस युद्ध में लगातार परमाणु हमले की धमकी देता आया है। रूस के पूर्व राष्ट्रपति दिमित्री मेदवेदेव ने हाल ही



में कहा था कि यूक्रेन को जैसे-जैसे विदेशी हथियार मिलते जा रहे हैं, वैसे-वैसे परमाणु युद्ध का खतरा बढ़ता जा रहा है। मेदवेदेव के मुताबिक, आज के समय में रूस का पश्चिमी देशों के साथ संबंध सबसे निचले स्तर पर हैं। इस सबके बाद, रूस की राष्ट्रपति लादिमीर पुतिन ने अपडेटेड नेशनल फॉरेन पॉलिसी कॉन्सेप्ट को मंजूरी दी है। इसके मुताबिक रूस सभी क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने के लिए भारत के साथ रणनीतिक साझेदारी का निर्माण करना जारी रखेगा और द्विपक्षीय व्यापार की मात्रा बढ़ाने, निवेश और तकनीकी संबंधों को मजबूत करने और अमित्र देशों और उनके गठबंधनों के 'विनाशकारी कार्यों' के लिए उनके प्रतिरोध को सुनिश्चित करने पर विशेष जोर देगा। कुल मिलाकर विश्व के बड़े देश अब रूस-यूक्रेन को हथियार देने के पक्ष में नहीं हैं और रूस-यूक्रेन हैं कि चुप बैठने के पक्ष में नहीं हैं और सभी बड़े देशों से मदद की अपील भी जारी है। निर्णय तो दुनिया की जनता को लेना चाहिए कि नेताओं की गलत नीतियों का खामियाजा जनता को किस मूल्य पर भुगतना पड़ता है। ■ ■

आतंक का अंत

एंबुलेंस में शव के साथ असद का फूफा उस्मान था। कसारी मसारी कब्रिस्तान में शव को दफनाने की प्रक्रिया करीब एक घंटे चली। इस दौरान अतीक अहमद और उसके परिवार का कोई करीबी सदस्य नजर नहीं आया। कब्रिस्तान के चारों तरफ भारी संख्या में पुलिस बलों की तैनाती की गई थी। संयुक्त पुलिस आयुक्त आकाश कुलहरी ने बताया कि अतीक के दूर के कुछ रिश्तेदारों और उसके मोहल्ले के लोगों को ही कब्रिस्तान में जाने दिया गया। अतीक अहमद ने अपने बेटे के जनाजे में शामिल होने के लिए शुक्रवार को अपने वकील के माध्यम से मजिस्ट्रेट के पास एक प्रार्थना पत्र दिया था जिस पर शनिवार को मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट की अदालत में निर्णय लिया जाना था।



उत्तर प्रदेश के प्रयागराज से राज्य के कई शहरों में जिस आतंक और दहशत को कायम करने में माफिया अतीक अहमद ने 44 साल लगाए उसे यूपी की योगी आदित्यनाथ की सरकार ने महज 48 दिनों में खत्म कर दिया। योगी ने जब सत्ता संभाली थी तो सबसे बड़ी चुनौती कानून व्यवस्था को सुधारना ही था। राजनीतिक विश्लेषकों का अनुमान था कि योगी को चूंकि मुख्यमंत्री बनने से पहले कोई प्रशासनिक अनुभव नहीं था, इसलिए वह यूपी को संभाल नहीं पाएंगे। जिस यूपी में भ्रष्टाचार ही शिष्टाचार हो गया था वहां आज योगी के शासन में माफिया खुद ही कह रहे हैं कि हमको मिट्टी में मिला दिया गया है।

आज यूपी में अपराधी अगर खुद थाने में आकर आत्मसमर्पण कर रहे हैं, मुठभेड़ में मार दिये जाने के डर से जमानत लेने की बजाय जेल में पड़े रहते हैं, गाड़ी पलटने के डर से पुलिस के गाहन में ढैंचे से डरते हैं। माफिया डॉन अतीक

अहमद को ही लीजिये, उस पर सौ से ज्यादा केस दर्ज थे लेकिन हाल ही में उसे पहली बार किसी मामले में सजा हुई थी। आज पूरा विपक्ष इस एनकाउंटर और हत्या का विरोध करके योगी को आढ़े हाथ ले रहा है परन्तु यह भी सच है कि जिन लोगों के घर इन माफियाओं ने बर्बाद किये हैं वो लोग चैन की सांस जरूर ले रहे होंगे। वैसे भी अपराधियों में जब तक भय नहीं होगा तब तक वह अपराध करना नहीं छोड़ेंगे। यह माफिया अगर जिंदा होता तो यकीनन न्यायालय भी इसे माफ नहीं करता। वैसे भी अतीक अहमद पर पहला आपराधिक मामला 1979 में प्रयागराज के खुल्दाबाद पुलिस स्टेशन में दर्ज हुआ था। तब से 44 साल के उसके आपराधिक सफर में उस पर 102 केस दर्ज हुए लेकिन किसी भी मामले में कोई सरकार उसे सजा नहीं दिलवा पाई। योगी राज में पहली बार यह संभव हुआ जब पूर्व बसपा विधायक राजू पाल हत्याकांड के गवाह अधिवक्ता उमेश पाल के अपहरण



के मामले में एमपी-एमएलए की कोर्ट ने अतीक को आजीवन कारावास की सजा सुनाई। इधर 24 फरवरी 2023 को उमेश पाल की हत्या से कानून व्यवस्था को नाकाम चुनौती देने के अतीक और उसके गुर्गों के दुस्साहस के बाद यूपी के सीएम योगी के माफिया को मिट्टी में मिलाने के संकल्प ने अतीक के जुर्म और डॉनपने के साम्राज्य को तहस नहस कर दिया गया। अतीक के बेटे असद सहित उसके 4 गुर्गों को पुलिस ने एनकाउंटर में ढेर कर दिया।

अपराध से अर्जित की गई उसकी और उसके गुर्गों की 1400 करोड़ की सम्पत्ति जब्त की जा चुकी। इसे अतीक के आतंक के अंत माना जा रहा है। हम आपको बता दें कि एक तरफ माफिया को मिट्टी में मिलाने का सिलसिला जारी है तो दूसरी तरफ आर्थिक अपराध से जुड़ी जांच एजेंसियां भी अतीक के आर्थिक साम्राज्य को छोट पहुँचाने में लग गई हैं। बता दें कि अतीक और उसके करीबियों के काले कारोबार के साम्राज्य को ध्वस्त करने में प्रवर्तन निदेशालय भी सचेत है। अतीक अहमद पर दर्ज मनी लांड्रिंग केस की जांच में जुटी प्रवर्तन निदेशालय की 15 टीमों ने प्रयागराज में अतीक के करीबियों के कई ठिकानों पर जमकर छापेमारी की है। इसमें अतीक अहमद के वकील खान शौलत हनीफ, अतीक के अकाउंटेंट सीताराम शुक्ला, रियल एस्टेट कारोबारी खालिद ज़फर, बसपा के पूर्व विधायक आसिफ जाफरी, बिल्डर संजीव अग्रवाल, कार शोरूम मालिक दीपक भार्गव के नाम शामिल हैं। इस कार्यवाही में 100 करोड़ से अधिक की बेनामी संपत्तियों का भी खुलासा हुआ है। वैसे अतीक पर दो साल पहले 2021 में प्रिवेंशन ऑफ मनी लांड्रिंग



एक्ट के तहत केस दर्ज किया गया था और इस मामले में उसकी 8 करोड़ की संपत्ति जब्त की गई थी। हम आपको यह भी बता दें कि प्रयागराज शहर में अतीक अहमद के करीबियों के ठिकानों पर की गई कार्रवाई में प्रवर्तन निदेशालय को मनी लांड्रिंग केस में बेहद अहम सबूत मिले हैं जिससे उसके काले कारोबार के नेटवर्क का बड़ा खुलासा हुआ है। इडी की छापे की कार्रवाई के दौरान बरामद दस्तावेजों से 50 से अधिक ऐसी शैल कंपनियों का भी पता चला है जो डमी कंपनियां हैं जिनका मालिक दस्तावेजों में तो कोई और है, लेकिन इनमें रकम अतीक ने निवेश की थी। इनके जरिये अतीक अपनी ब्लैक मनी को व्हाइट में तब्दील करता था। इन कम्पनियों में एमजे इन्फ्रा ग्रीन प्राइवेट लिमिटेड, मैसर्स जाफरी स्टेट लिमिटेड, फना एसोसिएटेड प्राइवेट लिमिटेड, एमजे इन्फ्रा हाउसिंग प्राइवेट लिमिटेड, एफ एंड ए एसोसिएट प्राइवेट लिमिटेड, असाद सिटी, एमजे इन्फ्रा स्टेट प्राइवेट लिमिटेड और एमजे इन्फ्रा लैंड, एलएलपी जैसी कम्पनियां शामिल हैं। इनमें से अधिकतर वह कंपनियां हैं, जिनके बारे में जिला पुलिस ने पहले ही शासन को पत्र भेजकर

इनकी जांच प्रवर्तन निदेशालय से कराने का अनुरोध किया था। दूसरी ओर, गैंगस्टर से नेता बना अतीक अहमद अपने बेटे असद अहमद का शव भी नहीं देख पाया। शनिवार सुबह कसारी मसारी कब्रिस्तान में कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच दफनाया गया। कब्रिस्तान में अतीक अहमद के रिश्तेदारों और परिचितों को ही दाखिल होने दिया गया और मीडियाकर्मियों को भीतर जाने की अनुमति नहीं दी गई। असद का शव लेकर एंबुलेंस भारी सुरक्षा के बीच सुबह करीब नौ बजे कब्रिस्तान पहुंची। एंबुलेंस में शव के साथ असद का फूफा उस्मान था। कसारी मसारी कब्रिस्तान में शव को दफनाने की प्रक्रिया करीब एक घंटे चली। इस दौरान अतीक अहमद और उसके परिवार का कोई करीबी सदस्य नजर नहीं आया। कब्रिस्तान के चारों तरफ भारी संख्या में पुलिस बलों की तैनाती की गई थी। संयुक्त पुलिस आयुक्त आकाश कुलहरी ने बताया कि अतीक के दूर के कुछ रिश्तेदारों और उसके मोहल्ले के लोगों को ही कब्रिस्तान में जाने दिया गया। अतीक अहमद ने अपने बेटे के जनाजे में शामिल होने के लिए शुक्रवार

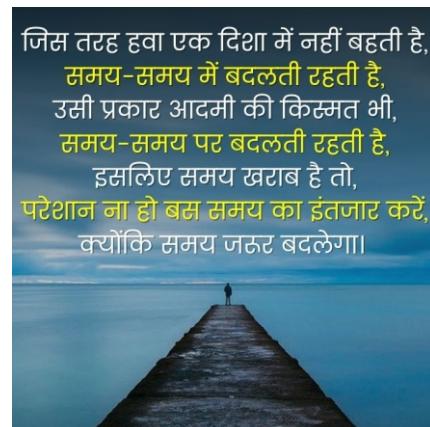
को अपने वकील के माध्यम से मजिस्ट्रेट के पास एक प्रार्थना पत्र दिया था जिस पर शनिवार को मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट की अदालत में निर्णय लिया जाना था, लेकिन अदालती कार्यवाही से पहले ही शव को दफनाने की प्रक्रिया पूरी हो गई। हम आपको बता दें कि असद, अतीक अहमद के पांच बेटों में तीसरे नंबर का बेटा था और उमेश पाल हत्याकांड के बाद से ही फरार था। अतीक का सबसे बड़ा बेटा उमर लखनऊ जेल में निरुद्ध है, जबकि उसका उमर से छोटा बेटा अली नैनी सेंट्रल जेल में निरुद्ध है। वहाँ चौथे नंबर का बेटा अहजम और सबसे छोटा बेटा अबान प्रयागराज के बाल सुधार गृह में हैं। उधर, उमेश पाल हत्याकांड में अतीक अहमद की पत्नी शाइस्ता परवीन और उसके भाई अशरफ अहमद की पत्नी जैनब भी फरार हैं इसलिए असद के अंतिम संस्कार में अतीक के परिवार का कोई सदस्य शामिल नहीं हो पाया। कसारी मसारी कब्रिस्तान में असद की कब्र खोदने वाले जानू खान ने बताया कि अतीक अहमद की मां और उसके पिता की कब्र के पास असद की कब्र खोदी गई है। बता दें कि विपक्ष में उबाल की वजह यह है कि उमेश पाल हत्याकांड में पुलिस कस्टडी रिमांड पर लिए गए माफिया अतीक अहमद और

उसके भाई अशरफ की 15 अप्रैल दिन शनिवार की रात काल्विन अस्पताल के पास तीन नवयुवक हत्यारों ने पुलिस और मीडिया के सामने आती कर, अशरफ की गोली



मारकर हत्या कर दी। दोनों को स्वास्थ्य परीक्षण के लिए काल्विन अस्पताल परीक्षण के लिए ले जाया जा रहा था। उसी समय 10 फायर किए गए। अतीक की कनपटी पर सटाकर एक गोली मारी गई। अज्ञात वाहनों से आए हमलावरों ने सनसनीखेज हत्याकांड को अंजाम देने के बाद समर्पण भी कर दिया। घटना के बाद जिले की सीमा को सील कर दिया है। मौके पर आरएफ को भी बुला लिया गया था। उसके बाद बॉडी पोस्टमार्टम के लिए भेजी गई। तथा पूरे उत्तर प्रदेश में धारा 144 लागू कर दी गई। इस घटनाक्रम के बाद पूरे विपक्ष का पारा चढ़ गया है। विपक्ष ने स्पष्ट शब्दों में योगी सरकार के शासन-प्रशासन तथा बुलडोज़र सिस्टम पर, एनकाउंटर को फर्जी एनकाउंटर कहकर असंतोष जताते हुए कहा अब न्यायालय की जरूरत क्या? इसके आगे

दिए। उन्होंने तीन सदस्यीय न्यायिक आयोग (न्यायिक जांच आयोग) के गठन के भी निर्देश दिए। आगे, तीनों शूटर क्या कहानी बताते हैं यह देखना दिलचस्प होगा जिसका सभी को बेसब्री से इंतजार है। बाकि सच तो यह है कि अततः आतंक का अंत हुआ। ■ ■ ■



बढ़कर विपक्ष (खास्तौर पर सपा, ओवैसी) ने योगी आदित्यनाथ के इस्तीफे तक की मांग कर डाली है। इधर, योगी आदित्यनाथ ने पूरे मामले की उच्च स्तरीय जांच घोड़ आदे शा



डॉ. अंबेडकर और पाकिस्तान

जो लोग डॉक्टर अंबेडकर को जिज्ञा का समर्थक बताते रहे हैं, वे पूरी तरह गलत हैं। उन्होंने अपनी इस किताब में यहां तक लिखा कि कट्टर सोच रखने वाले मुसलमान हमेशा सामाजिक सुधारों का विरोध करेंगे इसलिए भारत को एक प्रगतिशील राष्ट्र बनाने के लिए यह जरूरी है कि जिन लोगों की पाकिस्तान नाम के अलग देश में आस्था है, उन्हें उनके नए देश जाने देना चाहिए। डॉक्टर अंबेडकर के ग्रंथ 'थॉट्स ऑन पाकिस्तान' पर 1942 में मुंबई में एक कॉन्फ्रेंस भी हुई। इस कॉन्फ्रेंस में डॉक्टर अंबेडकर ने बहुत स्पष्ट रूप से कहा कि यदि भारत अपने आपको एक राष्ट्र के रूप में सुरक्षित रखना चाहता है तो उसे एक ऐसी सेना का निर्माण करना पड़ेगा जो भारत राष्ट्र की मूल आत्मा में भरोसा रखती हो।



डॉ. सुशील उपाध्याय
हरिद्वार, उत्तराखण्ड



पिछले दिनों एक सज्जन ने टिप्पणी की कि डॉ अंबेडकर अलग पाकिस्तान के समर्थक थे और वे जिज्ञा का समर्थन कर रहे थे। यह टिप्पणी अधूरी सोच का परिणाम है। जब तक आप डॉक्टर अंबेडकर को समग्रता नहीं पढ़ते, तब तक इसी तरह के निष्कर्ष निकाले जाते रहेंगे। डॉक्टर अंबेडकर ने किन आधारों पर पाकिस्तान बनने की बात कही, उन आधारों को समझना बहुत जरूरी है और आजादी के सात दशक बाद अब यह बात सही साबित हो रही है कि डॉक्टर अंबेडकर पाकिस्तान के निर्माण को लेकर सही समझ रखते थे।

डॉक्टर अंबेडकर ने 1940 में 'थॉट्स ऑन पाकिस्तान' नाम से किताब लिखी। इस किताब में उन्होंने कहा कि यदि भारत के बहुसंख्यक हिंदुओं को भविष्य में शांति के साथ जीना है तो उन्हें

पाकिस्तान का निर्माण स्वीकार कर लेना चाहिए। तब उन्होंने तर्क दिया कि क्या संयुक्त भारत एक ऐसी फौज पर भरोसा कर सकेगा जिसका हर तीसरा सैनिक अलग मुस्लिम देश का समर्थक हो और क्या वह अपनी उस आबादी को संभाल पाएगा जिसका हर चौथा व्यक्ति भारत राष्ट्र के प्रति निष्ठा न रखता हो। इसी किताब में उन्होंने यह सुझाया कि जिस हिस्से में पाकिस्तान बनना है, उस हिस्से से हिंदुओं और गैर मुस्लिम लोगों को समय रहते निकाल लिया जाए। साथ ही, जो पाकिस्तान जाना चाहते हैं, उन्हें सुरक्षित जाने दिया जाए, लेकिन तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियां ऐसी रही कि उस वक्त लोगों को निकाल पाना संभव नहीं रहा। अंततः लाखों लोगों को जान गंवानी पड़ी और करोड़ों लोगों को अपने घर-बार छोड़कर बेघर होना पड़ा।

जो लोग डॉक्टर अंबेडकर को जिज्ञा का समर्थक बताते रहे हैं, वे पूरी तरह गलत हैं। उन्होंने अपनी इस किताब में यहां तक लिखा कि कट्टर सोच रखने वाले मुसलमान हमेशा सामाजिक सुधारों का विरोध करेंगे इसलिए भारत को एक प्रगतिशील राष्ट्र बनाने के लिए यह जरूरी है कि जिन लोगों की पाकिस्तान नाम के अलग देश में आस्था है, उन्हें उनके नए देश जाने देना चाहिए। डॉक्टर अंबेडकर के ग्रंथ 'थॉट्स ऑन पाकिस्तान' पर 1942 में मुंबई में एक कॉन्फ्रेंस भी हुई। इस कॉन्फ्रेंस में डॉक्टर अंबेडकर ने बहुत स्पष्ट रूप से कहा कि यदि भारत अपने आपको एक राष्ट्र के रूप में सुरक्षित रखना चाहता है तो उसे एक ऐसी सेना का निर्माण करना पड़ेगा जो भारत राष्ट्र की मूल आत्मा में भरोसा रखती हो। असल में डॉक्टर अंबेडकर भारतीय सेना में उस वक्त पाकिस्तान समर्थक मुसलमानों की बड़ी संख्या की तरफ इशारा कर रहे थे।

इस ग्रंथ में डॉक्टर अंबेडकर ने जो आशंकाएं जताई थी, बाद में वे सच साबित हुई। यदि सरकार ने डॉक्टर अंबेडकर की योजना को लागू किया होता तो पाकिस्तान बनने के वक्त जिस तरह का कल्लेआम हुआ, उससे बचा जा सकता था। उस वक्त पाकिस्तान के हिस्से के दलित नेताओं ने डॉक्टर अंबेडकर से संपर्क किया तो उन्होंने सुझाव दिया कि जैसे भी हो वे भारत पहुंचना सुनिश्चित करें। उन्होंने पंडित नेहरू से अनुरोध किया कि वे महार रेजीमेंट को पाकिस्तान भेजें ताकि वहां फंसे हुए दलितों तथा भारत आने के इच्छुक हिंदुओं को सुरक्षित निकाला जा सके। यह स्थापित तथ्य है

कि उस वक्त जिन हिंदुओं और दलितों ने डॉक्टर अंबेडकर की बात नहीं मानी, उन्हें बाद में पाकिस्तान में बहुत बुरे दिनों गता सामना करना पड़ा।

यहां यह बात जरूर है कि कहीं ना कहीं जिज्ञा के मन में एक दबी हुई इच्छा थी कि यदि भारत का दलित वर्ग उनके साथ आ जाए तो शायद वे पाकिस्तान के भौगोलिक आकार को और बड़ा कर पाएंगे। सम्भवतः इसी कारण उन्होंने डॉ अंबेडकर के राजनीतिक मार्गदर्शक डॉ जोगेंद्र नाथ मंडल को अपने साथ मिला लिया था और उन्हें पाकिस्तान के संविधान के निर्माण का जिम्मा सौंपा था, लेकिन डॉक्टर अंबेडकर जिज्ञा के बहकावे में नहीं आए और यह बात उस वक्त सही साबित हुई जब पूरी तरह से निराश और दूटे हुए डॉक्टर जोगेंद्र नाथ मंडल पाकिस्तान छोड़कर वापस भारत आ गए।

यह डॉक्टर अंबेडकर की दूर दृष्टि थी कि उन्होंने 1952 से 1954 के बीच पंडित नेहरू पर लगातार दबाव बनाया कि वे कश्मीर में जनमत संग्रह करा कर इस मामले का अंतिम निस्तारण कर लें अन्यथा की स्थिति में यह मामला आने वाले समय में भारत की अखंडता एकता के लिए बड़ा संकट बनेगा। डॉक्टर अंबेडकर उन लोगों में शामिल थे जिन्होंने गिलगित और बाल्टिस्तान में फंसे हुए हिंदुओं, सिखों और दलितों को भारत

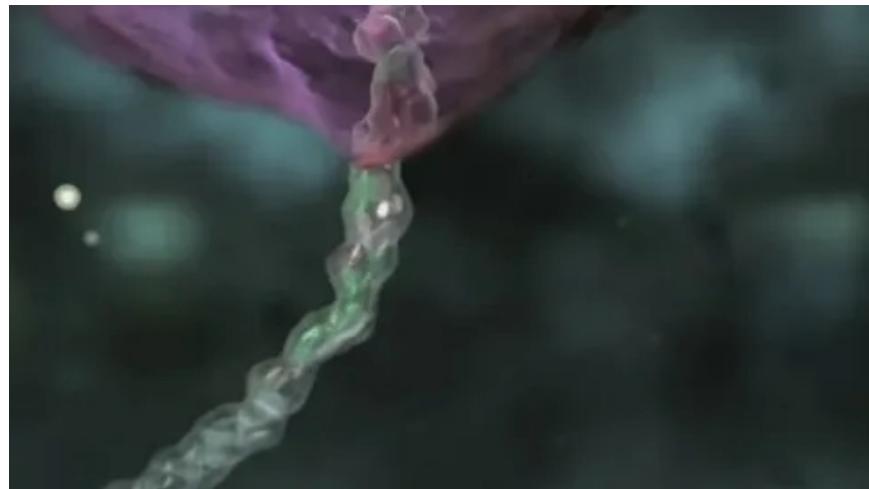


लाकर बसाने पर जोर दिया। यदि कुछ लोग डॉक्टर अंबेडकर की किताबों और उनके भाषणों से इक्का-दुक्का वाक्य उठाकर किसी निष्कर्ष को प्रस्तुत करेंगे तो यकीनन उनका निष्कर्ष खतरे से खाली नहीं होगा। जो लोग डॉक्टर अंबेडकर को पाकिस्तान निर्माण का समर्थक बताते हैं उन्हें डॉक्टर अंबेडकर पर लिखी हुई वसंत मून की किताब 'बाबासाहब अंबेडकर' जरूर पढ़नी चाहिए।

जो महानुभाव डॉक्टर अंबेडकर और जिज्ञा को एक पलड़े में रखना चाहते हैं उन्हें क्रिप्स मिशन के सामने डॉक्टर अंबेडकर द्वारा जिज्ञा की योजना का विरोध किए जाने की ऐतिहासिक घटना के बारे में भी पढ़ना चाहिए। उस वक्त डॉक्टर अंबेडकर ने जिज्ञा की उस योजना का विरोध किया था, जिसमें देश के विधान मंडलों, न्यायालयों, सरकारी नौकरियों और फौज में मुसलमानों को 50 फीसद आरक्षण दिए जाने की मांग की गई थी। इस योजना को क्रिप्स मिशन द्वारा अस्वीकार किए जाने पर डॉक्टर अंबेडकर ने एक बड़ी विजय बताया था। अधूरी सोच रखने वाले लोगों से निरेदन है कि डॉ अंबेडकर पर टिप्पणी करने से पहले एक बार तथ्यों को ठीक से जरूर देख लें। ■ ■ ■

पेट संबंधित रोग में हेपेटाइटिस हो सकता है जानलेवा

लक्षणों को ध्यान में रखते हुए और स्थिति की गम्भीरता के आधार पर डॉक्टर्स हेपेटाइटिस का निदान करते हैं। लीवर में सूजन, त्वचा की रंगत पीली होना, पेट में मौजूद होना आदि को देखकर फिज़िकल एक्ज़ामिनेशन करने को कहते हैं। इसमें सबसे पहले पेट का अल्ट्रासाउंड किया जाता है। इसके आलावा लीवर फंक्शन टेस्ट भी किए जाते हैं। साथ ही ऑटोइम्यून ब्लड मार्कर टेस्ट, लिवर बायोपसी भी कराई जा सकती हैं। इसके आलावा हेपेटाइटिस बी सरफेस एंटीजन टेस्ट का उपयोग किया जाता है।



मौजूदा समय में पेट से संबंधित रोगों में हेपेटाइटिस प्रमुख है। यह लिवर से जुड़ी बीमारी है, जो वायरल इन्फेक्शन के कारण होती है। इस बीमारी में लीवर में सूजन आ जाती है। जिसके कारण व्यक्ति काफी आज महसूस करता है। हेपेटाइटिस में 5 प्रकार के वायरस होते हैं, जैसे- ए, बी, सी, डी और ई।

यदि देखा जाए तो हेपेटाइटिस मूल रूप से लीवर से जुड़ी बीमारी है, जो वायरल इन्फेक्शन के कारण होती है। इस बीमारी में लीवर में सूजन आ जाती है। तुरंत यह रोग नहीं पकड़ में आता है।

इसे गंभीरता से लेना चाहिए, क्योंकि इनके कारण ही हेपेटाइटिस महामारी जैसी बनती जा रही है और हर साल इसकी वजह से होने वाली मौतों का आंकड़ा भी बढ़ता जा रहा है। हेपेटाइटिस का टाइप बी और सी लाखों लोगों में क्रोनिक बीमारी का कारण बन रहे हैं क्योंकि इनके कारण लीवर सिरोसिस और कैंसर होते हैं। हेपेटाइटिस के बारे

जागरूकता पैदा करने और जन्म के बाद बच्चे को वैक्सीन देकर उसे हेपेटाइटिस से बचाया जा सकता है।

हेपेटाइटिस के प्रकार

हेपेटाइटिस ए-

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार हर साल 1.4 मिलयन लोग इस बीमारी से ग्रस्त हो रहे हैं। ये दूषित भोजन और दूषित पानी के सेवन करन से होता है।

हेपेटाइटिस बी-

इन्फेक्टेड ब्लड के ट्रांसफ्यूशन और दूसरे फ्लूइड के इक्सपोशर के कारण यह संक्रमित होता है।

हेपेटाइटिस सी-

यह हेपेटाइटिस सी वायरस के कारण होता है। 'यह ब्लड और इन्फेक्टेड इंजेक्शन के इस्तेमाल से होता है।'

हेपेटाइटिस डी-

यह हेपेटाइटिस डी वायरस के कारण होता है। जो लोग पहले से एचबीवी वायरस के इन्फेक्टेड होते हैं वे ही इस



वायरस से संक्रमित होते हैं। एचडीवी और एचबीवी दोनों के एक साथ होने के कारण स्थिति और भी बदतर हो जाती है।

हेपेटाइटिस ई-

हेपेटाइटिस ई वायरस के कारण यह होता है। दुनिया के ज्यादातर देशों में हेपेटाइटिस के संक्रमण का यही कारण है। यह विषाक्त पानी और खाना के कारण ज्यादा होता है।

इसके अलावा हेपेटाइटिस को गम्भीरता के आधार पर भी पहचाना जाता है-

एक्यूट हेपेटाइटिस-

अचानक लीवर में सूजन होता है जिसका लक्षण छह महीने तक रहता है और रोगी धीरे-धीरे ठीक होने लगता है। एचएवी इन्फेक्शन के कारण आम तौर पर एक्यूट हेपेटाइटिस होता है।

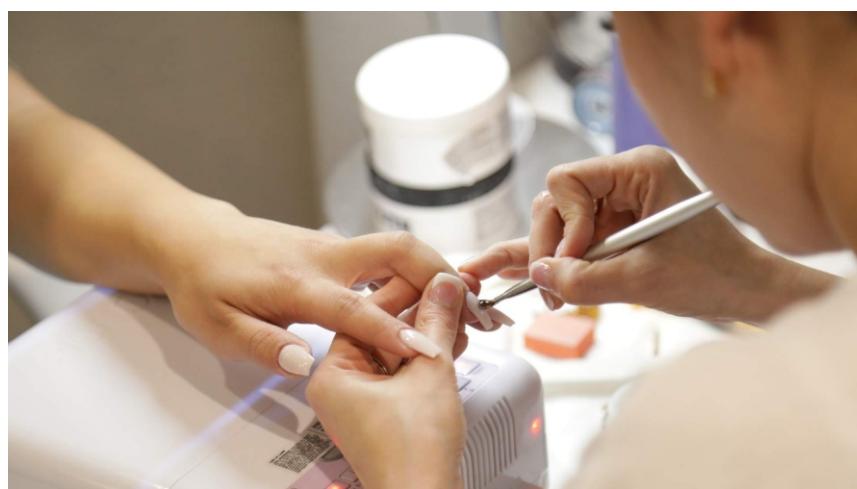
क्रॉनिक हेपेटाइटिस-

क्रॉनिक एचसीवी इन्फेक्शन से 13-150 मिलयन लोग दुनिया भर में प्रभावित होते हैं। लीवर कैंसर और लीवर के बीमारी के कारण ज्यादा से ज्यादा लोग मरते हैं। वायरस इन्फेक्शन क्रॉनिक रोगी का इम्यून सिस्टम भी बूरी तरह से इफेक्ट होता है।

हेपेटाइटिस के कारण क्या हैं?

लीवर में सूजन होने के कारण हेपेटाइटिस रोग होता है। इस वायरल इन्फेक्शन के कारण जान को खतरा भी हो सकता है मतलब हेपेटाइटिस एक जानलेवा इन्फेक्शन है। इसके कई कारण हो सकते हैं:

वायरल इन्फेक्शन: खासकर, हेपेटाइटिस ए, हेपेटाइटिस बी और



हेपेटाइटिस सी वायरल इन्फेक्शन के बदलना, बहुत अधिक थकान कारण होता है।

उल्टी या जी मिचलाना, पेट दर्द और सूजन, खुजली, भूख ना लगना या कम लगना, अचानक से वज़न कम हो जाना

ऑटोइम्यून स्थितियां: अक्सर, शरीर के इम्यून सेल से यह पता चलता है कि लीवर की सेल्स को डैमेज पहुंच रहा है। शराब पीना: अल्कोहल हमारे लीवर द्वारा डायरेक्ट लेटोबोलाइज़्ड होता है, जिसके कारण यह शरीर के दूसरे भागों में भी इसका सर्कुलेशन होने लगता है। इसलिए, जब कोई बहुत अधिक शराब या अल्कोहल का सेवन करता है, तो उस व्यक्ति के लिए हेपेटाइटिस का खतरा बढ़ जाता है। दवाइयों का साइड-इफेक्ट्स: यह भी एक कारण है हेपेटाइटिस का। कुछ विशेष दवाइयों के ज़्यादा सेवन से लीवर सेल्स में सूजन होने लगती है और हेपेटाइटिस का रिस्क बढ़ जाता है।

हेपेटाइटिस के लक्षण क्या हैं?

अक्यूट हेपेटाइटिस की शुरुआत में बहुत स्पष्ट लक्षण नहीं दिखायी पड़ते हैं। लेकिन, इंफेक्शन्स और क्रॉनिक हेपेटाइटिस में ये समस्याएं काफी स्पष्ट तरीके से लक्षण के तौर पर दिखायी पड़ती हैं:

जॉन्डिस या पीलिया, यूरीन का रंग

लक्षणों को ध्यान में रखते हुए और स्थिति की गम्भीरता के आधार पर डॉक्टर्स हेपेटाइटिस का निदान करते हैं। लीवर में सूजन, त्वचा की रंगत पीली होना, पेट में मैं फ्लूइड होना आदि को देखकर फिजिकल एक्जामिनेशन करने को कहते हैं। इसमें सबसे पहले पेट का अल्ट्रासाउन्ड किया जाता है। इसके आलावा लीवर फंक्शन टेस्ट भी किए जाते हैं। साथ ही ऑटोइम्यून ल्ड मार्कर टेस्ट, लीवर बायोपसी भी कराई जा सकती है। इसके आलावा हेपेटाइटिस बी सरफेस एंटीजन टेस्ट का उपयोग किया जाता है।

यह रक्त में हेपेटाइटिस बी सरफेस एंटीजन की उपस्थिति का पता लगाने के लिए किया जाता है। इस परीक्षण का उपयोग उस वायरस की जांच के लिए किया जा सकता है जो हेपेटाइटिस बी का कारण बनता है या यह निर्धारित करने के लिए कि क्या आप वायरस से सक्रिय रूप

से संक्रमित हैं। यु परीक्षण आमतौर पर परीक्षणों के एक पैनल के हिस्से के रूप में किया जाता है, जैसे हेपेटाइटिस बी पैनल, जिसमें अन्य हेपेटाइटिस वायरस के परीक्षण भी शामिल होते हैं।

वर्ल्ड हेपिटाइटिस डे 28 जुलाई को मनाया जाता है या इसलिए बनाया जाता है कि संक्रामक रोग से लोगों को जागरूक किया जा सके।

हेपेटाइटिस में डायट

हेल्दी डायट की मदद से हेपेटाइटिस की समस्या को मैनेज करना आसान हो जाता है। हालांकि, स्थिति की गम्भीरता और लीवर की सूजन के आधार पर डायट निर्धारित की जाती है। साथ ही डायट से जुड़ी इन बातों का ध्यान रखने से भी मदद होती है। :

- अपनी डायट में फूलगोभी, ब्रोकोली, बीन्स, सेब, एवाकाडो का समावेश करें।
- प्याज़ और लहसुन जैसे पारम्परिक मसालों को अपने भोजन में शामिल करें।
- खूब पानी पीएं, ताजे फलों का जूस पीएं।
- अल्कोहल का सेवन कम करें, मैंहूं का सेवन कम करें।

हेपेटाइटिस के संबंध में डॉ कुमार अभिषेक का कहना है कि जैसे ही जॉन्डिस के लक्षण दिखाई पड़ते हैं वैसे ही डॉक्टर से मरीज को मिलना चाहिए और अपनी से कोई दवाई नहीं चलाई जानी चाहिए। हो सकता है कि जॉन्डिस हेपिटाइटिस तो नहीं है इसकी जांच करवानी चाहिए।

सनगलासेस खरीदने से पहले सावधान!



कभी फैशन में तो कभी अक्सर लोग गर्मियों में तेज धूप से बचने के लिए सनगलासेस का यूज करते हैं। सनगलासेस हमारी आंखों और उसके आसपास के नाजुक त्वचा को सूर्य की युवी किरणों से प्रोटेक्ट करता है। ऐसे में अगर आप भी सनगलासेस खरीदने जा रहे हैं तो कुछ बातों को ध्यान में रखना जरूरी है। यह प्रोटेक्शन के साथ ही आपके लुक को भी बेहतर बनाएगा। आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको सनगलासेस खरीदने के दौरान ध्यान रखने वाली कुछ अहम बातों को बताने जा रहे हैं।

सनगलासेस खरीदने के दौरान आपको अपने चेहरे के शेष का ध्यान रखना चाहिए। क्योंकि कई बार लोग सनगलासेस तो अच्छे खरीदते हैं लेकिन वह उनके फेस पर बिलकुल भी सूट नहीं करता है। आजकल मार्केट में कई तरह से सनगलासेस मिलते हैं। वहीं ऑनलाइन में अलग-अलग वैरायटी भी मौजूद रहती हैं। इसमें आप अपने फेस के शेष के अनुसार सनगलासेस चुनने चाहिए। ऑनलाइन में अलग-अलग रंग के सनगलासेज मिलते हैं। लेकिन इनको खरीदते समय यह जरूर ध्यान रखें कि यह आपकी आंखों चेक करें।

के चारों तरफ पूरी जगह को कवर कर ले। अगर आप भी सनगलासेस खरीदने जा रही हैं तो इस बाद का ध्यान रखें कि इसके लेंस पतले हों। बता दें कि पतले लेंस ज्यादा रिफ्लेक्टर होते हैं। साथ ही यह सूर्य की किरणों को रिफ्लेक्ट कर आपकी आंखों को प्रोटेक्ट करते हैं। इसके अलावा फ्रेम के मटेरियल का भी सोच-समझकर चुनाव करना चाहिए। यदि आप हैवी सनगलासेस लेती हैं तो इससे ज्यादा पसीना आने की संभावना होती है। इसलिए अपने कंफर्ट के हिसाब से ही आपको गॉगल्स फ्रेम का मटेरियल सेलेक्ट करना चाहिए।

अगर आप स्टील के फ्रेम वाले सनगलासेस का चुनाव करती हैं तो इससे पहले यह जानना जरूरी है कि स्टील के फ्रेम धूप में गर्म हो जाएंगे। साथ ही यह आपकी स्किन को भी जला सकता है। या इसके दाग से आपका चेहरा खराब हो सकता है। इसलिए पॉलीकार्बोनेट, प्लास्टिक या नायलॉन का फ्रेम ही चुनना चाहिए।

चैक करें वारंटी -

धूप से आंखों की सुरक्षा करने वाले सनगलासेस खरीदते समय यह भी ध्यान रखें कि यह आपकी आंखों को किस तरह से लाभदायक है। इन्हें खरीदने से पहले पहनकर जरूर देखना चाहिए। इससे आपको यह पता चलेगा कि आपको चश्मे से आपकी आंखों को आराम मिल रहा है या नहीं। साथ ही इसकी वारंटी भी जरूर चेक करें।

अगले जन्म मोहे बड़े बाबू ही करियो

उन्होंने मुझे अपने करीब बुलाकर स्पष्ट रूप से कहा था, 'कभी भी किसी काम को जल्दबाजी में मत करना । प्रत्येक फाइल को खूब देख भाल कर, समझ सोचकर, खूब पका कर उसका वजन देखकर ही आगे बढ़ाना । किसी भी केस में कोई जल्दबाजी नहीं करना । धीरे - धीरे इत्मीनान से सब काम करना । अगर इस पोस्ट का सही रूप से प्रसाद पाना चाहते हो, इसका पावन अमृत पान करना चाहते हो तो आहिस्ता आहिस्ता काम को अंजाम देना । अपनी गरिमा बचाकर रखना, आखिर कार अब तुम बड़े बाबू हो इसलिए,,, बाबू जी धीरे चलना,,,,।



श्याम सुन्दर श्रीवास्तव 'कोमल'



जिधर देखो उधर बस भागम भाग मची हुई है । जिसे देखो वह बस दौड़ रहा है, भाग रहा है, चल कोई नहीं रहा । सब जल्दी में हैं । हर व्यक्ति इस दौड़ भाग प्रतियोगिता में मैडल प्राप्त करना चाहता है । पीछे कोई नहीं रहना चाहता । सब खरगोस बनना चाहते हैं, कछुआ कोई नहीं बनना चाहता । और एक विलक्षण बात यह है कि लोग कछुआ नहीं बनना चाहते हैं किंतु रेस जीतना चाहते हैं । ये तो वही बात हुई कि हँसना भी चाहते हैं और गाल भी फुलाना चाहते हैं ।

मुझे इस जल्दबाजी से भारी नफ़रत है और इन दौड़ बाजों से तो मुझे एक कुंतल उन्नीस किलो और पांच सौ तीस ग्राम एलर्जी है । मैं ऐसे लोगों को कभी भी घास नहीं डालता । लेकिन क्या करूँ ये जल्दबाज़ 500 एम जी पावर के

इंजेक्शन की ऊर्जा लिए मुझ निरीह, कमज़ोर और मरियल से प्राणी पर ऐसे दूट पड़ते हैं जैसे किसी बकरी पर भेड़िया दूट पड़ता है । बस एक ही रट, 'बाबू जी मेरी ये फाइल जल्दी से आगे बढ़ा दीजिए, इसे जल्दी ही निपटा दीजिए' । मेरा मिमयाना, रियाना जैसे उन्हें कभी सुनाई ही नहीं देता । बस अपनी धुन में मस्त वही एक बात,,,जल्दी से,,,बाबू जी,,,,'।

मैं भी अब रोज - रोज की यही 'बाबू जी,,,जल्दी से,,,' सुन - सुन कर पक गया हूँ, बोर हो गया हूँ, धीरे - धीरे इस जल्दबाजी के दुरुह एवम् मकड़जाल से निकलने के मैंने भी अब कई पैतरे सीख लिए हैं । कुछ छोटे किंतु प्रभावी मंत्र मैंने भी सिद्ध कर लिए हैं । मैं भी अब उनके जल्द बाजी का इलाज समझ गया हूँ, और

तुरंत उपचार कर देता हूं....'काम हो जाएगा.....,किंतुथोड़ा समय लगेगा,, समझे.....,'?

किसी भी समस्या के निदान में समय लगता है, इसमें जल्दबाजी घातक सिद्ध हो सकती है। कोई भी समस्या इतनी बड़ी नहीं होती कि उसका हल न निकाला जा सके और कोई भी समस्या इतनी छोटी भी नहीं होती कि उसका हल चुटकी में निकल आए। किसी भी समस्या का हल यदि चुटकी में निकल आए तो वह समस्या है ही नहीं। मेरी भी इस समस्या का हल और सिद्ध मंत्रों की प्राप्ति वर्षों के तप, साधना और प्रयासों का ही प्रतिफल है।

इस समस्या के निदान में सबसे अधिक योगदान है अभी हाल में ही भूत हुए मेरा मतलब रिटायर्ड (निर्वतमान) हुए बड़े बाबू जी का। उन्होंने इस सीट पर आने बाली सभी समस्याओं के बारे में मुझे खुलकर पूरे विस्तार से समझाया, उनके निदान भी बताए और साइड इफैक्ट भी।

बड़े बाबू अरोरा साहब को दुनियादारी की खूब समझ थी, उन्होंने बड़े से बड़े केश, बड़ी से बड़ी उलझी हुई फाइलें ऐसे सुलझाई जैसे वे कभी उलझी ही नहीं थीं। उन्हें उलझे हुए केश सुलझाने में महारथ हासिल थी। बड़े से बड़े अधिकारी उनसे सलाह लेते थे। उन्होंने घाट-घाट का पानी पिया था। वे बहुत ही अनुभवशील व्यक्ति थे।

उन्होंने यह सीट सौंपते हुए कुछ आवश्यक और उपयोगी टिप्प सुझे भी दिए थे। उन्होंने श्रीकृष्ण की तरह मुझे अर्जुन समझ कर गीता का सार तत्व समझाते हुए कहा था, 'अपने को पहचानो! कि मैं

कौन हूं? मेरा जन्म किस निमित्त हुआ है। अब तुम बाबू नहीं ...,बड़े बाबू हो गए हो,,,समझो और खुद को पहचानो एक बड़ा पद, बड़ी जिम्मेदारी और बड़ा रुतवा। हा - हा - हा - हा...!

मैं साष्टांग प्रणाम करता हूं अरोरा साहब को जिन्होंने मुझे इस गरिमामय पोस्ट (बड़े बाबू की) की गरिमा बनाए रखने के लिए आवश्यक और राम वाण अचूक नुक्से बताए। इस पोस्ट के लायक बनाया। उन्होंने कहा था, 'अब तुम केवल बाबू नहीं हो, बड़े बाबू हो और बड़े बाबू को प्रत्येक ऑफिस की रीढ़ माना जाता है। सारा आफिस बड़े बाबू के इशारे पर चलता है, यानि कि बड़े बाबू रूपी धुरी पर ही धूमता है।' यह तुम्हारा सौभाग्य है कि ईश्वर ने तुम्हें ये सुखद क्षण प्रदान किए हैं। तुम तो ईश्वर का धन्यवाद ज्ञापित करो और उनसे प्रार्थना करो कि, 'अगले जन्म मोहे बड़े बाबू ही कारियो'

उन्होंने मुझे अपने करीब बुलाकर स्पष्ट रूप से कहा था, 'कभी भी किसी काम को जल्दबाजी में मत करना। प्रत्येक फाइल को खूब देख भाल कर, समझ सोचकर, खूब पका कर उसका वजन देखकर ही आगे बढ़ाना। किसी भी केस में कोई जल्दबाजी नहीं करना। धीरे-धीरे इत्मीनान से सब काम करना। अगर इस पोस्ट का सही रूप से प्रसाद पाना चाहते हो, इसका पावन अमृत पान करना चाहते हो तो आहिस्ता आहिस्ता काम को अंजाम देना। अपनी गरिमा बचाकर रखना, आखिर कार अब तुम बड़े बाबू हो इसलिए,,, बाबू जी धीरे चलना.....।

मेरे दरवाजे पर दस्तक देना

सपना श्रीवास्तव, नोएडा

शून्य में..
स्वयं को..
रेखांकित करती हूँ..
ना तस्वीर बनती है..
ना तक़दीर..!

लुप्त होता हुआ..
पदचिन्ह भी..
भ्रमित करता है..
दो शब्द..
मैं हूँ या नहीं..!

इस अंतर्दृद में..
मैंने कई बार..
गिर कर देखा..
आवाज नहीं होती..!

जल स्तर पर..
चल कर देखा..
झूबती भी नहीं..!

उड़ने की कोशिश भी की..
पर असमथ..
अरमानों के बो..
पंख नहीं रहे..!

परीक्षा देती रहूं या..
परित्याग करू..
प्रश्न वंही रहा..
मैं हूँ या नहीं..!

मिल जाए अगर..
मेरा परिचय..
मेरे दरवाजे पर दस्तक देना. !!

गर्मियों में 'खीरा' है 'हीरा'

ये भूख को कंट्रोल कर के वजन कम करने में मदद करता है। इसके अलावा खीरे में अपनी एक मिठास होती है, इसके सेवन से मीठे की क्रेविंग को कंट्रोल किया जा सकता है। खराब लाइफस्टाइल की वजह से बहुत से लोग हाई ब्लड प्रेशर की समस्या से जूझ रहे हैं। ब्लड प्रेशर को कंट्रोल में रखने के लिए लोगों को हर दिन दवाई का सेवन करना पड़ता है। दवाईयों के साथ अगर खीरे का रोजाना सेवन किया जाए तो हाई ब्लड प्रेशर की समस्या से निजात मिल सकती है। ऐसा हम इसलिए कह रहे हैं क्योंकि खीरा पोटेशियम और मैग्नीशियम से भरपूर होता है। ब्लड प्रेशर को काबू में रखने के लिए शरीर में सोडियम और पोटेशियम के संतुलन की जरूरत होती है, जो खीरे के सेवन से मिल जाता है।



कहते हैं कि गर्मियों में सुबह का खीरा है हीरा, रात का खीरा पीड़ा। जी हाँ हम बैत कर रहे हैं। चिलचिलाती

गर्मियों में जब एक व्यक्ति को सबसे ज्यादा ध्यान अपने शरीर के तापमान को कम करने पर देना चाहिए। अत्यधिक तापमान शरीर बेत लिए बहुत नुकसानदायक हो सकता है। इसकी वजह से कई तरह की समस्याएं भी हो सकती हैं। ऐसे में शरीर के तापमान को कम करने के लिए लोगों को अपनी डाइट में ठंडी चीजों को शामिल करना चाहिए। शरीर को ठंडा रखने में खीरा सबसे ज्यादा फायदेमंद माना जाता है। अनेक प्रकार से इसका सेवन किया जा सकता है। यह गर्मियों में शरीर में पानी की कमी भी पूरी करता है। इसके अलावा भी खीरे के और भी कई फायदे हैं, जिनके बारे में हम आपको बताने जा रहे हैं। बता दें कि खीरा विटामिन के का एक प्राकृतिक स्रोत है। इसलिए बढ़ती उम्र में हड्डियों को मजबूत बनाए रखने के लिए इसका रोजाना सेवन करें। आजकल लगभग हर दूसरा व्यक्ति मोटापे का शिकार है और अपने बढ़े वजन को कम करने की

कोशिश कर रहा है। अगर आप भी अपना वजन कम करने की कोशिश कर रहे हैं तो अपनी डाइट में खीरे को शामिल करें। खीरे में कैलोरी की मात्रा कम होती है और इसका सेवन करने से पेट भरा रहता है। ये भूख को कंट्रोल कर के वजन कम करने में मदद करता है। इसके अलावा खीरे में अपनी एक मिठास होती है, इसके सेवन से मीठे की क्रेविंग को कंट्रोल किया जा सकता है। खराब लाइफस्टाइल की वजह से बहुत से लोग हाई ब्लड प्रेशर की समस्या से जूझ रहे हैं। ब्लड प्रेशर को कंट्रोल में रखने के लिए लोगों को हर दिन दवाई का सेवन करना पड़ता है। दवाईयों के साथ अगर खीरे का रोजाना सेवन किया जाए तो हाई ब्लड प्रेशर की समस्या से निजात मिल सकती है। ऐसा हम इसलिए कह रहे हैं क्योंकि खीरा पोटेशियम और मैग्नीशियम से भरपूर होता है। ब्लड प्रेशर को काबू में रखने के लिए शरीर में सोडियम और पोटेशियम के संतुलन की जरूरत होती है, जो खीरे के सेवन से मिल जाता है।

तो, खाने में सलाद या किसी भी रूप में खीरे का सेवन जरूर करें। ■ ■



नगर विकास के कार्यों के शिलान्यास एवं लोकापर्ण कायर्क्रम में जन भागीदारी



पं० दीनदयाल उपाध्याय नगर, आज नगर पालिका परिषद, पं० दीनदयाल उपाध्याय नगर में नगर पालिका इण्टर कॉलेज के बीर अब्दुल हमीद सभागार में ३०/०५/२०२४ के मुख्यमंत्री जी द्वारा नगर निकायों के नई परियोजनाओं का शिलान्यास, लोकापर्ण एवं पुस्तकों का विमोचन नगरीय निकाय निदेशालय स्थित सभागार लखनऊ से किया गया। कायर्क्रम का सीधा प्रसारण जूम ऐप के माध्यम से पूरे प्रदेश में किया गया। इस कायर्क्रम का प्रसारण नगर पालिका परिषद, द्वारा नगर पालिका इण्टर कॉलेज में कराया गया। कायर्क्रम की अध्यक्षता दीनदयाल उपाध्याय नगर के विधायक रमेश जायसवाल जी द्वारा किया गया। कायर्क्रम के दौरान प्रधानमंत्री आवास योजना एवं पी०एम०स्वनिधि योजना के लाभार्थियों सहित बड़ी संख्या में स्थानीय जन समुदाय ने अपनी उपस्थिति दर्ज की।

सभी ने मुख्यमंत्री जी एवं नगर विकास मंत्री के द्वारा अपने भाषण के दौरान बताये गये योजनाओं, उसके लाभों, सरकार के संदेशों एवं जनता की भूमिका से बहुत प्रोत्साहित दिखें। विधायक रमेश जायसवाल द्वारा प्रधानमंत्री आवास योजना के ०५ लाभार्थियों को उनके पूर्ण हो चुके आवासों की चाही प्रदान करते हुए अपनी शुभकामनायें प्रदान की।

कायर्क्रम के दौरान कृष्णचन्द्र (अधिशासी अधिकारी), संजय मौयार (पी० ओ० डूडा), मुरलीधर (अवर अधियन्ता), डी० एन० प्रसाद, रजत रस्तोगी (डिस्ट्रिक कोर्डिनेटर स्वच्छ भारत मिशन नगरीय) आदित्य सोनकर, विमल दत्ता एवं अरुण मिश्रा सहीत नगर पालिका के अन्य कमर्चारी एवं विभिन्न योजनाओं से लाभान्वित लाभार्थी उपस्थित रहें। ■ ■



आपसे वोट मांगने सभी प्रत्यार्थी आएंगे पर कृपया
आप अपना वोट उसी को दें जिसको आपको कुछ
करने की काविलियत और बातों ने सच्चाई दिखें।



नगर पालिका परिषद पं. दीन द्याल उपाध्याय नगर

वार्ड नं 18

कैलाशपुरी से

निर्दल
सम्भासद
प्रत्यार्थी

चुनाव चिन्ह मोटर साइकिल



के सामने मुहर लगाकर भारी से भारी मतों से विजयी बनाये

मतदान तिथि- 04 मई 2023, दिन-गुरुवार

इन्द्रपाल सिंह डिम्पल

एडवोकेट B.Com, L.L.B.

9839089097

संयोजक- परिवर्तन सेवा समिति
बिंबेदक- संग्रह सम्मानित वार्डवासी



सच की दस्तक के 6 वर्ष पूर्ण होने पर बधाई!

डॉक्टर अनिल कुमार यादव

गुरेरा, चन्दौली



सच की दस्तक के 6 वर्ष पूर्ण होने पर बधाई!



डॉ उमाशरण पांडेय

बाल रोग विशेषज्ञ

अपर मुख्यचिकित्सा अधिकारी

आजमगढ़,,(उत्तर प्रदेश)

CENTRAL PUBLIC SCHOOL

📍 उत्तरोत्तर बाजार (लेवा-शहाबगंज रोड) बबूरी, चकिया, चन्दौली 9838203338

(To be Affiliated with CBSE New Delhi up to Senior Secondary Level)
Stream: Science, Commerce & Humanities

P.G. to 12th CBSE

Admission Fee Free & 3 Months Fees will be Free for First 100 Admission

प्रवेश प्रारम्भ

E-mail id: cpsvinay@gmail.com | Website: www.centralpublicschools.com

अब्य शाखायें → मुगलसराय 9838203135 सुटहान-साहूपुरी 9838203137 परथुणामपुर 9838203138 धूस खाल 8840923827

Science Lab IT Lab Maths Lab Art & Craft Lab Library Indoor/Outdoor Playfield Audio-Visual Room

उत्कृष्ट शिक्षा की निर्मल धारा,
प्रयास आपका संकल्प हमारा

न्यू एडमिशन कराने वाले सभी बच्चों का 1 लाख रुपया का नि:शुल्क दुर्घटना बीमा होगा



डॉ आशुतोष कुमार
निदेशक
सिंह मो 98960373747

माँ खण्डवारी ग्रुप ऑफ इस्टीच्युशन चहरियाँ चन्दौली
माँ खण्डवारी देवी इण्टर कालेज
माँ खण्डवारी देवी पी.जी. कालेज चहरियाँ
श्री त्रिदण्डी देव हनुमत टेक्निकल कालेज बिसुपुर कैलावर
माँ खण्डवारी फार्मसी एवं नर्सिंग कालेज (आयुर्वेद) चहरियाँ चन्दौली
सेन्ट जोसेफ पब्लिक स्कूल भगवानपुर रानेपुर



डॉ राजेंद्र प्रताप सिंह
संस्थापक
मोबाइल नंबर 969563 4426



सच की दस्तक
के 6 वर्ष पूर्ण होने पर
बधाई!

डॉ रवि वार्ष्य



डॉ अमन वार्ष्य